विषय - सूचि



—: पुस्तक मिलने का पता :—

१. शाह हीराचन्दजी भीकमचन्दजी
सुमेर मार्केट के सामने,
जोधपुर (राज०)

२. तेजराजजी पारसमलजी धोका
सोजत नगर (राज०)

राज प्रिन्टिंग प्रेस, जोधपुर.

-: दो शब्द

मानव जीवन एक उदात दरिया की लहरो के समान है। प्रतिक्षण जीवन के मस्तिष्क में अनेकों विचार धाराएँ उत्पन्न और विलीन का चक्कर चलता ही रहता है। एक प्रबल अन्धड़ से उठी हुई धुली के कण कण को मेघ दबा सकता है और मुसलाधार मेघ की धाराओं की एक पवन क्षणमात्र में विलीन मिटा सकता) कर सकता है। लाखों वृक्षों से परिपूर्ण सघनघन वन को आग जला सकती है, और उडती हुई उरमियो से प्रचन्ड ज्वालाओं को पानी का प्रवाह शान्त कर सकता है।

किन्तु संघर्षमय मानव जीवन की विचार धाराओं का कोई ओर छोर नहीं ले पाता, हाँ, उनकी ओर छोर लेने का उपाय है तो एक ही, विश्व मात्र में उपलब्ध होता है। वह उपाय यह है "मानव की मर्यादा", यह मर्यादा ही मानवता को टिका सकती है और लहला सकती है। तथा जीवन को सौरभ मय बना सकती है। प्रस्तुत प्रथम इस पुस्तक में अमर सेण वयरी सेण नामक युगल भ्राताओ का कथानक संजीव चित्रण अपनी पवित्र जन्म जननी से प्रयाप्त मात्राओं से ऐसा चित्रित किया कि प्रत्येक मानव के हृदय पटल पर अपना भाई चारा का प्रभाव अकित कर गये। अर्थात् अमिट छाप जमा गये।

इसी प्रकार प्रथम श्रावक "श्री जिनदास" का वृतान्त इतिहास भी मर्यादा से परिपूर्ण इतना मन मोहक है कि लेखनी के द्वारा वर्णित नही कर सकते। मर्यादा ही मानव का प्रथम अग माना गया है।

ऐसा ही द्वितीय श्री "कहो सो करो" याने जो मुँह से वचन निकाल दिया उसको पूर्ण करना ही मानव का कर्त्तव्य है।

तृतीय चौपाई मे "स्त्री कपट की खान है" याने कपट औरतों के लिए एक साधारण बात है। चाहे अगले व्यक्ति का कितना ही नुकशान क्यों न हो।

चतुर्थ– "सत्य से सम्पत" याने मानव जीवन की सभ्यता ही सम्पति याने लक्ष्मी है। सत्यता ही से सेठ सुदर्शन को सुली, सिहासन बना।

पंचम्– "आज्ञाकारी पुत्र कंवर कुरनाल" याने पुत्र वही है जो माता-पिता की आज्ञा का निरन्तर पालन करे।

सष्ठम– "बन्दा बन्दी का वृतान्त" यही आख्यान करता है कि दुनिया मे किसी की भी लाठाई (दवावदारी) चलने वाली नही है।

सप्तम्– "राजा मूल देव का वृतान्त" शिक्षा युक्त है। जो बड़ो की शिक्षा निरन्तर पालन करता है उसका ही जीवन उज्जवल सोने की भाति तथा हीरे के समान चमक उठता है। मानव जीवन व मर्यादा मे इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि उसे पालने पर आनन्द की गंगा निरन्तर बहती रहती है। तथा मर्यादा भंग करने पर मानव कर्त्तव्य से गिर जाता है। भवभव मे उलझ जाता है। इसलिये ही मानव के लिये मर्यादा श्रेष्ठ है। इस पुस्तक द्वारा भाति भाति से विदित हो सकता है। इस पुस्तक के निर्माता मरुधर केशरी प्रवंतक पंडित रत्न मुनि श्री १००८ श्री श्री मिश्रीमलजी महाराज साहब हैं।

जिनकी लोह लेखनी द्वारा अनेकों अनेक ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं और प्रकाशित भी हो चुके हैं। जिसका अपार आनन्द वाचक वृन्द (पढने वाले) ले रहे हैं। इस पुस्तक को मैंने मेरे परम आराधनीय श्री सुकनमुनि महाराज साहब से प्राप्त कर मेरे स्वर्गीय पूज्य भाई साहब श्री कन्हैयालालजी की स्मृति में प्रकाशितकर पाठक वृन्द (पढ़ने वाले) के कर कमलो मे समर्पित कर आशा करता हूं कि वाचक वृन्द पढकर अपने जोवन को सफल बनायेंगे।

आपका

इन्द्रचन्द्र कोठारी

आइनावरम् (मद्रास)



श्री अमरसेरा वयरसिेरा चरित्र

※ दोहा ※

अमृतमयी जीवन अहा, सकल चराचर साथ ।
सो सानिध हो सर्वदा, श्रीमद् शान्तीनाथ ॥ १ ॥
गुण-सिन्धू बन्धू गहर, घननामी गण-ईश ।
लब्धि-निधी शरणो लहूं, वर दो विश्वावीस ॥ २ ॥
ज्यो जलधर वर्षत जगत, फले धरा फल फूल ।
श्री सद्गुरु के सानुग्रह, उक्ति लहे अनुकूल ॥ ३ ॥
भ्रातृ-प्रेम अरु कार्य शुभ, करते हैं बड वीर ।
विपदा मे मति विमल-युत, सदा रहे गभीर ॥ ४ ॥
अमर रु वयरीसेण ये, युगल-भ्रात बल-धाम ।
तिनको यह वृत्तान्त तुम, सुनहू भविक ललाम ॥ ५ ॥

– मूल-ढाल –

तर्ज– तुम माल खरीदो, तृसला-नन्दन की खुली दुकान जी० ॥
श्री अमर, वयरसी - च्हावा होग्या रे भ्रात्री प्रेम सूँ० ॥ टेर ॥
भाईचारो प्रेम विना रो, निभें न लाखो बात ।
मलयाचल विन चँदन बावनो, हर्गिज न्हावे हाथ जी ॥ श्री० ॥ १ ॥
राम और लिछमन री जोडी, अथवा हलधर कृष्ण ।
ज्यारी वातो सुणत पाण ही, मनडो होवे प्रसन्न जी ॥ श्री० ॥ २ ॥
इसी तरह हुए अमर कुँवर अरु, वयरि कुँवर गुणवन्त ।
भाईचारो राखवा सरे, विपदा सही अनत जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥
जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र का, मध्य - खण्ड सु - विशाल ।
आर्य - देश मे बहुल - देश वर, शौरीपुर सुरताल जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥
सूरसेण है सुन्दर राजा, प्रवल वीर गभीर ।
अरि-घायक,सहायक-परजा को, पर-वनिता को वीर जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

जयणावति नृप के पटराणी, जिन-वाणी की जाण ।
पतिव्रता, कोमल मृदु-वाणी, इन्द्राणी अनुमान जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥
मानेतण महिपाल री सरे, जनता मे शोभाग ।
सरदार, मुसद्दी, नौकर-चाकर, ज्यासूं वढतो राग जी ॥ श्री० ॥ ७ ॥
चतुर्विधी-नीती को ज्ञाता, धर्मसेण परधान ।
हय, गय, रथ, पैदल दल पूरण, भरा भण्डार महान जी ॥ श्री० ॥ ८ ॥
सप्तांगी लक्ष्मी को साहिब, शौरीपुर को नाथ ।
राज, प्रजा आनन्द मे निवसे, सारो ने दे साथ जी ॥ श्री० ॥ ९ ॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज– वटाऊ आयो लेवा ने० ॥

सिद्ध हुवे रे ज्यारा काज, देवे पुनवानी झोलो जोर रो ॥ टेर ॥
इक दिन सूता रंग-महल मे, राणी-सा सुखकार ।
हंस-शिशुनरी जोडी सागे, देखी है सुपन मजार ॥ दे० ॥ १ ॥
हर्षित हो राणी व्है वैठी, पहुंची प्रीतम पास ।
स्वप्न सुनायो, नृप आलोची, दाख्यो रे बुद्धी विलास ॥ दे० ॥ २ ॥
पुत्र युगल होगा पटराणी, सूरज, चन्द्र जिसान ।
एवमस्तु कहि के महाराणी, गया शीघ्र निज स्थान ॥ दे० ॥ ३ ॥
गर्भ यत्न के साथ राणी-सा, खूब करे धर्म ध्यान ।
राज्य-सपदा वढती जावे, देवे रे अढलक दान ॥ दे० ॥ ४ ॥
पूरण काले प्रसव्या पदमण, नीका नन्दन दोय ।
उत्सव अधिको होय रयो रे, घर-घर आनन्द जोय ॥ दे० ॥ ५ ॥

* दोहा *

पुत्र-जन्म पर भूपती, पायो मोद महान ।
द्वादश मे दिन थापिया, आछ्या जस अभिधान ॥ १ ॥

अमर सेण है पाटवी , वयरिसेण लघु नाम ।
लालन-पालन लाड मे , हद बिन होत हगाम ॥ २ ॥

– ढाल–मूलगी –

बीज-चद सम बढे कुंवरसा , सब जन के मन भाया ।
दिव्याकृती देवसी दीपे , लच्छन ललित लुभाया जो ॥ श्री० ॥ १० ॥
इकदिन चिडिया करे घोसला . राणी-सा रे महेल ।
दासी न्हाखे, पाछा लावे , इसोक वणियो खेल जी ॥ श्री० ॥ ११ ॥
चिडिया चिडे चेरी के ऊपर , चेरी चिडी पर खास ।
राणी-सा बोली मे समज्या , पूरे उसकी आस जी ॥ श्री० ॥ १२ ॥
रे दासी ! चिडिया को नाहक , क्यो देती है पीड़ा ।
एक घर मे कई रहना च्हाते , कौन रहत है वीडा जी ॥ श्री० ॥ १३ ॥
चिड़िया सुनकर खुशी मनाई , वसगइ मालो डाल ।
ईडा युगल दिया चिडिया ने , पोखे प्रेम से बाल जी ॥ श्री० ॥ १४ ॥
ईडो से बच्चे जव प्रकटे , वदन महा रमणीक ।
चांच, परो, पद सब ही सुन्दर, चिड़िया रखे नजदीक जी ॥श्री०॥१५॥
इकदिन चिड़िया पडी सोच मे , आंखो आंसू राले ।
चिडो कहे दुमणी क्यो प्यारी !, चिडिया उत्तर आले जी ॥श्री०॥१६॥
एक शपथ लेलो थे कन्ता ! , तो मुझ चिन्ता जावे ।
मो-मरियां दूजी चिड़िया सूं, मतना व्याह रचावे जी ॥ श्री० ॥१७॥
करी बात मजूर चिड़ा ने , तो भी चिन्ता लावे ।
नहि विश्वास शोक का तिल-भर, बच्चा मार-गिरावे जी ॥ श्री० ॥१८॥

– कवित्त –

मात-सी ममत कहीं और ना मिलेगी मित ! ,

[1]जात - हित मात निश - दिन दुख - पावे है ।
देवी देव धोकती फिरे है निज धर्म - छोर ,
मात भूखी रहै पर बाल ना रखावे है ।।
सूखे मे सुवाड़े बाल आप आले सोती रहे ,
के तो दुख देवे बाल प्यार दरशावे है ।
पाल - पौखनारी सुखकारी धन्य मात पद ,
'मिश्री' मात - भक्त वोही भारत दिपावे है ।। १ ।।

— ढाल– मूलगी —

उरण चिन्ता से इक दिन चिडिया , मर पर-भव को जावे ।
चिन्ता चिता से वढकर मानो , नाना भूत नचावे जी ।। श्री० ।।१६।।
चिडो दुक्ख आरणो घरणो सरे, भूल गयो है चुगरणो ।
छोटा वच्चा कैसे रुखालू , हो गयो माले रुकरणो जी ।। श्री० ।।२०।।

— कवित्त —

प्रतिज्ञायें पालवे मे पूरसल जोर परे ,
वाजे - वाजे प्रारण तक देते केई देखा है ।
राम वनवास रहै हरिचन्द नीर ढोयो ,
दुर्गा, शिवा, पत्ता ज्या के कष्ट का न लेखा है ।।
प्रतिज्ञा के पारवेकूँ धर्मदास प्रारण दीनो ,
तेजा जाट प्रतिज्ञा पै जिह्वा सांप पेखा है ।
सच्चा वीर-बच्चा कच्चा कभी ना पडेगा "मिश्री" ,
जच्चा सोना आग वीच कैसा रग केका है ।। १ ।।

— ढाल– मूलगी —

घरणा दिनो तक चिडियो राखी , कही प्रतिज्ञा पूर ।

---

(१) पुत्र

आखिर दूजी चिडिया लायो, वचन चूक वेसूरजी ॥श्री०॥२१॥
अपर नार आवत अवलोक्या, माले विचिया दोय ।
दुख देवे अणमाप एकदिन, मार गिराया सोयजी ॥श्री०॥२२॥
यह वृत्तान्त देख राणी री, कापण लागी काया ।
हाय, शोक का सगपण कैसा, अत्याचार कराया जी ॥श्री०॥२३॥
यही हाल मुझ बालूडो का, मो-मरिया हो-जासी ।
बाप विराणो होय पलक मे, घण[1] दूजी जब आसीजी ॥श्री०॥२४॥
दिन - दिन होवे दूवली सरे, अन्तर वेदन लागी ।
मोह-कर्म रो चक्कर मोटो, दशा विरहरी जागी जी ॥श्री०॥२५॥

* दोहा *

निज तिय[2] तन छीजत नयन, नरपति लीध निहार ।
पूछत प्रेमाकुल प्रिया !, दुक्खित क्यो दीदार ॥ १ ॥

ढाल २ जी ॥ तर्ज—पनजी मून्डे बोल० ॥

क्या दुख जी-को हो, महाराणी ! थांरो मुखड़ो फीको हो० ॥टेर॥
मो-सरसो भरतार भूमि घर, कोमल थांरे कीको[3] हो ।
भरिया धन भण्डार प्यार गहरो सजनी को हो ॥क्या०॥१॥
थोडा दिनो मे कुँवर साव रे, आजासी घर टीको हो ।
आण अखण्डित वहे लँघे कुण, कथन कही को हो ॥क्या०॥२॥
फेरूँ कइ रहगइ है मन मे, सोच करो थें वीको हो ।
चौडे ही कहदोनी यो काई, मन मे झीको हो ॥क्या०॥३॥
मुखडो थांरो चमकरह्यो थो, ज्यो मालिक रजनी को हो ।
राहु-ग्रसित-सो आज पृथु-ढिग[4],-ज्यो गजनी को हो ॥क्या०॥४॥

१-२. स्त्री । ३. पुत्र । ४. पृथ्वीराज चौहान के सन्मुख शाहगोरी ।

साच कहो सौगन्द है म्हारी, दुख मत दो देही को हो।
सदा सुहागन, बड भागन है, लेख लेही को हो ॥क्या०॥५॥

– ढाल - मूलगी –

प्यारी प्राणनाथ - पद शिर दे, गदगद भाखे वाणी।
मो-मरियो इण महलो दूजी, मत लाना महाराणी जी ॥श्री०॥२६॥
कारण, मेरे लाल सलोने, आ - कर सोत मरासी।
बेढंगी या बात श्रवण-कर, नृप ने आगई हासी जी ॥श्री०॥२७॥
खोटी भावना स्याने भावो, मरसी दुश्मन थाँरा।
आनन्द मगल सारा राज मे, थाँरे लारे सारा जी ॥श्री०॥२८॥
जो नहि व्है विश्वास आपने, लो अब सौगन्द लेलूं।
नाहक काला पडो मतीना, हाथ थाँरे गल मेलूं जी ॥श्री०॥२९॥
थाँरे सिवाय अपर राणी की, लाणे की तल्लाक।
म्हारो वस पूगेला जहा तक, मन राखूंला पाक जी ॥श्री०॥३०॥
सौगन्द लीनी भूपती सरे, विणने नही विश्वास।
देवे सान्त्वना तो भी राणी, भुगती सोचे खास जी ॥श्री०॥३१॥
दे - दे धीरज राजा कायो, – काठो हुवो हैरान।
रोग-ग्रसित चिन्ता से राणी, क्षीण हुई असमान जी ॥श्री०॥३२॥

ढाल २ जी ॥ तर्ज–हिवे राणी पद्मावती० ॥

छेवट छेह राणी दियो, गई पर - भव ओर।
गुण स्मरण कर भूपती, दुख आणे घनघोर ॥ १ ॥
मोह - दशा दुखकार है, मोह कर्मों रो मूल।
बडा - बडा ली विटम्बना, शोक - समुद्र मे भूल ॥मो०॥टेर॥
मात विना दोनो बालूडा, रोय रह्या असराल।

राजा छाती सूं भीड़िया, धैर्य देवण वाल ॥मो०॥२॥
लाड लडावे अति घणा, राखे सुखरे मांय ।
छिन भर दूरा नही करे, विद्या पढ़वा जाय ॥ मो० ॥ ३ ॥
व्याह तणी वातो करे, देवे नृप फटकार ।
देव कुंवर-सा लाल है, फिर क्यो लावूं नार ॥ मो० ॥ ४ ॥
सुख वेची दुख लेवणो, काई समझरी वात ।
यूं दिन वीते भूपना, सोचे सारो साथ ॥ मो० ॥ ५ ॥

✿ दोहा ✿

पूर्ण प्रतिज्ञा भूमिपति, राखी वहुला घोस ।
मंत्री कहे राणी विना, शून्य राज्य अरु कोष ॥ १ ॥
भद्दिलपुरनो राजदी, डोलो सामी लाय ।
अत्याग्रह अवनीश ने, दीनो व्याह रचाय ॥ २ ॥

– ढाल - मूलगी –

एकान्ते नृप मन्त्री लेकर, कानों डाली वात ।
कुवरो को छाने से राखो, राणी नजर नहि आत जी ॥श्री०॥३३॥
पुर बाहिर उद्यान एक जहां, सुन्दर महल उदार ।
युगल कुंवर विद्या अभ्यासे, आचारज पै सार जी ॥श्री॥३४॥
सचिव सभी सरदारो अथवा, दासी दास के तांई ।
कुंवर नाम नहि लेने के हित, पूरी करी मनाई जी ॥श्री०॥३५॥
सुन्दर करी व्यवस्था मन्त्री, नितप्रति जाय संभारे ।
हवा खाने के मिस से राजा, मिलवा वहा पधारे जी ॥श्री०॥३६॥
राणी जाणी नही बातड़ी, आनन्द में दिन जावे ।
हावभाव अति हेज जणा कर, नृपको वश करवावेजी ॥श्री०॥३७॥

राज-काज मन्त्री करे सरे, महिपति रहवे महलो।
जातो काल जाणे नही सरे, स्नेह सचित रगरेलोजी ॥श्री०॥३ ॥

ढाल ४ थी ॥ तर्ज–दादरा ॥

कर्मों रो आटो भायो केर केरो कांटो,
केर केरो कांटो ओ तो खेर केरो काटो,
नदीयों रा टोल सूं भी जाणो घणो लाठो ॥ टेर ॥
सुखी ने बणावे दुखी, दुखियो ने सुखियो।
मुखियो वणियोडो ओ तो, जैसे घोरी माटो ॥क०॥१॥
उलट पुलट कर डारे, छिन भर मे।
जहर ने अमृत करे, वांसडा ने साठो ॥क०॥२॥
शेर रो बणावे स्याल, स्याल ने बणावे शेर।
लहरो रो शुमार कठे, दरियारो कांठो ॥क०॥३॥
कायदो कर्मों रे नही, – दया एक दमड़ी।
हिया रो कठोर महा, मानन मे माठो ॥क०॥४॥
मर्दगी तो राखो "मुनि - मिश्रीमल" दाखे।
तप जप करी वेगा कर्मों ने काटो ॥क०॥५॥

– दोहा –

कीड़ी, करि, अरि, हरि सभी, वर्ते कर्माधीन।
जे जीत्या जयवन्त है हार्या होवे हीन ॥ १ ॥

ढाल ५ मी ॥ तर्ज– घटा चढ़ी घनघोर, चमक रहि बीजलियों० ॥

कर्म दियो झकझोर, छोल इसडो आई।
बनी अनोखी बात के, सुनजो सब भाई ॥ टेर ॥

कुँवर पढे आनन्द के माही, लोड़ी-सा जाणे है नाही।
एक दिन इसडो ढग, अचानक वणजाई ॥क०॥१॥
दास्यों ने वा मारे तारे, हन्टर के विन रहे न न्यारे,
कठै पुकारे जाय, सुणे कुण दिलचाई ॥ क० ॥ २ ॥
किसा राणी-सा शाता देता, आये दिन आनन्द में रेता,
वे गये स्वर्ग सिधार, रही मन के माही ॥ क० ॥ ३ ॥
अपो दुखी,क्या कुँवर सुखी है,जीवन काटे वनमे लुको है,
महाराजा वशमाय, एक सुनता - नाही ॥ क० ॥ ४ ॥
कुँवर शब्द कानो मे आयो, लोडी सुन छाने चित्त लायो,
राज्य - कुँवर है भूप, – मुझे नहि फरमाई ॥ क० ॥ ५ ॥

– ढाल–मूलगी –

पीतो मारलियो उण पुल मे, दिवस कितायक बीता।
एक दिन दास्यो ने वा पूछे, अपणे घर री गोता जो ॥श्रो०॥३९॥
कुण कुण है सरदार खास, नृप, - किता गावो रो नाथ।
किता महल अरु किता बाग है, हमे सुनादो वात जी ॥श्रो०॥४०॥
कितरा व्याह किया राजाजी, कुँवर हुवा के नाहो।
है, अथवा साराही मरग्या, और हुई क्या बाई जो ॥श्री०॥४१॥
थाँने राणी - सा किसीक सोरी, रखता था दर्शावो।
उणी तरहसूँ मैं पिण राखूँ, सही रीत समझावो जी ॥श्री०॥४२॥
इता दिनो मैं नही ओलखी, थाँरी आदत केरी।
जिणसूँ कष्ट दियो मैं भोली, अकल हाल है ऐरीजी ॥श्री०॥४३॥

ढाल ६ ट्टी ॥ तर्ज—थे' तो मोटा हो भैरूँजी बाबा देव० ॥

थे तो घणी रे पुराणी हुँशियार, डावरियो घर री।
थाँ पै म्होने है भरोसो अनपार, साथी ऊमर री ॥ टेर ॥

म्होने साची साची कहदो बात, कालजिये राखूँ।
थाँरे गलारी सौगन्द तिलमात, चौड़े नही भाखूँ ॥ १ ॥
आतो न्यारी न्यारी रंगत लाय, बातो मे विलमावे दे-पटी रे।
दास्यो सोचे मनरे माय, लोड़ो-सा सरल नही कपटी रे ॥२॥
मिलवा लाग्यो दास्यो ने माल, थाल म्हारे चोखो जमगी रे।
आ तो बड़ी धूर्त बदमास, म्हारा मनड़ा मे पूरो पूरी वसगी रे ॥३॥
सारी बातो बताई ततकाल, चेता सारा म्हारा खिसग्या रे।
या तो स्वारथ बुरी बलाय, राणी घणा राजी मन व्हैग्या रे ॥४॥
आई राजकुँवर री बात, वे तो छानेसेक कान मे डारी रे।
मत कहीजो किणीने आप, थाँरा कुँवर विराजे बाग-वाड़ी रे ॥५॥
पतो पायो राणीजी खास, सुण मन मे जरी ज्यूँ होरी रे।
म्हारो नृप ने नही विसवास, जिणसूँ चाल चली या कोरी रे ॥६॥

— ढाल मूलगी —

इक दिन चर्चा करी भूप से, कितरा राज कुमार।
आज तलक नहिं नजर निहारचा, कित राख्या सरकारजो ॥श्री०॥४४॥
चमक्यो भूप कही कुण इणने, अबतो कहणो पडसी।
छाने रा चवड़े होणे सूँ, आ म्हारा सूँ लडसी जी ॥श्री०॥४५॥
भूप कहे वे पढे बाग मे, कलाचार्य के पास।
किणपै नहिं आणे-जाणे दे, अधिक करे अभ्यास जी ॥श्री०॥४६॥
थाँ नहिं पूछ्यो, मैं नहिं दाख्यो, कारण और न कोय।
थोड़ा दिनो मे आय मिलेगा, जद थें लीजो जोय जी ॥श्री०॥४७॥

ढाल ७ मी ॥ तर्ज– मोहन गारो रे० ॥

कपट कियो कारो हो, प्रीतमजी ! मैं तो जाण्यो सारो हो० ॥टेर॥

पुरुषो रो तो मूल-धर्म है, धोखो देवण वारो हो।
ऊपर सूं मीठा वचनां रो, जामो धारो हो ॥ कपट० ॥१॥
औरो रो पतिया रो पूछी, खेंचे चित्त उणोरो हो।
है पुरुषो रो प्रेम जगत मे, सार विनारो हो ॥ क० ॥२॥
लेवे पिण, देवे नहिं किण ने, भूली भेद हियारो हो।
नारी जात सरल समजेना, कपट कियारो हो ॥ क० ॥३॥
मैं काइ डाकण, भूतण थी सो, खा-जाती सुत थांरो हो।
जिण सूं राख्या छिपाय, वाग मे, करे विहारो हो ॥ क० ॥४॥
म्हारे तो है घणा लाडला, जाणूं हार हियारो हो।
पिण मरजी है, राज आपरी, 'कुण' केवण वारो हो ॥ क० ॥५॥
लोगो मे भूंडी मैं लागू, सोत मात दुख खारो हो।
मैं तड़फू दिन रात मिलन, नही म्हारो सारो हो ॥ क० ॥६॥
यो कहि आंसूंड़ा ढलकाया, तिरिया-चरित करारो हो।
बडो-वडो रा हृदय हिला दे, 'कुण' भूप विचारो हो ॥ क० ॥७॥

— दोहा —

पृथ्वीपति कहे हे प्रिया ! मत कर इसो विचार।
कुण जाणे कुंवर कठे, पूछो सब परिवार ॥ १ ॥

— कवित्त —

पढवा को समय पिछान दूर राख्या व्हाने-
लाड मे विगर जात याते कियो पातगे।
अध्यापक आछो अरु साधन सयल ठीक-
एकान्त-निवास कियो ज्ञान आवे सातरो ॥
उद्योगी कुंवर नही समय गमावे व्यर्थ-

धुन एक पढवारी रहे दिन रात रो।
और कोई बात नाही, सुणले लाखीणी नार-
साच कहूं रतो एक थांसूं नही आतरो ॥१॥

ढाल ८ मी ॥ तर्ज— एक दिवश लंकापति० ॥

मोखो आयो मिल जासी, मतना राखो ऊदासी,
हे मृदुभाषी ! तूँ मुझ प्यारी प्राण सूँ ए।
दीवाली दिन आवियो, महाराजा फुरमावियरे,
सुणावियो, मन्त्री ने सन्देशडो ए ॥१॥
चवदा वर्ष व्यतीत ए, कुँवर दौ शुभरीत ए,
पुनीत ए, विद्या तन बल बेवडो।
लावो सभा मजार ए, देखे सहु परिवार ए,
पटनार ए, वा पिण मिलणो च्हा रही ए ॥ २ ॥
सचिव कहे शिर न्हाय ए, कुछ ठहरो महाराय ए,
इणमाय ए, कपट झपट चाली सहो ए,
अलगा मे आराम ए, सुधरे सारो काम ए,
नाम ए, हाल आप लेवो मती ए ॥
प्रथमा राणी बोल ए, हियड़े लीजो तोल ए,
अमोल ए, सत्य होसी भाख्यो - सती ए ॥ ३ ॥
ला - कर मृदु मुसकान ए, फरमावे राजान ए,
मत तान ए, अब मिलणो मन भावियो ए,
सचिव जाय उद्यान ए, स्वागत करी महान ए,
पुरम्यान ए, युगल कुँवर ने लावियो ए ॥ ४ ॥
मेलो मच्यो अपार ए, निरखे राजकुमार ए,
नर नार ए, जोड सरावे है घणी ए।

राणी झरोखे झाकीयो, पामो वेर रो न्हाखोयो,
नहिं राखियो, मन चिन्ते लेऊँ हणो ए ॥ ५ ॥

– ढाल-मूलगी –

महावत ने वोलायो महलां, कियो इशो सकेत।
मार डालो कुवरो भणी सरे, प्रच्छन्न वणावो वेत जी ॥ श्री० ॥४८॥
महादुर्वुद्धी महावत मानी, फीलखाने झट जाय।
कर दारू में मस्त हस्ति को, कुँवर मारन के तांय जी ॥श्री०॥४६॥
हुक्म दियो अरु मद फिर पायो, भिमरयो है गजराज।
भाज आलान स्थभ को निकल्यो, जुडियो जहा समाज जी ॥श्री०॥५०॥

ढाल ६ मी ॥ तर्ज– पपैया काय मचावत शोर ० ॥

कुँवरो पै कोप्यो गज अनपार, भाज के स्थभ दियो भू-डार ॥टेर॥
हो मद-मस्त गजानन घूँमे, जो देखे जाही के झूमे, करदे फाड़ विफाड ॥कुँ०॥१॥
कोलाहल मचियो है भारी, भाग छूटगा सव नरनारी, छिपग्या है सरदार ॥कुँ०॥२॥
नामी गज नायक गज माही, युद्ध सहायक वल असहाई, रिपु धूझे सुनतार ॥कुँ॥३॥
दोनों राजकुँवर के ऊपर हाथी लपक्यो है दृग भर कर, मचगयो हाहाकार ॥कुँ॥४॥
फोज, रिशाला, पल्टन वारे, कुण जावे जावत वो मारे, कौन करें उपचार ॥कुँ॥५॥

– कवित्त –

काल औ वैताल झाल आग-सी विशाल भाल-
आवे कौन चाल साल छाती पै वजर सो।
आँखें लाल-लाल ढाल औपत कराल शीश-
सूँड औ त्रिशूल दन्त वदन कजरसो।
दौड़तो वजार मध्य उचक्यो कुँवर-प्राण-
लेन वो आतुर अती हरीन्द हजरसो।

भूपत सचिव सरदार पारावार लोग–
प्रभु ने अरज करे कुँवर सजरसो ॥ १ ॥

– ढाल - मूलगी –

राज्य प्रजा सब लोग लुगायो, खड़ा डागले देखे।
हे भगवान ! बचे जो कुँवर, जन्म हमारो लेखे जी ॥श्री०॥५१॥
मोहन गारी सूरत प्यारी, अररर यह मरजासी।
हाय! हरामी दुष्ट हस्तियो, पातक किसो कमासी जी ॥श्री०॥५२॥
दुनिओ डरे, कुँवर नहिं कंपे, सामी लियो वकार।
क्यो पाडिया मौत आई तुझ, लूण-हरामी जार जी ॥श्री०॥५३॥

– कवित्त –

अमर कुँवर होय सधर सभायो करी–
भमायो भवानी जिम रीसलाय डावरो।
फेंकियो गगन फेरु घूमायो गिरिन्द भाँति–
शिला पै पछार डारचो जैसे धोबी कापरो ॥
पौरुष अमाप आज, देखके जहान बोली–
धन्य वीर बाँके लाल भाग्य बड़ो रावरो।
दौर के पधारे भूप कुँवर-वधाय लियो–
दूध तूँ दिपाय दियो गोद बीच आवरो ॥१॥

* दोहा *

देश, जाती पुनि धर्म अरु, शरणागत को साज।
देन भलो घर जनमियो, हे सूरा - शिरताज! ॥ १ ॥

— ढाल-मूलगी —

शको जमियो जोर रो सरे, कुँवरों रो सब शहर।
बालपणे इसडो है पौरुष, पूर्व पुण्यो की लहर जी ॥श्री०॥५६॥
मन्त्री मन मे जाणियो मरे, हाथी-तणो उदन्त।
मावत पुनि राणी कियो सरे, मारन हित एकान्त जी ॥श्री०॥५७॥
तो भी नृप से कहा न किंचित्, समय जाण प्रतिकून।
कुँवरो रा दिन पाधरा सरे, शूल हो गया फूल जी ॥श्री०॥५८॥
सबसे मिलिया राजकुँवर दुहुं, सरस सभ्यता साथ।
जबर काम कर जस लियो सरे, गजसूं घालो बाथ जी ॥श्री०॥५९॥
मातासूं मुजरो करवाने, जावे महल मँजार।
वाटों ऊभा जो रया सरे, भर मोतियन को थाल जी ॥श्री०॥६०॥

ढाल १० मीं ॥ तर्ज– सुणजो जी शील सुहावणो० ॥

थे भल आया लाल जी!, मैं जोती हो वाटो हरवार।
आज दिहाडो धन्य है, कांई पायो हो थांरो दीदार ॥१॥
देखो कपट या केलवे, कांइ कपटण हो कुँवरो रे साथ।
पर भव सूं डर पै नही, वा करणी हो व्हावे है घात ॥टेर॥
हाथी थाँ पर भीमरयो, देखो म्हारो हो दिल हुवो बेयाल।
पिण हो पुनरा पौरषा, हाथी मारी हो कियो काम कमाल ॥दे०॥१॥
कुँवर कहे कर-जोड ने, म्हांने मिलिया हो माजीसा आप।
यो आंणद अणमापरो, म्हारा टलिया हो सारा सन्ताप ॥दे०॥२॥
मिलजुल सभा पधारिया, कांई जावणरी मागी है सीख।
राजा कहे पधारिये, अब आवणरो हो समय नजदीक ॥दे०॥३॥
कला सकल थाँ सीखली, काइ राज-काज हो झेलो हाथ।

म्हाने नचीता कीजिये, सब च्हावे हो आपणडो साथ ॥ दे० ॥ ४ ॥
सेवा मे हाजर खड़ा, जो कुछ हो फरमावो राज।
हाल कला अभ्यास-सो, काइ चिन्ता हो राजो - शिरताज ॥ दे० ॥ ५ ॥
यो कही गया उद्यान में, सब कलाचार्य ने दाखी बात।
सुनकर द्विज मन सोचियो, आ राणी हो माड्यो उतपात ॥ दे० ॥ ६ ॥
पढे लिखे शिक्षा ग्रहे, काइ मुखपर हो नहि जरा मिजाज।
विनय भाव राखे घणो, काइ आखो मे है लाज लिहाज ॥ दे० ॥ ७ ॥

— छप्पय - छन्द —

कला - तणा वे कोष, दोष दुर्व्यसन विसारे।
वलशाली वुधवन्त, काम देख्यो रो धारे॥
नियमलिये जो धार, प्रेम से निशि दिन पारे।
गुण - ग्राही गुणवन्त, देखके औगुण टारे॥
चढति आयु, चातुर्यता, चञ्चलता चित ना चरे।
युगल - जोडि जो देखले, नयनों में इमरत भरे॥ १ ॥

— सोरठा —

निज माता रो नेह, पुण्य - विनो पावे नही।
तृण सूखा सो तेह, सोत - मात रो समझलो ॥ १ ॥

ढाल ११ मी ॥ तर्ज- आखिर नार पराई है० ॥

दुर्जन रे नही दया रती, सदा रहै तस दुष्टमती ॥ टेर ॥
श्वान पूँछ सीधी किम रेवे, षटमासोलो भूमी सेवे,
उसकी टेढी जान गती ॥ दुर्जन० ॥ १ ॥
बोले मीठा वोल हमेशो, पिण छोड़े नहि अन्तर रेशो,

नीच गति ज्यो नीर छती ॥ दुर्जन० ॥२॥
नहि माने उपकार कियोडो, शीघ्र विगाडे काम वियोडो,
वो नहि माने, जती सती ॥ दुर्जन ॥३॥
जालसाजी घडता रहै नितका,पता पडे नहि उणरे चितका,
नीति-शास्त्र मे वात कथी ॥ दुर्जन० ॥ ४ ॥
परभव विगड़े तो भल विगड़ो , लाखो ही सुधरे नहिं नुगरो,
संगत खोटी जाणो अती ॥ दुर्जन० ॥ ५ ॥

– ढाल–मूलगी –

शोको दुख दीधो सीता ने , रामायण ने देखो ।
घरका परका हुवो कोई भी , दुष्टो रे नही लेखो जी ॥ श्री० ॥ ६१ ॥
राणी विष-मिश्रित दो मोदक, सुन्दर कीना त्यार ।
अति-सुगधित घृत मेवा-युत , मृगमद केशर - डार जी ॥ श्री० ॥ ६२ ॥
रत्न कचोले ढाँकी दीधा , दासी केरे हाथ ।
जाय वाग मे देकर आओ , कुँवर सहाव के आथ जी ॥ श्री० ॥ ६३ ॥
दासी जाय दिया कुँवरो ने , राणीसा भिजवाया ।
दोपारी मे आप अरोगो , प्रेम सहित फुरमाया जी ॥ श्री० ॥ ६४ ॥
दासी पाछी गई रावले , कुँवर भोजन री टेम ।
दिखा गुरु को खावण च्हाया , आखे पाठक एम जो ॥ श्री० ॥ ६५ ॥

ढाल १२ मी ॥ तर्ज– फागण होरी० ॥

मति खावो रे लाडूडा वालूडा० ॥ टेर ॥
यह लाडूडा ठीक नही है , मने दोसे है जादूरा ॥ म० ॥ १ ॥
रस भरिया नहिं विष भरिया है, जैसे कटोरा कादू रा ॥ म० ॥२॥
क्रिया-हीन जे शिथिलाचारी, भेषधारी ज्यो साधूडा ॥ म० ॥ ३ ॥

या खायो सूं जाणलीजिये, परभव जाणो लालूरा ! ॥ म० ॥ ४ ॥
ऊपर सुन्दर, खोटा अन्दर, वचन मानलो माधूरा ॥ म० ॥ ५ ॥

– सोरठा –

करी परीक्षा ताम, साच कथन निवड़यो जवै ।
राम - राम यह काम, माता होकर क्यो करै ॥ १ ॥
म्हा तो एक छदाम, व्हाँ सूं विरवा हाँ नही ।
नाहक आठो याम, घाट घडे विन - काम रा ॥ २ ॥

ढाल १३ मी ॥ तज– फागण होरी० ॥

दुश्मन रो है काई रे भरोसो० ॥ टेर ॥
दे विसवास गलो ले वाढी, जैसे कटोरो आक करो सो ॥ दु० ॥१॥
जल नही झिलसी सोचो जरासो, साफ फूटोडोरे देखो घडोसो ॥ दु० ॥२॥
सावचेत अब सदा रेवणो, पिण न दिखाणो है अभरोसो ॥ दु० ॥३॥
मरणारो हाको नही सुणियो, राणी जीव चढियो चकरोसो ॥ दु० ॥४॥
विष सहलाणी लाय दिखासी, सारो माजनो होसी भदरोसो ॥ दु० ॥५॥
इसीलिये कोई युक्ति रचादूं, जाल विछावूं तेल वडोसो ॥ दु ॥६॥
शोकडली गे चिन्ह मिटादूं, सोगे जीव मुझ हुवे जरोसो ॥ दु० ॥७॥

– सोरठा –

नागण, वाघण, आग, अणछेडयो अनरथ करे ।
छेडयो ले कुण थाग , सूर्पनखा किसड़ी करी ॥ १ ॥

ढाल १४ मी ॥ तर्ज–भँवर थांरी नागोरन नारी हो, भँवर० ॥

चिरताली चरित रच्यो छाने रे, चिरताली चरित रच्यो छाने ।
उणने छोड और कोई भी , सुपने नही जाने ॥ टेर ॥

पेट पीड ऐसी कगी सरे, तडफ रही अकुलाय, राणी वा तडफ० ॥
हक्की वक्की दास्यो हो कहे, काइ हुवो है माय ॥ चि० ॥ १ ॥
हाय हाय करती कहे सरे, म्हागी आयगी मोत, दामियों म्हागी० ॥
राजाजी ने जरद वुलावो, वुझे प्राण की ज्योत ॥ चि० ॥ २ ॥
दास्यो दौड गई राजा पै, रोवतडी कहे वेन, भूप से रोवतडी० ॥
वेगा राज पधारो महलों, राणीसा वेचैन ॥ चि० ॥ ३ ॥
पृथ्वी पति महलो मे पहुंच्यो, देखी दशा खराव, राणीरी देखी० ॥
डाक्टर, वैद्य, हकीम वुलाया, आया सभी सताव ॥ चि० ॥ ४ ॥
मूर्च्छित पडी अग सव ठडो, चैतनता नहि तार, देखियो चेतनता०॥
राणीसा रा महल मे सरे, मचियो हाहाकार ॥ चि० ॥ ५ ॥
नानाविध उपचार करत कुछ,जराक खोली आंख,राणी वा जराक०॥
राजा कहे राणीसा कैसे, वोलो हमसे झांक, ॥ चि० ॥ ६ ॥
हिलतो डुलतो घडो एक सूं, रोई वागोपाड, राणी वा रोई० ॥
राजाजी री गोद मे सरे, पडे अश्रु की धार ॥ चि० ॥ ७ ॥

— दोहा —

विस्मित हो वसुधाधिपति, सोचे क्या है द्वन्ध ।
पूछयो विन पत्तो कई, पडे न वात सम्वन्ध ॥ १ ॥

ढाल १५ मी ॥ तर्ज— अलगी रहनी० ॥

काइक वोलो, वोलो वोलोनी वोलो मुखडो खोलो ॥ टेर ॥
दासी दास नौकर सव रोवे, जीव म्हारो उचकायो ।
अकस्मात थारे काई होग्यो, वदन - कमल कुम्हलायो ॥ मु० ॥१॥
गद गद बोली - खावत डुसका, शीश हमारो कापो ।
ओ अनरथ देख्यो नहि जावे, शक्त हुवे सन्तापो ॥ मु० ॥२॥

इसी किसी है आपद थाने, म्होने जरद सुनाओ।
सारो ने काढ्या है बाहिर, अब मत शका खाओ ।। मु० ।।३।।
काई कहूँ अन्दाता ! कहतों, कालो मूँडो हुय जासी ।
विन केया पिण रह्यो न जावे, है दो - तर्फी फासी ।। मु० ।।४।।
पुगता खबर मिली है म्होने, सात दिनों के माही ।
आप मार, सुत राज लेवेला, छाने बात सुणाई ।। मु० ।।५।।
या सुणता धसको मन पडियो, अब म्हारो कई होसी ।
जद मैं जरदी सूँ बुलवायो, आयो विदेशी जोशी ।। मु० ।।६।।
वो पिण करड़ा दिन तुम भाख्या, जिणसूँ मैं घबराई।
'मिश्री मुनि' कहे राणी कथन सुन, भूप गयो चकराई ।। मु० ।।७।।

— ढाल–मूलगी —

मतकर चिन्ता, स्वस्थ्य रहो प्रिय ! , प्रकट करूँ प्रतिकार।
वात कठातक है या साची , जाची करूँ जहार जी ।। श्री० ।। ६६ ।।
देई दिलासा भूप सचिव को , लीनो पास वुलाय ।
बात अनोखी सुणतो मत्री , आलोचे मन माय जी ।। श्री० ।। ६७ ।।

ढाल १६ मीं ।। तर्ज– काच की किंवाड़ी मांहे लोह खटको० ।।

राजाजी ! विचारो यह तो जाल जबरो।
म्हारी जो मानो तो अव लेवो सबरो ।। टेर ।।
म्हारी शल्ला नही मानी , मनचाही दिल ठानी ।
बनगी दुखद कहानी, सुन ऐसी खबरो ।। राजा० ।।१।।
बात जचै नही ऐसी , आप फरमाई जैसी ।
कहणेवाला कही कैसी, नाग चितकबरो ।। राजा०।।२।।
दोनो कुँवर दयाल , एड़ो लावे नही ख्याल ।
गूँथ्यो बुरो गोलमाल , थवा पको टपरो ।।राजा०।।३।।

मेरे साथ आप चालो, नीती केरी वहाँ भालो।
खाली घास रो है मालो, रहियो नही ढवरो ॥ राजा० ॥४॥
दोनों बाग माही आवे, वात विप्र को सुनावे।
विप्र प्रत्युत्तर दिरावे, विष दियो जवरो ॥ राजा० ॥५॥

– ढाल-मूलगी –

दासी मोदक लाय दिया दो, मुझको शका आई।
कीनी परीक्षा साच निवड़गी, पिण किसको न सुणाई जी ॥श्री०॥६८॥
नृप कहे क्यो ना आय सुणाई, रखी बात क्यो छानी।
निर्णय करके देतो ठपको, भूल मानती राणी जी ॥ श्री० ॥ ६९ ॥
वढती राड़ देख नहिं भाखी, विप्र वदे महाराज ! ।
यह भी क्या पहले भी छोडा, मारण को गजराज जी ॥ श्री० ॥ ७० ॥
इन दोनो मे कौन सत्य है, रहस्य भरी या बात।
कुँवर वुलाय महीपति भाखे, कैसे वण्या कुपात जी ॥ श्री० ॥ ७१ ॥
मुजको मारण थां दिल धारी, भूल सभी उपकार।
क्या दूँ दण्ड बतादो मुझको, करन लगे अपकार जी ॥ श्री० ॥ ७२ ॥

❋ दोहा ❋

जिती वात स्वामिन् ! कथी, रती सत्य ना तात ! ।
तो भी जचगी आपरे, दण्ड दीजिये नाथ ! ॥ १ ॥
बहस करो कई बापसूँ, फरमावो क्या सार।
भली नही, भूँडी लगे, हँसे सयल संसार ॥ २ ॥

ढाल १७ मी ॥ तर्ज–या हसीना बस मदीना, करबला में तूं न जा० ॥

लाखो नाहक मरगये, जिनका न नाम निशान है।

जहां पक्ष का दौरा चले, उत सत्य को नहिं स्थान है ॥ टेर ॥
यदि प्रेम होता आपको, उस रोज का जो बयान है।
क्या लिया निर्णय बतादो, किया गज तूफान है ॥ ला० ॥ १ ॥
बस, छोडदो बाते सभी, अरमान अपना काढलो।
मंजूर है हमको पिता !, नहिं हटै जो इन्शान हैं ॥ ला० ॥ २ ॥
उफ-तक कहेगे हम नही, तैयार हैं शिर लीजिये।
खुश रहे अम्मा सदा, बस एक येहि बयान है ॥ ला० ॥ ३ ॥
सुनना न च्हाता लब्ज आगे, कौन अव फरियाद है।
फरजंद पै फिर महर वां, क्या कृपा और महान है ॥ ला० ॥ ४ ॥
यदि दूसरा होता यहां, तव बात बनती और ही।
वालिद हमारे आप हैं, हम मानते भगवान हैं ॥ ला० ॥ ५ ॥

– कवित्त –

वागवान वाग का विनाश काज अग्र बढे,
वाड खाय काकडी को कौनसा इलाज है।
जरे चाँद सेती आगी सुधा यदि प्राण लेत,
तिय लाज हरे पति काय को मिजाज है ॥
सेवक की शान हरे अगर मालिक होय,
इष्ट नष्ट करे भक्त रखे कैसे लाज है।
वाप होय वालकोंपै झूठा इलजाम धरे,
मिश्री कहां अर्ज करे डुबा देवे ज्हाज है ॥१॥

– सोरठा –

बोल सक्यो ना वाप, घेर्यो घोडो गढ भणी।
कहे सचिव से साफ, माफो अब मँगवाय दे ॥१॥

गढ मे पहुँच्यो भूप, कुँवरो से मंत्री कहे।
चंपत होगइ चूँप, साम्हा बोल्या चाप रे ॥२॥

ढाल १८ मी ॥ तर्ज– शिक्षा दे रही जी, हमको रामायण अति० ॥

माफी मागलो रे कुँवरो, कांइ बिगरे इणमांय ।।टेर॥
लीडीजी राजा को ग्रांटी, ऊँधी दी पकराय।
जिणसूँ पडी भर्मना काटी, भूप हृदय के मांय ।।मा०॥१॥
राजा सरल, कपट मे किंचित, समझे नहि कहुँ साच।
माफी मांग्या रीस ऊतरसी, पाच बने नहि काच ।।मा०॥२॥
कैसे मांगला जी क माफी, बिगर गुन्हे म्हां श्राज ।।टेर॥
मरण रो डर नहि है म्हाने, डर करतो अन्याय।
अन्यायी ने आतम - समर्पो, लाजे म्हारी माय ॥ कैसे० ॥ ३ ॥
होणी सो तो हुयां रेवसी, कारी लगे न कोय।
है धिक्कार जीवणो जग मे, अपणी इज्जत खोय ॥ कैसे० ॥ ४ ॥
और कहो सो हम कर लेवें, भले कठिन हो काम।
कायरता री वातो म्हाने, नही करावे राम ॥ कैसे० ॥ ५ ॥

– ढाल - मूलगी –

गयो सचिव राजा पै सीधो, कही हकीकत सारी।
वे नहि आन गमावन - वारा, मैं समजागयो हारी जो ॥ श्रो० ॥ ७३ ॥
वात आपरी जरा न सच्ची, झूठ पगो किम चाले।
हाथी को कौतुक, विष देणो, कहो न किणने शाले जी ॥ श्रो० ॥ ७४ ॥
वात सांवटणी पडसी मत्री !, ऐसी अकल उपजावो।
राणो, कुँवर रहे दुहुँ राजी, शुद्ध राह समजावो जी ॥ श्री० ॥ ७५ ॥

ढाल १९ मी ॥ तर्ज– सतीय शिरोमणि अंजना० ॥

अमर कुँवर कहे वयरसी, अब इत रहवण मे नही सार के।

सज्जन एक दीसे नही, नित नया न्हांखसी सोत - मा जाल के ।। १ ।।
हिम्मत नही हारणी सोचलो, हिम्मत हारियो पत बिकजाय के।
पत गयो प्राण किण कामरा, जल बिन माछरी जीव विसराय के ।।टेर ।।
वयरसी उत्तरयो वदे, दादा भाई ! अब क्यो करो जेज के।
कुण इत आय बुचकारसी, वापरो देखियो हदबिन हेज के ।।हि० ।।२।।
जिणदिन मातजी मरगया, उणदिन सूं ही सेवो वनवास के ।
पुण्य पूरा नही बांधिया, फिर इत रेवणो सहवणो त्रास के ।।हि०।।३।।
पाय पड़िया गुरुदेव रे, गदगद हृदय जल आंख में लाय के ।
दीठी अदीठी में जावसो, द्योजी आशीस शिर हाथ धराय के ।।हि०।।४।।
शुभ दिन आवियों आवसो, आपरी सेवना करोला दिल खोल के ।
भेट मे हार दो रत्नना, चरण मे धरदिया मूल्य अनमोल के ।।हि०।।५।।
ब्राह्मण कहे वच्छ ! सांभलो, फिकर कीजो मती जबर तकदीर के।
सपदा पग-पग पामसो, विसरजो हम भणी मत दुहुं वीर के ।।हि०।।६।।
पश्चिम पंथ - लो पाधरो, वेला अभीच अमृत-सिधि-योग के ।
राज्य भण्डार सुख साहिबी, भल तुम भाइडा ! भोग-सरे भोग के ।हि०।।७।।
ब्राह्मण सीखले घर गयो, प्रसन बणाय लेगो तस लार के ।
कुंवर ममता तज गेहनी, चपल पणे चालिया ताजे तोखार के ।।हि०।।८।।
कागद एक नृप देण को, देकर भृत्य को सचिव के द्वार के।
पारितोषिक उनको दियो, अन्य नौकरन को भल उपहार के ।।हि०।।९।।

– दोहा –

दल मे यो दर्शावियो, प्रथम चरण परणाम ।
धन्यवाद, निज सुतन को, व्यर्थ किया बदनाम ।। १ ।।
मात मरी, हम वन चले, तुम जरिवो अब नांय ।
व्हाली के वश होय के, मतना राज गमाय ।। २ ।।

पुत्र हुये अरु ना हुये, होवण - वारी होय।
वर्ष मास में आप सब, परतख लीजो जोय ॥ ३ ॥

ढाल २० मी ॥ तर्ज- पंथीड़ा! बात कहो धुर छेह थीर० ॥

दोनो रे दोनो वन्धव चालिया रे, पश्चिम दिशा प्रधान रे।
हुवा रे शकुन महा सश्रीक ही रे, पन्नग दाहिण जाण रे ॥ १ ॥
वीरा रे वीरा गया विदेश मे रे ॥ टेर ॥
फुण पर रे मेढक आछो ओपतो रे, दच्छिन रूपारेल रे।
वामो रे खर निज शब्द सुणावियो रे समुख कुंभ सु-चेल रे ॥ वी० ॥२॥
योजन रे योजन एक रे आंतरे रे, नदी नर्मदा तीर रे।
ब्राह्मण रे ब्राह्मण जोवे वाटडी रे, भोजन सह गो क्षीर रे ॥ श्री० ॥३॥
इतने रे इतने मे दुहुं आविया रे, गुरुदेव ने देख रे।
उतरी रे उतरो पद-वन्दन कियो रे, सुख मान्यो है विशेख रे ॥ वी० ॥४॥
भोजन रे भोजन भल जीमाविया रे, कीनो तिलक लिलार रे।
शिक्षा रे शिक्षा देय विदा किया रे, पोख्यो प्रेम अपार रे ॥वी०॥५॥
अपणा रे अपणा सो अलगा रह्या रे, सुपना-सो ओ खेल रे।
गप ना रे गप ना साची बात है रे, अन्तर पैदल रेल रे ॥ वी० ॥ ६ ॥
दिनभर रे दिन भर चाल्या एकसा रे, कोश लघिया साठ रे।
सध्या रे पहुंच्या वापी पास मे रे, वन है घणो विराट रे ॥ वी० ॥ ७ ॥

- ढाल-मूलगी -

वापी सुन्दर भल जल पूरित, लेत हबोला हद्द।
घोडा ढाल्या सघन घास मे, स्नान करी ते सद्द जी ॥ श्री० ॥ ७६ ॥
भोजन जीम्या साथ को सरे, बैठा जीण विछाय।
मनहर पाज पै दोनों वन्धव, जलचर खेल दिखाय जी ॥ श्री० ॥ ७७ ॥

कैसी दशा करी कर्मों ने, तनाजान हो दोय।
काइ करणो प्रोग्राम अगाड़ी, सफल काम व्है सोय जी ॥ श्री० ॥ ७८ ॥
इतेक खेचर उठे उतरियो, पूछन हुवो तैयार।
कठे जावणो, आया कठासूं, भाखो सयल विचार जी ॥ श्री० ॥ ७९ ॥

* दोहा *

चख चचलता लख चटक, जख दीनो न जबाब।
अख आतुर चातुर चसक, भख भय लाय रबाब ॥ १ ॥

ढाल २१ मी ॥ तर्ज– मासखमण रो मुनि रे पालणो रे० ॥

पहले परकाशो परिचय पथिया रे, दाखे है अमरसेण खग-साथ रे।
सो कहे अठे भय है आकरो रे, सिंह नवहत्थो आवे रात रे ॥ १ ॥
सुणजो रे वीर - नरो री वातड़ी रे, आवेला इणमे सु - रस अपार रे ॥टेर॥
मारे है जलचर और नरो भणी रे, किणने नही धारे है शैतान रे।
जावो अठासूं घोड़ा ले करी रे, प्यारा जो होवे अपणा प्रान रे ॥ सु० ॥ २ ॥
थाने कई मालुम इसडो केहरी रे, वीतो थारा मे कदे बयान रे।
भेद खोलोनी तोलो जीवमे रे, म्हातो नही डरपो मिले को आनरे ॥ सु० ॥ ३ ॥
खेचर खास लाय विसवास ही रे, बोला मैं निवसूं गिरि वैताढ रे।
आनो जानो है म्हारो इत सदा रे, जिणसूं जाणूहूं सिंह रो गाढ रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
मैं तो चेताया मानव जाणने रे, आगे मर्जी ज्यो करिये आप रे।
घरसूं मिलवारी होवे भावना रे, जावो जल्दी सूं भाखूं साफ रे ॥ सु० ॥ ५ ॥

– सवैया –

घर छोर दियो वसवो वन मे, जिन मे मन मोद रहै हमको।
परवा नहि आनत है कब भो, जब भी कित काम बने अबको ॥

परनार गिने भगिनी जननो , फिर खा-न सकै कित भी ठंपको ।
भल चोर मिले अरु ढोर मिले घनघोर जुडे रण जो जगको ॥१॥
भिरवो लरिवो सव याद हमे, करिवो निज काम विना डर रे ।
पर पैर धरै हटवा वहतो, मन - भावत नांहि रती - भर रे ॥
मन - भीति भरे रिपु से जु डरै, धिक काह कहावत वो नर रे ।
रजपूत रहै मजवूत घनो , तस मानहु वंश उजागर रे ॥ २ ॥

– शिखरिणी-छन्द –

सुनी वाते सारी प्रवल वलधारी समभगो ।
गुनी ये हैं भारी वदन मन - हारी युगल है ॥
सुनादू मैं सारी परवश सु नारी दुख सहै ।
मिटादेंगे कारी विपद विकरारी मन कहै ॥ १ ॥

ढाल २२ मी ॥ तर्ज- भजले भल भगवान अरे मन मस्ताना ॥

कहूं कुंवरसा वात ध्यान से सुन लेना ।
जिसपर सोच विचार हमे उत्तर देना ॥ टेर ॥
रगपुर शहर सूर्यंयश राजा, महा प्रतापो न्यायी ताजा ।
चद्रावती तस नार , शील का तन गहना ॥ क० ॥ १ ॥
राणी सग नृप वाग सिधाया, जोगी एक अचानक आया ।
उठा ले गया नार , पता कुछ भी है ना ॥ क० ॥ २ ॥
राजा ने डूंडी पिटवाई , पता लगावे जो कोइ जाई ।
देऊं मान अपार , भूलूं ना दिन रेना ॥ क० ॥ ३ ॥
केइ गया वापिस नहि आया, मैंने पिण यह काम उठाया ।
वीते महिने चार पार विन दुख पैना ॥ क० ॥ ४ ॥
आखिर पाया पत्ता उसका, जो लेगया था जोगी जिसका ।

वही शेर अवतार बनो निर्भय रहेना ॥ क० ॥ ५ ॥
काबू मे आसकता नांही, विद्या अनेकों सिद्ध सदाई।
करता अत्याचार घारे नही वो कहेना ॥ क० ॥ ६ ॥
स्नान करन सिंह बनकर आता, वापी-जलमें छोल मचाता।
है यह सारा हाल मानलो सच वेना ॥ क० ॥ ७ ॥

— दोहा —

परवश पारहि दुख प्रबल, इन नृप चिन्ता पूर।
सूर विना कुण कर सके, दुस्सह दुख यह दूर ॥ १ ॥

ढाल २३ मी ॥ तर्ज– अष्टपदी लावणी० ॥

अजय श्री अमर कहे वानी, हाल सब लीना दिलठानी।
बनेंगे अब हम अगवानी, होय जगदम्बा वरदानी ॥

— दोहा —

नष्ट करूंगो दुष्ट को, इष्ट वचन है एक।
पुष्ट प्रतिज्ञा माहरीस काइ, सिष्ट सयल लो देख ॥
नेक दिल कथा सुनो सारी ॥ १ ॥
कुंवर है कैसा उपकारी, धन्य है धीरज जो म्हारी ॥ टेर ॥
स्वार्थ-वश शीस भरे पाणी, स्वार्थ-वश भार वहै प्राणी।
रणांगण मरे हो अगवानी; स्वार्थ से बने दास सानी ॥

— दोहा —

अकज करे, वन्ही जरे, पड़े पाड़ से जाय।
नाना दुख स्वारथ - वश भोगे, इस दुनियों में प्राय ॥
परमारथ करे न भल तारी ॥ कुं० ॥ २ ॥

पुनरपि पूछै खग-ताई, ठिकाना जाना के नाही ।
अगर हो तेरे ध्यान माही, चालकर बतलादे भाई ! ।

○ दोहा ○

सो कहे देखो सामने, शैल बडो रमणीक ।
सरिता-तट गह्वर है मोटी, अटवी बड़ी नजीक ॥
धूर्त वहाँ निवसे बलकारी ॥ कु० ॥ ३ ॥
घूमता निशिचर निश्शका, मदान्धी अनड़ महा वका ।
दया का अश नही अका, भूप केइ छोड़े कर रका ॥

○ दोहा ○

अर्द्ध-रयण वापी तरण, करण छोल वारीय ।
जो देखे, भक्षण करे सरे, सीह - रूप धारीय ॥
गूंज सुन हिया देत फारी ॥ कु० ॥ ४ ॥
वयर से अमर इसी आखी, अश्व दो लेजा वन-राखी ।
पहरा मैं देसूं एकाकी, देखलूं किसोक है डाकी ॥

— दोहा —

उस पर्वत की छोर पैं, रहना तूं हुंशियार ।
ला-परवा रखजे मती सरे, कर रखना करवाल ॥
मिलूंगा ऊगत दिनकारी ॥ कु० ॥ ५ ॥
वयरसी आज्ञा-अनुसारी, अश्व ले चाल्यो ततकारी ।
पहुंच्यो जहाँ पर्वत सरितारी, रात है गहरी अंधियारी ॥

— दोहा —

मारग नहिं, झाड़ी विकट, वनचर भरया विराट ।

तुरी थकित श्रम से भये सरे, घणो अघट है घाट ।।
नदी तट ठहरयो सुविचारी ।। कुं० ।। ६ ।।
घोडों री पग - चपी करके, चरण को ढाल्या मन भर के ।
भवानी हाथो लेकर के, बैठगो झाडी छिपकर के ।।

— दोहा —

अमरसिंह वापी निकट, वड - कोटड के माय ।
अर्द्ध-रयण होते पंचानन, गजब रहा गूंजाय ।।
पड्यो वो वापी मझधारो ।। कुं० ।। ७ ।।
उछाले पाणी विन-मपरो, खा-रयो जलचर भी घपरो ।
पाप से भरे खास टपरो, काम नहि त्याग और जप रो ।।

- दोहा -

पहर एक वीत्यो पछै, ऊंडो वड्यो अथाग ।
फिर निकली मारग लियो सरे, चड्यो मान रो छाग ।।
कुंवर पिण लाग्यो तस लारी ।। कुं० ।। ८ ।।
चले है दवे पांव तखरो, भेद नहि पायो है भखरो ।
सरीता पास जाय नखरो, पलटियो सिंह रूप मखरो ।।

- दोहा -

चौकस कर चारो दिशा, गयो जु गह्वर-गेह ।
अमर कमर काठी कसी सरे, निर्भय घुसियो तेह ।।
चलाकी चली नही व्हांरी ।। कुं० ।। ९ ।।
करी शृंगार सभा जोडी, सुभट केइ ऊभा मद-मोडी ।
खबर नइ आई क्या ओरी, सुनादो काढूं वल-फोरी ।।

— दोहा —

एक खबर ऐसी मिली , अश्वारोही दोय ।
आया वापी आसना सरे , गये कहाँ लिए जोय ॥
पता नहिं पाया सरकारी ॥ कुं० ॥

— दोहा —

वन सारो हम ढूंढियो , एक एक तरू डाल ।
गायब ऐसा हो गया, सरे चकमो दियो कमाल ॥ १ ॥
छुप्यो कुंवर सब ही सुणे, पुनि देखे सब ढंग ।
शाही ठाठ जमारख्यो , आज्ञा वहै अभग ॥ २ ॥

— कवित्त —

पड़ा वेशुमार धन - ढेर अस्त्र शस्त्रन को,
महल अटारियों की शोभा विन - पार है ।
जेल मे पड़े है घने, सिड़े है अनेकों शेठ,
राजा, बादशाह केई केदी जो करार है ॥
सारा सरदार तास निश्चर समान अघ-
करवा ने आगे रहै दया को विसार है ।
मरे सो मूरख हम कभी ना मरन हारे,
ऐसा वो घमण्डी वोल वोले हरवार है ॥ १ ॥

ढाल २४ मी ॥ तर्ज– कांइ रे नवाब करूँ रसिया० ॥

देखो मिजाज करे नर कितनो, तो, कितनो कितनो रे मेरू जितनो ॥ टेर ॥
यों नहीं सोचे हो जासी तड़ को, तो, सूखो पत्तो किम रहसी रे वड़ को ॥दे०॥१॥
खाना पीना ने नाना रे धोना, तो, भोग - विलास में जीवन खोना ॥दे०॥२॥

मरणा रो डर तो मूलसूँ भूला, तो, खाय रया अभिमान में भूला ॥दे०॥ ३ ॥
वडका बोला ने औगुन गारा, तो, चोर, लुटेरा महा - हत्यारा ॥दे०॥ ४ ॥
'मिश्री' कहे मूरख नही माने, तो, अकडाई मे अधिको ताने ॥ दे० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

अश्वारोही दुहुँन को, क्यो नहिं लाये शोध ।
पडे रहो, पत्ता नही, बोला लाकर क्रोध ॥ १ ॥

ढाल २५ मी ॥ तर्ज- अनन्त चौवीसी० ॥

कापडो कल कलियो भाखे वचन करूर,
जा विजयसिंह तूँ शोधी-लाव जरूर ॥
छलवलिया छोरा कोरा क्यों वचजाय,
मुझ आन शान मे वट्टो ही लगजाय ॥१॥
ले भृत्य साथ मे विजय चल्यो तिहिं वेर,
अमर-कुँवर भी लागो तिणरी लेर ॥
भट भमता भमता वयरीसीह विलोक,
कर हाकल ऊभा चारो मारग रोक ॥२॥
बोलो कित जासो हेरी हुवा हैरान,
तुझ बलि चढासो देवो के मल स्थान ॥
दूजो अब कहाँ है बतला अरे गिवार,
दोनो ने साथे ले - जासाँ दरबार ॥३॥
सुनतो ही ऊठ्यो सूरा रो सुलतान,
पहली मैं थाँरो दे देसूँ बलिदान ॥
क्यो हुवो ताकडा आजाओ मैदान,
लपरायो छोडो वश मे राख जबान ॥४॥

ले खड्ग झपटियो मानो ज्यूँ वनराज,
वो विजयसिंह भी भिडियो सन्मुख गाज ॥
छोरा क्यूँ छलके शिर पर आई मौत,
तूँ तिरचो तलाई में दरिया रो गोत ॥५॥
आपस मे अड़िया टाल्या नही टलत,
वन गूँजण लागो मानो भीम भमंत ।
लियो विजय पछाड़ी साथे जे सामन्त,
सब मार-गिराया वयरसीह बलवन्त ॥६॥
अमरसिंह चौड होकर, दी स्यावास,
हे बन्धव ! तूँने किया शत्रु का नास ॥
अब चालो उनपै जोवाँ कितोक जोर,
पर विद्या उसपै खग कहतो घनघोर ॥७॥
होनी सो होसी डर-लानो है नांय,
घोड़े चढ़ चाल्या पर्वत पश्चिम प्राय ॥
इक जोगी खिखर तपस्या तपै करूर,
उत पहुँच्या जाई उभय कुँवर गुण-पूर ॥८॥
योगी कहे बच्चो ! जबरो साहस कीन,
उपकार करण मे दोनूँ वीर प्रवीन ॥
लेकिन है टेढी खीर पचानी एह,
वो जोगी जालिम कइ विद्या रो गेह ॥९॥

— ढाल-मूलगी —

लायक हो थें लाडला सरे, शरणे आया आज ।
लेवो लकुट यो मायरो सरे, सारो सुधरे काज जी ॥श्री०॥७९॥
जीत सकै नहिं अब वो तुमको, दियो हाथ मे दण्ड ।

जावो अधिक मत देर लगावो, गालो तास घमण्ड जी ॥श्री०॥८०॥

ढाल २६ मी ॥ तर्ज– सुमति सदा दिल में धरो० ॥

नमन कियो चरणों-पडी , कहे धर्यो शिर हाथ , गुरुजी ।
माग्यों बिन मेवो दियो , देव - रूप साख्यात, गुरुजी ॥१॥
धन्य कृपा है आपरो , धन्य लियो भल योग , गु० ।
पूर्व पुण्यो सूं आपरो , मिलियो शुभ सयोग , गु० ॥ टेर ॥
पाछो ला मुझ सौंपजो , विजय-दण्ड परधान , बालूडा ।
शीघ्र सिधावो सिद्ध करो , अवसर उत्तम जान , बा० ॥ध०॥२॥
घेरचा हय हर्षित हुई , चाल्या वन विकराल , सलूना ।
साँझ समै गव्हर मिलो, हय तज कर दुहुं लाल, स० ॥ध०॥३॥
चतुर पणैं छिपता थकां, जोगी सभा के पास, स० ।
ऊभा सुणे तस बातडी, जोगो पूछे हुल्लास, स० । ध०॥४॥
विजयसिंह आयो नही, कारण इण मे कौन ?, स० ।
इतने मे नर हाँफतो, वात प्रकाशे जोन, स० ॥ध०॥५॥
विजयसिंह मारीजियो, अरु मरिया जे साथ, स० ।
घातक गायब हो गया, सही वात है नाथ !, स० ॥ध०॥६॥
प्रजल्यो पापी सुणत ही, वदल्यो किणरो दोह, स० ।
छोडू नही लख वात ही, जाणो लोह री लोह, स० ॥ध०॥७॥
अमर अगाड़ी आयने, लपक लियो ललकार, मिजाजी० ।
आव उरो मैं देखलूं, किसडो तोर करार, मिजाजी ॥ध०॥८॥
चन्द्रावती झट सौंपदे, या झेलो तरवार, मिजाजी० ।
सामी आय वकारियो, ढीलो वहै काई ढ़ाल, मिजाजी० ॥ध०॥९॥

— सवैया —

आज अनोखि अवाज सुनी हरि-भाँति उठ्यो अब गाज करी ।

आन वकार लियो शठ! तूं तुझ जीवन चाह मिटी जु खरी ॥
जोर दिखा कितनो बल है हमसेति छुडावत काह परी ।
जीवन आस जरावन को हुंशियार रहो करवाल धरी ॥१॥

ढाल २७ मी ॥ तर्ज– राघव आवियो हो० ॥

अमर आखे ढौंग थारा, देख लीना दुष्ट ।
स्पष्ट सुनले नष्ट करसूं, अरे पापी - पुष्ट ॥ १ ॥
अब मत देर समझे रच ॥ टेर ॥
मदान्धो आदेश दीनो, सैन्य ने ततकाल ।
घेरलो चकचूर करदो, क्या समझता ख्याल ॥ अब० ॥ २ ॥
पाय आज्ञा सुभट आया, शस्त्र ले छत्तीस ।
मेघ - धारा जेम वर्षे, नयन भरिया रीस ॥ अब० ॥ ३ ॥
वयरसी तब खड्ग खेंची, उचक पडियो माय ।
यमराज सादृस हाथ वाहे, ओर छोर फिराय ॥ अब० ॥ ४ ॥
एक की नहि चलन दी वो, लाश पै कई लाश ।
पडत धररर धरण-धूजी, 'जिम' लग्यो काटण घास ॥ अब० ॥ ५ ॥
त्रासिया भट नासिया ते, करे हाहाकार ।
सकज सूरो, लक्ष पूरो, लग्यो हरि ज्यूं लार ॥ अब ॥ ६ ॥
खून - वाला चले खललल, कापड़ी कोपत ।
होट - डसतो, दांत - पीसत, धरा लात हणत ॥ अब० ॥ ७ ॥
जायगा कित अब नराधम, पूर दूं सब ठूंस ।
मोर बल है अनल जामे, भस्म होसी फूस ॥ अब० ॥ ८ ॥
वीर भाखे वके मतना, काछ - लम्पट नीच ।
घोस इतना जुल्म कीना, आंख दोनो मीच ॥ अब० ॥ ९ ॥

० दोहा ०

इष्टदेव को याद कर , तन शस्त्रज-विद्याय ।
सारो बल ले काम मे , मत रखजे मन-माय ॥१॥
अगणित कीना अकज तूं, ताको आज हिसाब ।
व्याज सहित लेसूं सही, रख मत इतो रवाब ॥२॥

— छन्द - पद्धरी —

ताहि को सद्य बदलो चुकाय, रजपूति रग ले द्यूं दिखाय।
नहि मिला तुझे मर्दान एक, झट शस्त्र चला अब लेउ देख ॥१॥
यो कही भिड़े भट दोउ जोर, सग्राम तत्र माच्यो सघोर।
कइ देवि देव खग आये दौर, भय-लाय खडे सब एक ओर ॥२॥
नभ गूंज रहा, धरणी थराय, छा-गयो बान व्योम ताय।
जोगणी भरत खप्पर खराक, धकधोल मच्यो धरणी धराक ॥३॥
विद्या-बल फोत्त वो अथाग, पर मन्द-ज्योति क्या करे भाग ।
छेवट सब उतरचो दुष्ट छाग, योगी-दत्त लीनो विजय-राग ॥४॥
फटकार दियो फटके फराक, शिर-फोड़ मरचो कामी कराक।
की, पुष्प-वृष्टि सुर गगन जाय, जय विजय शब्द सारे सुनाय ॥५॥

– ढाल - मूलगी –

कुंवर जीतियो जगने सरे, अमर अमर आशीस ।
दीवी है भल भाव सूं सरे , जीवो क्रोड वरीश जी ॥ श्री० ॥८१॥
चद्रावती यो जाणके सरे, शान्ती लही शरीर ।
पर दुख काटण परगडा सरे, भलो पधारचा वीर जी ॥श्री०॥८२॥

— दोहा —

तन साजो सत्वर कियो , औषध के उपचार ।

सारी गुफा सँभालली, दोनो राजकुमार ॥ १ ॥
रुण्डमाल केता टिरे, कैद जेल के मांय।
सिड़े करे संभाल कुंण, दुख भोगे असहाय ॥ २ ॥

ढाल २८ मी ॥ तर्ज– अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी० ॥

दोनों बंधव उण दुखियो भणी, दीधो खूब दिलाशा जी।
निज निज स्थाने रे सर्व पोचाविया, सफल करी सब आशा जो ॥१॥
परउपकारी रे विरला विश्व मे, सहायक सुणतो होवे जी।
आघो पाछो सुख दुख आपणो, वीर जरा नहि जोवे जो ॥टेर॥
चन्द्रावती ने रे वेनड थापदी, नृप ने लियो बुलाई जी।
स्वागत म्हारो करने सातरी, महाराणी सँभलाई जी ॥प०॥२॥
खेचर सबने रे खांत-धरी जबैं, वीतक हाल सुनायो जी।
आयो अचभो रे सागने तदा, जस वे जबरो पायो जी ॥ प० ॥ ३ ॥
मिलवा आवे रे वड २ राजिया, आदर इधको पावे रे।
राक्षस मारयो रे मोटा मानवी, शोभा कहियन जावे रे ॥ प० ॥ ४ ॥
चीजो सारी रे कब्जे कर लिवी, एक एक संभाली जी।
आछा आछा रे नर अवलोक ने, राख्या करे रूखाली जी ॥ प० ॥ ५ ॥
थाणो वहाँ पै रे थाप्यो ढंग सूं, चारो दिश मे हाको जी।
हुवो जोर रो, धाको जम-गयो, गुण गावे सब म्हांको जी ॥ प० ॥ ६ ॥
घोटो पाछो रे जोगीश्वर भणी, नमन करीने सोपे जी।
आप कृपाथी रे इज्जत रहगई, गुण विण पग कुंण रोपेजी ॥ प० ॥ ७ ॥
सेवा सारो रे वालूड़ा तुम्हे, ऊमर अल्प हमारी जी।
अमर वयरसी रे वारी डालदी, भगतो करे मजारी जी ॥ प० ॥ ८ ॥
जोगी जपेरे रीज्यो थां-परें, उत्तमता निहारी जी।
मरियो पाछेरे कथा, पावड़ी, लकुट, खटोली थांरी जी ॥ प० ॥ ९ ॥

जरजर कथा रे खेरचो धन झरे, पावडी जल में तारे जी ।
जहाँ तहाँ जावे खटोले बेसने, लकुट । शत्रु ने मारे जी ॥ प० ॥ १० ॥
सुण सुखपाया रे सेवा साधली, अन्तिम स्वासा तांई जी ।
सेवाना फल निश्चे सपजे, ढाल 'मिश्री मुनि' गाई जी ॥ प० ॥ ११ ॥

– ढाल–मूलगी –

इक दिन अमरसेण चढ घोडे, जावे खेलन वन्न ।
छटा देख प्राकृतिक वहाँ पै, मगन हो गयो मन्न जी ॥श्री०॥८३॥
सीह-शार्दूल तक्यो गज मारन, कूँवर करुणा लाय ।
खेंच तीर मार्‍यो है हरि ने, वो हरि नर प्रकटाय जी ॥श्री०॥८४॥
विस्मित हो पूछे कूँमरजी, यह क्या कहिये मोय ।
बनी अचभेकारी घटना, कुण पशु कीना तोय जी ॥श्री०॥८५॥

ढाल २६ मी ॥ तर्ज– पनिहारी० ॥

प्रगटित नर पभणे तदा, पद-प्रणामी रे लो ।
ईश सुणो अरदास, साक्षी म्हारी रे लो ॥
मैं हथनापुर राजवी, विनमी रे लो ।
करतो जीव विनाश, होय शिकारी रे लो ॥ १ ॥
तपसी पालक मिरगलो, मैं देख्यो रे लो ।
ताको मारयो तीर, मिरगो केक्यो रे लो ॥
घायल मृग ऋषि पास मे, जब केक्यो रे लो ।
भरकर नयनो नोर, योगी छेंक्यो रे लो ॥ २ ॥
कर-स्पर्शी साजो कियो, रोसायो रे लो ।
मेरे पर अनपार, मै घबरायो रे लो ॥
जल छांटी सिंह कर दियो, लपकायो रे लो ।

मैं रोयो तिणवार, जद फरमायो रे लो ।। ३ ।।
अमरसेण शर-योगथी, नर वणसी रे लो।
इणही विपिन मजार, तब दुख टलसी रे लो ।।
आज कृतारथ करदियो, उपकारी रे लो।
पायो नर अवतार, सुघरी सारी रे लो ।। ४ ।।
कुँवर कहे हिंसा तजो, दुखदाई रे लो।
परतख लोवी निहार, सोचो भाई रे लो ।।
करी प्रतिज्ञा कहत ही, हर्षाई रे लो।
दया-भाव-उर-धार, जीवनताई रे लो ।। ५ ।।
भूप कहे पगल्या ठवो, घर म्हारे रे लो।
मानो प्रिय-मनुहार, सेण हमारे रे लो ।।
चाल्या दोनो साथ मे, गहगहता रे लो।
आया बाग मजार, लहरा लेता रे लो ।। ६ ।।
खबर दिवी पुरमायने, झट आया रे लो।
लिया वधाई ताम, मोद भराया रे लो ।।
स्वागत कीनो जोर रो, हिल-मिलके रे लो।
जुडी सभा अभिराम, कलियो पुलके रे लो ।। ७ ।।

* दोहा *

हाल बाल गोपाल से, कहा लाल भोपाल।
मो रक्षा नृप-लाल ने, कीनी अहो ! कमाल ।। १ ।।
क्षमता लखि जनता जवै, धन्यवाद अनपार।
दीधो ज्यो पीधो सुधा, इला धन्य अवतार ।। २ ।।

ढाल ३० मी ।। तर्ज– मल्लि जिन बाल ब्रह्मचारी रे० ।।

भलाई दुनियो मन भावे रे, भलाई दुनियो मन भावे।

बुरी बुराई देखो चतुरों ! , कोई नहीं च्हावे ।। टेर ।।
वहता करे बुराई जिणमे , जोर कांइ आवे ।
पल मे पाप पोट शिर घरले , अपयश हो जावे ।। भ० ।। १ ।।
कीचक, कस, और पद्मोत्तर , काइ लाभ लीना ।
लकेश्वर , दुर्योधन , जयचन्द , जुल्म किया जिन्ना ।। भ० ।। २ ।।
कोणिक हार-हस्ति के कारण , नाना से लडियो ।
वैर वसायो , हिसा करके , नर्कों मे पडियो ।। भ० ।। ३ ।।
करी भलाई कर्ण दान दे , अमर नाम वरियो ।
विक्रम - भूप महा - उपकारी , दोनन दुख हरियो ।। भ० ।। ४ ।।
आजतलक दुनियो नहिं भूलो , प्रात नाम लेवे ।
'मिश्री-मुनि' कहे भला काम मे , उत्तम नर वेवे ।। भ० ।। ५ ।।

– ढाल-मूलगी –

दोय दिनान्तर सीख मागता , भूप करे अरदास ।
एक दिवश तो और विराजो, पूरो मन री आस जी ।। श्री० ।। ८६ ।।
मन - राखण महाराजकुमर जी, और ठहरग्या मान ।
राजा निज परिकर ने पूछी, एक मतो लियो ठान जी ।। श्री० ।। ८७ ।।
राज - कन्या को व्याह रचायो, घूमधाम के साथ ।
माडाणी श्री अमरकुंवर को, पाणिग्रहण करात जी ।। श्री० ।। ८८ ।।
अर्द्ध राज दीनो दिल - घर के, खुशी हुवो परिवार ।
बडो वीर जामाता मिलियो, उपकारी सरदार जी ।। श्री० ।। ८९ ।।
सुख सोला वे लेवे रग मे, राज्य व्यवस्था कीध ।
सिहासन - पर दोनो भूपति, वैठो शोभा लीध जी ।। श्री० ।। ९० ।।

ढाल ३१ मी ।। तर्ज– जो आनन्द मगल च्हावो रे० ।।

कार्य मे सफलता च्हावो रे, बाघो पुनवानी सेण ।। टेर ।।

राज्य - सभा के मांही, आयो है दूत चलाई,
स्वयम्बर मण्डप-ताई रे, या खबर आयो छू देन ।। का० ।। १ ।।
कोशलपुर महाराया, ज्याकी चन्द्रकला है बाया,
जिसके-हित सर्व बुलाया रे, है आमन्त्रण मृदु-वेन ।। का० ।। २ ।।
केई राजा राजकुमारा, उत आगये हैं सरदारा,
रहा खाली स्थान तुम्हारा रे, चालो जल्दी मम केण ।। का० ।। ३ ।।
नृप कहे मैं उत आसू, एक बात पूछलूं थांसू,
वहां नई बात है कासू रे, जिससे न व्याह का चैन ।। का० ।। ४ ।।
कहे दूत शेर इक नामी, है पीजर माय विरामी,
बल अतुल वीर अनुगामी रे, बिन शस्त्र मारले येन ।। का० ।। ५ ।।

— कवित्त —

पिंजर उघाडे बिन हाथ ना लगानो हेक,
शस्त्र बिन धारी टेक सामने सिधावनो ।
भरी सभा माहे सूर-बीडो ले पछाडे कोऊ,
मारने के हेतु नांही कंकर उठावनो ।।
काम करड़ारे मारे ताको वरमाला मिले,
अन्यथा पधारो नही कन्या रत्न पावनो ।।
अमर कहे है ताम चलो जनपार वेग,
देखेगे कैसा है ठाठ समय सुहावनो ।। १ ।।

ढाल ३२ मी ।। तर्ज– हरिया मन लागो० ।।

चाल्या सह-परिवार सूं, कौशलपुर के पथ हो, साजन साभलो
आया मण्डप स्थान के, पाया मान अत्यन्त हो ।। सा० ।। १ ।।
भोजन सब साजन कियो, कार्य - व्यवस्था त्यार हो ।।सा०।।

शृंगारित कन्या भई, आई माला कर-धार हो ।। सा० ।। २ ।।
अप्सर-सी आदर्श है, पेख्यो उपजे प्यार हो।
ठहरी मण्डप बीच मे, झांका पड़्या जनपार हो ।। सा० ।। ३ ।।
ज्याका दिन है पाधरा, व्हांके घर या नार हो ।। सा० ।।
भाग्य-विना पावे नही, हुन्नर करो हजार हो ।। सा० ।। ४ ।।
दास्यो रा रमझोल मे, ऊभी राजकँवार हो ।। सा० ।।
कौशलपुर-पति यो वदे, यह बतीसमी ढार हो ।। सा० ।। ५ ।।

– तर्ज– थियेटर –

भरी सभा मे आम, कहे कन्या-पितु ताम, एक आयो ऐसो काम, मनचाह फले २,
सीह पिंजर मे गाज रयो है, विना शस्त्र विन हाथ लगाय। यदि देवे उसे मार,
कन्या नियम विचार, पावे वोही वरमाल, कहू साच साच साच २ ।। १ ।।
आप बड़े हैं झुंझार बुद्धि-बल के भण्डार, जल्दी करो सरकार, वखत आयगई २ ।
पोल दिखाणी फबै नही है, क्षत्री-पन को रखिये आन। ज्यादा कहना झिकाल,
आप बडे पृथिपाल, फोड़ो प्राक्रम विशाल उठो आज आज आज २ ।। २ ।।

– दोहा –

शब्द शाल विष व्याल सम, डक लग्यो महिराण।
जोर जाल महिपाल रच, आन ताल वे फाल ।। १ ।।
छल, बल, फल तिहुं एक थल, मिले न हेर हजार।
व्याह नही, यह व्याधि है, निश्चय लेहु निहार ।। २ ।।

ढाल ३३ मी ।। तर्ज– म्हारे व्याह पधारोला कांई जी० ।।

क्यो क्रोडो द्रव्य लगाया, क्यो स्वयम्बर यह रचवाया।
यह फदा आन लगाया, म्हारी स्यान गमावोला काई जी ।। १ ।
यह बात नही पाया-री, नही इज्जत वधे बाया री।

यो मोद पाणी मे वाया जी, सारी धूल उडावोला काई जी ॥ २ ॥
गम्मत गढपतियो - वारी, मण्डप मे हो रही भारी।
नही लगी एक भी कारी जी, अब रोल उडावोना काईजी ॥ ३ ॥
पीजर मे शेर दहाडे, वो छोल चढयो अनपारे।
अब कैसे इसको मारे जी, कोइ मंत्र चलावोला काईजी ॥ ४ ॥
सब अधोमुखी हुय बैठा, मानो खुशियो रे चेंठा।
वण्या धैर्य-विना रा धेठाजी, या मे जोम जगावोला काई जी ॥ ५ ॥

— ढाल - मृगनी —

अमर सेण उठ बोलियो सरे, यो छोटो-सो काम।
इतरी काई विचारणा सरे, करते हो जनम्याम जी ॥ श्री० ॥६१॥
थाके राज कन्या ऊभोडो, मण्डप के दरम्यान।
गौरव भाको पडरयो सरे, रजवट रो राजान जी ॥ श्री० ॥ ६२ ॥
दुख-भरिया चिडिया सभी सरे, वदे आंख कर लाल।
एड़ा जो हो आकता सरे, थेई करो ततकाल जी ॥ श्री० ॥ ६३ ॥
जो व्है हुकम आपरो तो अब, है मोने स्वीकार।
जय जगदम्ब करी भट ऊठचो , दृढता मन मे धार जी ॥ श्री० ॥ ६४ ॥

ढाल ३४ मी ॥ तर्ज– हांरे बना चौहटा री चलगत छोड़दो० ॥

हांरे कुंवर पिजरा पास मे पौंचियो, हां "रेग्रो" तो लीनो नयन निहार।
हांरे ओ तो निर्णय सारो पालियो , हांरे ओ तो परम प्रज्ञा रो भडार ॥ १ ॥
उत्पातिया है बुद्धि महारमणीक जो ॥ टेर ॥
हांरे ओ तो अग्नि प्रजाली चारो पाखती ,
हांरे ओ तो अद्भुत कीनो खेल।
हां रे वो तो सारो पीगलगो मेण रो ,
हांरे उणने गरमी पौंचत ठेलाठेल ॥ उ० ॥२॥

हाँरे वहाँ पै मेलो मडियो जोर रो,
हाँरे म्हारी अकल सरावे सारा लोग ।
हाँरे वा तो राजकन्या राजी हुई ।
हाँरे वहां रे शुभ पुण्यां रो संयोग ॥ उ० ॥३॥
हाँरे कन्या माला पहराइ घणा मोद सूँ, हाँरे राजा सारा हुवा मद-हीन ।
हाँरे देवे स्याबासी मूर्च्छा थका, हाँरे ओतो निकल्यो परम-प्रवीन ॥ उ० ॥४॥
हाँरे राजा व्याह रचायो बडा ठाठ सूँ, हाँरे पूछे है किणरा लाल ।
हाँरे एतो सूर्यंयश रा जामात है, हाँरे ए तो जोगी रो सारो तोड़्यो जाल ॥५॥
हाँरे दोनो दपति मिलिया महल मे, हाँरे चाली बुद्धि-तणी इलोल ।
हाँरे विजय वरो है अमरसी , हाँरे सारा राजा री निकली पोल ॥ उ० ॥६॥
हाँरे सूर्ययश कहे चालिये , हाँरे वासे जोता होसी वाट ।
हाँरे छोटा बन्धव आपरा , वयरीसिंह बलराट ॥ उ० ॥ ७ ॥

— दोहा —

मण्डप सूँ पहिपति गये, सीखलही निज गेह ।
उणमे सूँ इक भूपती , अमरष करत अछेह ॥ १ ॥
कर उपाय मारूँ अमर , कन्या लूँ उचकाय ।
काम सरचा सूँ म्हायरा, चित्त सभी बुझ जाय ॥ २ ॥
अमर गयो हथनापुरे , दोनो नार मिलत ।
हँसी खुशी राजी रहै , मिल्यो कन्त पुनवन्त ॥ ३ ॥

ढाल २५ मी ॥ तर्ज-अनोखा भँवरजी हो, साहिबा झालो दूँ घर आय० ॥

रातो भरतपुर राजवी हो , भवियण , ले साथे सरदार ।
गुप्त पणे तस महल मे हो, भवियण, घुसगये हो हुँशियार क ॥१॥
विरोधी वैर मे हो प्राणी जे वसिया दिन रात ।

पाप-पथ प्राहुणा हो, भवियण, वहता करे उत्पात ॥ टेर ॥
निशभर सूता नीद में हो, भवि०, अमर अमर-तिय सोय।
ढोल्यो अधर उठावियो हो, भवि०, वन मे ले गया जोय ॥वि०॥२॥
दरिया मे डबकावियो हो, भवि०, अमर भणी वन नीच।
वाला ले गयो साथ मे हो, भवि०, पड़ी पाप-पथ-वीच ॥वि०॥३॥
अशुचि सुख अभिलाषियो हो, भवि०, कीनो कर्म कठोर।
वाला जागी महल मे हो, भवि०, देखे दृग चहुँ ओर ॥वि०॥४॥
अपरिचित देखी स्थान ने हो, भवि०, चतुरा चमकी चित्त।
दासी दास एको नही हो, भवि०, कथ गया है कित्त ॥वि०॥५॥
कुण लायो, किण कारणे हो, भवि०, वणियो कवण बयान।
अणहोणी क्या होगई हो, भवि०, कर्म-गती दुख-खान ॥वि०॥६॥
इतने राजा आवियो हो, भवि०, मद भरियो भाखंत।
मतकर चिन्ता माननो ! हो,भवि, लिखिया नाहि टलन्त ॥वि०॥७।
आनद से लो आदरो हो,राणीजो,मुझ को निज भरतार।
मम शक्तो अवलोकलो हो,राणीजो, लायो अधर उठार ॥वि०॥८॥

– दोहा –

अमरसिंह अर्द्धांगिनी, तड़की बोली ताम।
शर्म हीन बोले किसो, तज जाती की माम ॥ १ ॥

ढाल ३६ मी ॥ तर्ज–पनजी मूंडे बोल० ॥

क्या डमडोले रे, निर्लज बनकर के हिये न तोले रे ॥ टेर ॥
परनारी थारी नहि प्यारी, खारी नागिन-कारी रे।
प्रान, आन, सन्मान, राज्य की, करत खुवारी रे ॥ क्या० ॥ १ ॥
चोर जेम चोरी-कर-लायो, वात विगारी सारी रे।

जाती री पत खोय, बन्यो तूं अत्याचारी रे ।। क्या० ।। २ ।।
खास स्वयम्बर मण्डप मे सूं, आयो नही अगारी रे ।
रे विषयान्धी जाल रच्यो, गई बुद्धी मारी रे ।। क्या० ।। ३ ।।
अगर मेरे स्वामी को चवड़े, लेतो आन वकारी रे ।
तो टणको हो किसो, मालुम होजाती थारी रे ।। क्या० ।। ४ ।।
क्या प्रियवर का हाल कियातूं, खबर हमे न लिगारी रे ।
अब आकर मेरे पै बनता, तूं बलधारी रे ।। क्या० ।। ५ ।।
याद-राख तेरे नहिं सारे, एक लात की मारी रे ।
कर देसूं भख - भूंग, मान मत अबल अनारी रे ।। क्या० ।। ६ ।।
हटजा, खेर - चहे जो तेरी, बद किस्मत री बारी रे ।
पर-धण चहत असन झूंठा सम काग करारी रे ।। क्या० ।। ७ ।।
एक मिनट इत मतना ठहरे, क्यो सुनता मम-गारी रे ।
निज नारी ने राड बनावन, मनसा थारी रे ।। क्या० ।। ८ ।।
जोलो कथ मिले ना तोलो तजती चार अहारी रे ।
'मिश्री मुनि' कहे धन्य शीलवति !, है बलिहारी रे ।। क्या० ।। ९ ।।

– दोहा –

कान्ता-क्रोध-कृशानु लखि, भय पायो भोपाल ।
होय अधोमुख अलग गो , निज महलो मे चाल ।। १ ।।
आसण एक जमाय के , दीना सदर कपाट ।
बैठगई पति ध्यान धर , निश्चित पणे निराट ।। २ ।।

– चन्द्रायणा –

सायर पड़तो अमर नीद दूरी गई, समरचो श्री नवकार एक चित से सही ।
शुष्क पुष्प सम होय तिरे विन भार है, जाके धर्म-सहाय सदा जयकार है ।।१।।
ततछिन पायो तीर, वीर सुविचारियो, अकस्मात अन्याय कौन करडारियो ।

पूरव कृत से कर्म उदय फल आविया, महा-प्रभू पिण देख अथक दुख-पाविया ॥२॥

ढाल ३७ मी ॥ तर्ज—जलो म्हारी जोड़रो, उदयापुर म्हाले रे० ॥

हिम्मत सूं किम्मत वढ़े, रोयों राज न पाय ।
ऊठ चल्यो वन लघियो, रविपुर दियो दिखलाय ॥ १ ॥
कुंवर श्री अमरसी, पुनवानी सूं प्यारो हो राज ।
साहस रो सेहरो, सूरसेण दुलारो रे ॥ टेर ॥
उपवन केरे आसनो, विसरामो लीनो रे ।
भूखो प्यासो थाकगो, दुख भोगे तीनो हो राज ॥ कुं० ॥ २ ॥
मालण मीठा बोलड, वतलायो आई हो ।
कित रहणो, कित जावसो, देवो फुरमाई हो राज ॥ कुं० ॥ ३ ॥
मैं आयो पथ भूलगो, कौशलपुर जाणो हो ।
जाणो तो बतलायदो, मारग मनभाणो हो राज ॥ कुं० ॥ ४ ॥
पहले पधारो बाग मे, फिर थाल अरोगो हो ।
मारग फिर दिखलावसूं, एक काज है योगो हो राज ॥ कुं० ॥ ५ ॥
घरलाई गहरा पणे, मालण जीमाया हो ।
नृप-कन्या लीलावती, इत छै महाराया हो राज ॥ कुं० ॥ ६ ॥
या संगीत-शिरोमणी, नहिं हारनवारो हो ।
पण शत कुंवर पढरया, कलाचार्य खिलारी हो राज ॥ कुं० ॥ ७ ॥
अद्यावधि जीत्यो नही, कोई नारी जायो हो ।
आई पूनम दुमना पडे, पाठक घवरायो हो राज ॥ कुं० ॥ ८ ॥
लायक हो थें कुंवरसा, परख्यो मैं पाणी हो ।
राजा रो दुख मेट दो, हो उत्तम प्राणी हो राज ॥ कुं० ॥ ९ ॥

— कवित्त —

असन अरोगी अखै मेरे है अवश्य काज-

कौशल - नगर पंथ हमे बतलायदो ।
काम से फारक बन आऊँगो अवश्य इत-
आपको बनासूँ काम फिकर हरायदो ।।
मालरण मुलक बोली भोली कैसी करो बात-
पूनम तो आनवारी कीकर गमायदो ।
मरदो को मान सारो जावे है समद-खारे –
तो भी ओला लेवो आप रंग दरसायदो ।।१।।

ढाल ३८ मी ।। तर्ज– पाली रा पटवा, मोड़ो क्यों आयो म्हारा देश में।।

आलोजा कुँवर !, कीकर लजावो थाँरी जातडी ।
कन्या ने जीतो, जद मैं मानूं ली साची बातडी ।। टेर ।।
थे लाखोरणा कुँवरसा !, मोत्यो तपे लिलाड ।
अणियाली आँखडल्यो माहे, भडभूजा री भाड हो ।। आ० ।। १ ।।
रजपूतो रे काम क्या ?, काई चिन्ता री बात ।
मारग वहता राडले, रग दिखावे हाथ हो ।। आ० ।। २ ।।
कोष डोडसो ऊपरे, कोशलपुर है खास ।
कन्या परणी जावजो, लेकर के स्याबाम हो ।। आ० ।। ३ ।।
कुँवर मानपुर मे गयो, आचारज सकेत ।
पूछ्यानन्तर दे दियो, पण्डित उत्तर तेथ हो ।। आ० ।। ४ ।।
जीते जो कन्या - प्रती, इसो कौन है लाल ।
पाठक कहे दीसे नही, सारा ठोठ सियाल हो ।। आ० ।। ५ ।।
फिकर करो मत आपरो, देसूँ काम निकाल ।
इसी किसी है कन्यका, व्यर्थ फुलावे गाल हो ।। आ० ।। ६ ।।
मालण घर कुँवर रहै, भक्ती है भरपूर ।
कन्या से मालण कहे, तजदो अबै गरूर हो ।। आ० ।। ७ ।।

अलबेलो नर आवियो, देसी टेट निकाल।
राजीपो पहले करो, वरते मगल - माल हो ।। आ० ।। ८ ।।

० दोहा ०

मुँह मचकोडी कन्यका, कहे कुतूहल लाय ।
मालण ! मूँगा मोलरो, लाई किने उठाय ॥१॥

ढाल ३६ मी ॥ तर्ज- म्हाने दोरो लागे जी० ॥

भोला मालणजी क, भोला मालण जी क।
वीणा मे जो मुझने जीते, किनको लालन जो ।। टेर ।।
आज तलक आयो नहि इसड़ो, इण विद्या रो जाण।
कपट - कला ने छोड मर्दो में, मिले न दूजो नाण ॥ भो० ॥ १ ॥
चाहे जितरो मान तोल ले, होड करे नही म्हारी।
रोल नही मिनखो मे पोल है, मालुम पडसी सारी ।। भो० ॥ २ ।।
गम्मत करने मालण वोली, होले से कहरासी।
ऐसो नर निरखोला जद थें, देवोला स्यावासी ॥ भो० ।। ३ ।।
इती नही है पूनम आगी, सुण लाखीणी लाडी।
मान अणूतो नही कामरो, अकल आवेला आडी ।। भो० ।। ४ ।।
मिनखो री पुनवानी मोटी, सुणी शस्त्र मे वात।
जिणसूँ नारी - केरे ऊपर, नर वनजावे नाथ ॥ भो० ॥ ५ ॥
कन्या रे करडावण काठी, जची नही तिलमात।
मालन आई वाग वीच मे, भाखे जोड़ी हाथ ।। भो० ॥ ६ ॥
कुँवर-साव ! थे करामात कर, इण कन्या ने जीतो।
जद मर्दो री मूँछ रहेला, घणो राखजो पीतो ।। भो० ।। ७ ।।
मत डरपो मालणजी ! थाँरी, वात सत्य हो-जासी।

इतनी कन्या उछले स्याने, हो जावेला हाँसी ।। भो० ।। ८ ।।
हाँ करती प्रगटी है पूनम, मण्डप री व्हो त्यारी ।
कुँवर सजग होकर झट चाल्यो, आचारज रे लारो ।। भो० ।। ९ ।।

– दोहा–वाजिद री चाल में –

हाँरे ओ तो सब लडको ने लार पाठकजी ले चल्यो ।
हाँरे व्हाँरी छाती धडका खाय कन्या बल देखल्यो ।।
हाँरे वे तो मण्डप धसिया जाय के ओलो-ओल ही ।
हाँरे आई परीक्षण टेम के बजे शुभ ढोल ही ।। १ ।।
करी परीक्षा ताम छात्र गण की तबै ।
हास्या पल मे तेह कन्या आगे जवै ।।
दुमनो हो गयो विप्र अमर तब ऊठियो ।
कन्या के अभिमान के ऊपर रूठियो ।। २ ।।

ढाल ४० मी ।। तर्ज– असी रुपैया ले कलदार० ।।

राजकन्या सुनलो मुझ वात, इतना मत उछलो स्त्री-जात ।। टेर ।।
जितनी विद्या व्है तुम पासे, वो दिखलादो नव-नव भाँत ।। रा० ।। १ ।।
मन मे रती न रखजो वाला !, गायन, वादन को सब साथ ।। रा० ।।२।।
इसो विचार आणे दो मतना म्हासूँ लारे है नर-जात ।। रा० ।।३।।
मैं भी चुटकलो फिर दिखलासूँ, मर्दोंरा देखोला हाथ ।। रा० ।।४।।
कन्या श्रवण करत हो भिडकी, विद्या विस्तारी घरखाँत ।। रा० ।।५।।
अभिनव रंग छा गयो मण्डप, नर, सुर सुणने वनचर आत ।। रा० ।।६।।
इणने कुंण जीते जग-माही, देव रूप चवडे दिखलात । रा० ।।७।।
एक घड़ी नाटारंभ कीनो, शोभा तो वरणी नहिं जात ।। रा० ।।८।।
थकित होय विश्रान्ती लीनी, ढाल चालीसमी सुनिये भ्रात ।। रा० ।।९।।

० दोहा ०

कर वन्दन आचार्य को, अमरसिंह घर रंग।
वीणा लीवी हाथ मे, कल पुर्जा इक ढंग ॥ १ ॥
तान, आन अरु गान युत, उडारस भेदान।
दिखलावे दुनियो-प्रते, मण्डप रे दरम्यान ॥ २ ॥

ढाल ४१ मी तर्ज- केशर थें लाइजो मूंगा मोल री० ॥

हाथ धरचो उण वीण पै, निकली राग छतीस, रसिकजन।
मुग्ध हुवा सब मानवी, ऐसी अलाप बनीश, रसिकजन ॥ १ ॥
कला महा-सुखकार है, कला करावे किलोल, रसिक जन ॥क०॥टेर॥
मेलो मंडियो मोटको, देव असुर आया दौर ॥ रसि० ॥
वनचर वनसूं आविया, ऊभा ओला ओल ॥ रसिक० ॥ क० ॥ २ ॥
रगत छाई सांतरी, सुध बुध भूला लोग, रसि०।
यो पुन्या रो पौरषो, सुन्दर मिलियो योग, रसि० ॥ क० ॥ ३ ॥
घड़ी दोय रो जाणजो, गायन रो गहकाय, रसि० ॥
जातो काल न जाणियो, मोद वढ्यो मन माय, रसि० ॥ क० ॥ ४ ॥
वध कियो सगीत ने, करे प्रशसा पूर, रसि०।
यो कोई नर या देवता, निरख रया है नूर, रसि० ॥ क० ॥ ५ ॥
कन्या लज्जित हो गई, गर्व गल्यो छिन-माय, रसि० ॥
वरमाला पहरायदी, आदर दोनी राय, रसि० ॥ क० ॥ ६ ॥
कन्या गइ है महल मे, मालण पहुंची पास, रसि० ॥
अहो! बाईसा! मुझ भणी, दो-नी खूब स्यावास, रसि० ॥ क० ॥ ७ ॥

— ढाल - मूलगी —

मालण जी मति आगला सरे, नर परख्यो थें सार।

मैं नहिं मानी बातड़ी सरे, जिद्द अणूती धार जी ॥ श्री० ॥ ६५ ॥
पिण थारी महनत फली सरे, मनमान्यो पतिराज ।
मिलियो म्हाने मोदसूं सरे, थारो रह्यो मिजाज जी ॥ श्री० ॥ ६६ ॥
कर मोच्छव शुभ मुहुरत देखो, दो कन्या परणाय ।
कर मोचन मे राज्य दियो सब, दीक्षा ली महाराय जी ॥ श्री० ॥ ६७ ॥
राज्य - व्यवस्था ऐसी कीनी, परजा पाई चैन ।
अमरसेण मुनिराज ने सरे, पूछचा इसडा वेन जी ॥ श्री० ॥ ६८ ॥

ढाल ४२ मी ॥ तर्ज– जावो-जोवो ऐ मेरे साधू, रहो गुरू के संग० ॥

कहदो कहदो हो करुणा सागर¹, आन ज्ञान के जोर ॥
सुख से सूता रग महल मे, कुण मुझ सागर-डारचो ।
मम वनिता की कौन दशा है,किणविध विरहो पारचो ॥क०॥ १ ॥
मुनि भाखे तव-वनिता इच्छुक, ऐसो कियो अन्याय ।
नाम कहन का कल्पे ना मुझ, द्यु थोडो जतलाय ॥ क० ॥ २ ॥
सागर मे तुझको वो डारी, ले तव - राणी साथ ।
अपने घर जा सति छेडी, वा नही मानी बात ॥ क० ॥ ३ ।
महल कपाट - जड़ोसा बैठी, तज्या खान ने पान ।
ध्यान घरे वा निशदिन तेरो, दुख-पूरित उण स्थान ॥ क० ॥ ४ ॥
सात दिवस तो बीतगा, खुलता नही कपाट ।
विषयी को नही चैन जरासा, झेली ऊजड वाट ॥ क० ॥ ५ ॥
कर उद्योग कुंवर अब जल्दी, दुख पावे सा बाल ।
पता सभी पड़जासी पथ मे, तीजे दिन सर-पाल ॥ क० ॥ ६ ॥
अमर नमन मुनि ने कर पाछो, आयो सभा मझार ।
मत्री ने सब राज्य सौप के, चला अल्प चमू लार ॥ क० ॥ ७ ॥
कोश डोड सो दोय दिनो मे, लाघलिया है सोय ।

तीजे दिन सरवर पै डेरा, दिया राजाजी जोय ॥ क० ॥ ८ ॥
भोजन से फारक होने पर, इधर उधर टहलन्त ।
चार सवार जावे है जल्दी, पाल-नीचले पंथ ॥ क० ॥ ९ ॥

- दोहा -

सरदारो ने शीघ्रतर, कहे लावो थे जाय ।
वे लाया आया उठै, अमर अखे कहो वाय ॥ १ ॥
छो किणारा असवार थे, जावो कुणसे गाम ।
ऐसी जल्दी किण-मुदे, कांइ जरूरी काम ॥ २ ॥

ढाल ४३ मी ॥ तर्ज– हां पाम मोहि लागे प्यारो० ॥

हाँ सुणो महाराजा म्हारी, वीतक वात करो छो ज्हारी ।
आया भरतपुर शहर से, चारो इणवारी रे ॥ टेर ॥
घटना एक घटी हदवारी, पर-धण लायो नृप व्यभिचारी ।
सा जड़-दिया कपाट, खुले नहिं थक्या हजारी रे ॥ सुणो० ॥ १ ॥
खाना, पीना वा तज दीना, मार गिराया उत मुख कीना ।
छट्टे दिन की वात निकलगइ वाहिर नारी रे ॥ सुणो० ॥ २ ॥
वन विकराल सभा मे आई, पकड़ भूण मारे पशुनाई ।
जो छोडण-हित कर्‌यो, उन्हे पिण लोना मारो रे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥
चवडे चौहटे टेर्‌यो तरुवर, नीलो काम उडावे सररर ।
ठहर ठहर जल छाँट, चोट वा देत करारी रे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥
साहस-हीन हो गये सारा, उण पै वल नहिं चले लगारा ।
महाराण्यों री विनती सुनवा इसी उचारी रे ॥ सुणो० ॥ ५ ॥
कौशलपुर पति जो इत आवे, तासु कथन पर हम छिटकावे ।
नहितर इसको सिडा-सिडा कर देवुं सजारी रे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥

पर - प्यारी रा प्रेम - पियाला , इसे पिलाती हूं मतबाला ।
फेरू ऐडो काम करे नहि फेम विसारी रे ॥ सुणो० ॥ ७ ॥
मैं सब जावो कौशलपुर को , लावो जल्दी उस नर-वर को ।
सारा राज्य मे है कोलाहल , लगे जु कारी रे ॥ सुणो० ॥ ८ ॥
ठीक, कहे नृप सुत मत जावो, कितो भरतपुर हमें बतावो ।
करदेसो शाता सब पुर मे बन अधिकारी रे ॥ सुणो० ॥ ९ ॥

० दोहा ०

आखे वे यों अमरतें , करिये कृपा कृपाल ! ।
अमर नाम होसी जगत, हे रजवट-प्रतिपाल ! ॥ १ ॥

ढाल ४४ मी ॥ तर्ज- हांरे लाला बिछिया थारे बाजणा० ॥

हांरे लाला आठ कोश दूरो अछै, म्हारो शहर भरतपुर राज रे लाला ।
आप पधारो कर दया, राखो सारो री लाज रे लाला ॥ १ ॥
अरज सुणो अलवेशरू ॥ टेर ॥
हारे लाला कूचनगारो वाजियो,वेतो चढ चाल्या जिणवाररे लाला ।
आथमते रवि पौंचिया, जठै मिलिया लोक अपार रे लाला ॥आ०॥२॥
हारे लाला देख दशा उण भूप री, अमर लह्यो आनन्द रे लाला ।
वदलो वनिता वालियो, ओ तो भूलगयो सब फन्द रे लाला ॥आ०॥३॥
हारे लाला वतलाई राणी भणी, वा ओलख अलगी थाय रे लाला ।
अमर कहे सुण राजवी!, तूं तो कीधो जबर अन्याय रे लाला ॥आ०॥४॥
हारे लाला सभा करी ने पूछियो,किम आई इसडो लहर रे लाला ।
थारो कई बिगाडियो, फिर क्यो उमढ्यो मन जहर रे लाला ॥आ०॥५॥
हारेलाला नृपकहे भावी योगथी,म्हासूं बणियो काम निकामरेलाला ।
मरजी व्है ज्यो कीजिये, मैं तुझ दास गुलाम रे लाला ॥आ०॥६॥

हारे लाला उदधी में मुझे डालियो, सूतो निद्रा बीच निशक रे लाला।
राणी ने लायो शील-भंजवा, कुल ने दियो तूं कलंक रे लाला ॥आ०॥७॥

— ढाल–मूलगी —

लोग सहू 'धिक्कारियो सरे, भयो वश में नीच।
पाप लगे मुख देखियो सरे, कल्यो काम के कीच जो ॥ श्री० ॥ ९९ ॥
इसके योग्य है दण्ड मृत्यु का, सारा - जन सुण लीजो।
तो भी दया लाय ने छोडूं, बुरो पंथ तज दीजो जी ॥ श्री० ॥ १०० ॥

ढाल ४५ मी ॥ तर्ज–म्हारा हाथ में नौकर वाली, मने नवपदनो आधार जी।

कुंवराणी सूं मिलियो महला, सुख दुख दियो सुणाय जी।
कैसो बेहद पड्यो विछोवो, मिलया भाग्य सूं आय जी ॥ १ ॥
पुण्य-तणो प्रभाव प्रवल है, पाप-तणा फल हीन जी ॥ टेर ॥
आधो राज दियो है उणने, सेवक अपणो थाप जी।
अर्द्ध-राज निज कब्जे कीनो, सब कहे की धनियाप जी ॥ पु० ॥२॥
हथनापुर रे साथ मिलाकर, वृहद् बनायो राज जी।
हाथो वैर लियो वडभागी, भाज दुष्ट रो खाज जी ॥ पु० ॥ ३ ॥
आछी रीत राज्य री कीनी, नीतो - मय मर्याद जी।
सबने एक सरीखा वर्ते, करे न वाद - विवाद जी ॥ पु० ॥ ४ ॥
अमर पड़ह दो राज्य वजायो, कौशल गजपुर साथ जी।
आण अखण्डित वर्त रही है, निपुण मिल्यो है नाथ जी ॥पु०॥ ५ ॥

— दोहा —

अब सुनिये आनन्द से, वयरिसीह वृत्तान्त।
बड़-भ्राता आयो नही, पड़ी हृदय अति-भ्रान्त ॥ १ ॥

शोधन चाल्यो चढ - तुरी, वन वन लीनो छान।
पर्वत, तरू, गव्हर, नगर, गाम डगर जल-थान ॥ २ ॥
मा - जायो पायो नही, आयो दुक्ख अपार।
अणचिन्ती कैसी वणी, भ्रात-विरह उर-जार ॥ ३ ॥

ढाल ४६ मी ॥ तर्ज– म्हारा छेल भँवर रो कांगसियो० ॥

म्हारा वडभाई ने आय हाय कुण वैरी हरियो रे।
ओ कुण आटो साजियो, कुण जादू जरियो रे॥ टेर॥
भाई भट मोटो है म्हारो, विलमायो हद कीनी रे।
केद कियो या मारलियो है, या तस्ती काई दीनी रे॥
वेम यो मन मे वडियो रे॥ म्हारा० ॥ १ ॥
कही वात रो नही है वुडको, खोज खवर है नाही रे।
जहर उमढियो मन नही लागे, गयो कठै ममभाई रे॥
प्रेम मे गिरकँद गुडियो रे॥ म्हारा० ॥ २ ॥
माता मरगी, वाप रूठगो, वन्धव छेह दिखायो रे।
मैं हत-भागो पूर्व-कर्म रो, किसडो लेख लिखायो रे॥
आनन रो नूर उतरियो रे॥ म्हारा० ॥ ३ ॥
सरदारो ने शीघ्र वुलाई, गुफा सर्व सम्भलाई रे।
पूरी हिफाजत सूँ रखवालो, जवतक न्हावे भाई रे॥
भोखो थाँरे शिर - धरियो रे॥ म्हारा० ॥ ४ ॥
कथा,खटोली,लकुट,पावडियो,शस्त्र लिया सव साथे रे।
उडग्यो है आकाशगती - कर, ज्यो पक्षी उडजाते रे॥
भाई शोधन परवरियो रे ॥ म्हारा० ॥ ५ ॥
ग्राम, नगर, पुर, पाटण पेखत, श्रीपुर पौच्यो आई रे।
चारो चीजें गुप्त करी ने, ढूँढयो शहर मे जाई रे॥

पतो पूरो नहिं परियो रे ।। म्हारा० ।। ६ ।।
सेठ वसुदत्त मोटो धनपति, राज्यमान्य सुखदाई रे ।
तास भवन के सन्मुख बैठो, पथ-श्रम टालनताई रे ।।
सेठ के नजरो अडियो रे ।। म्हारा० ।। ७ ।।

— दोहा —

सेठ ऊठ सन्मुख गयो, झुक-झुक कियो जुहार ।
प्रेम - भाव दर्शावियो, मिलिया बाँह पसार ।। १ ।।

ढाल ४७ मी ।। तर्ज– थें तो मोटा हो भैरूँ जी बाबा देव० ।।

थेंतो आया कठासू भाई-साहव! ,चिन्ताकाई थारे मनमे रे ।
आवो पधारो वेसो माय, मोने बतावो, मेटू ँ छिन मे रे ।।१।।
ओ तो आदर दे अनपार, लायो हवेली रे माही रे ।
भोजन जीमायो धरप्यार, लियो बातो मे विलमाई रे ।।२।।
वयरसिंह कहे सेठ, भाई म्हारो गयो वन रन मे रे ।
वेतो गया कठै जा वैठ, मैंतो ढूँढत फिरू ँ लाधे जिनमे रे ।।३।।
मिलसी तुम्हे महाभाग! , खबर मँगावू ँ पुर-पुर सूँ रे ।
देश विदेशो अथाग, मै तो लगावू ँला धुर सूँ रे ।।४।।
इम विता दिहाडा दोय, समय सध्यारो आयो रे ।
राजा वुलायो सोय, सेठ मिलवा महलो मे धायो रे । ।।५।।

— ढाल–मूलगी —

राजा सेठ ने ले एकान्ते, सारी बात सुनाई ।
कनकपुरी नगरी को राजा, यहा पै करी चढाई जी ।।श्री०।।१०१।।
सवव यही कन्या परणादे, नहीतर जग-रचा सूँ ।

कठिण जीतणो सेठो! उणने जुडियो राज गमासूँ जी ॥श्री०। १०२॥
परणादूँ कन्या नहि माने, वो नृप मिथ्या माही ।
बाया समकित धारी पक्की, डिगती नही डिगाईजी ॥श्री०॥१०३॥
इणी समस्या मे मै फसियो, शल्ला दो सुखदाई ।
कन्या रहै. राज नहि विगड, अकल उपावो भाईजी ॥श्री०॥१०४॥

ढाल ४८ मी ॥ तर्ज- धम्मो मगल महिमानिलो० ॥

सेठ वदे स्वामी सुणो, पाछो आवूँ पूछ ।
हूकारो मिलजाय तो, ऊँचो रहसी मूँछ ॥ १ ॥
उत्तम अवसर साध ही, उत्तम देवे सहाय ।
उत्तम उत्तमता भजे, देवे दुक्ख हटाय ॥ टेर ॥
सीख लही ने सेठ आ, बैठो कुँवर पास ।
वयरसीह बतलावियो सेठो! केम उदास ॥ उत्तम० ॥ १ ॥
गुप्त वात सेठो - तणी, सुण बोल्यो सुकुमार ।
भजो शान्ति, चिन्ता तजो, देसूँ तस मद गार ॥ उ० ॥ २ ॥
मिलियो महिपति से सही, सेठ सगाते जाय ।
मत डरपो हाजर अछू, देसूँ देण मिटाय ॥ उ० ॥ ३ ॥
दूत मुखे कहलावियो, कनकपुरी - नृप - कान ।
जैन बणो कन्या मिले, नहितर देखो आन ॥ उ० ॥ ४ ॥
जा सँभलाई दूत ते, श्रीपुर - पति नी वात ।
प्रजल्यो घृत-पावक जिसो, सैन्य सजी उत-आत ॥ उ० ॥ ५ ॥

– छप्पय-छन्द –

मान चढ्यो महिपाल, लाल आँखो कर डारी ।
कर देसूँ चकचूर, भूर भूखो इणवारी ॥
म्हासूँ राखे गाढ, अकल गइ उनकी सारी ।

कित नवहत्थो शेर, कहाँ बकरी बदकागे ॥
जैन वणावे हम भणो, राक वाक राखण सघर ।
जिणरो मजो चखायदूँ, सरदारो बाँधो कमर ॥ १ ॥

— दोहा —

दोड्यो दल ले दलपती, घेरो नगर घिराय ।
पथ रोकी पसर्यो प्रवल, गये लोक घवराय ॥ १ ॥
रिण-रसियो हँसियो कुँवर, कस्यो कमर पट-कूल ।
हय हाँकी वाहिर गयो, समर-थले कर शूल ॥ २ ॥
जाय कह्यो हटिये जरद, घेरो तज धर गाढ ।
दटिये अब नटिये नही, सटिये अवसर षाढ़ ॥ ३ ॥

ढाल ४६ मी ॥ तर्ज– नवीन रसिया० ॥

लपको मतकर रेतूँ लाडो, ओ तो लश्कर है वाको ।
ओ तो लश्कर है वाँको, जिणसूँ धूजे नर लाखो ॥ टेर ॥
चमूपती रे चटकी लागी, रोस अणूती उर मे जागी ।
आयो कठासूँ घेरो तोडवा, नाम काई थाको ॥ ल० ॥१॥
इस दल को जो पीछा मोडे, लाख करो वो वचे न कोरे ।
छोरो को नही ख्याल, दूध नहिं सूको है मा-को ॥ ल० ॥२॥
सीधी तरह कन्या परणावे, राज, प्राण दोनो रह जावे ।
नही मानो तो सत्य मानजो, मरणा रो आको ॥ ल० ॥३॥
वीर वयरसी वोला तड़की, इतनो वात कहो क्या कडकी ।
कन्याका कहाँ दर्श, अठे घर नहिं है नाना को ॥ ल० ॥४॥
अगर व्याह की होय तमन्ना, आजाओ मैदाने वन्ना ।
व्यर्थ वको मत होय वावला थोड़ी समज राखो ॥ ल० ॥५॥

लेनपती ललकारी भाखे, वढो अगाडी क्या इत झांके।
भिड़गये भट अनपार, जोर रो हो गयो है हाको ।। ल० ।। ६ ।।
नाना-विध वहाँ शस्त्र चले है, जोधा तो नहिं झिल्या झिले है।
ढाल कही गुनचासमी 'मिश्री' लोभ परो न्हाको ।। ल० ७ ।।

– दोहा –

वैरीदल मे वयरसी, वडियो जा-विधि वाघ।
हलफलिया सारा हुवा, सहस फुणो लखि नाग ।। १ ।।
लगे जठै कट-कट पडे, वठे मिले ना माग।
वयरसीह-बल-सिन्धु मे, पडे, लहै कुण थाग ।। २ ।।

ढाल ५० मी ।। तर्ज– कडखा० ।।

सूर मुख नूर रवि-तेज के पूर ज्यो, दूर थी ढहपडे दहल सारा।
ओट विन चोट या पोट के ज्यो पडे, आकसा जानलो बान खारा ।। १ ।।
ल्हास पै ल्हास तित दिख रहो पहाड़वत्, खून खाला वहै खलल खासा।
आसिया नासिया पोपल पानडा सयल चमू छोडदी जीत आशा ।।सू०।।२।।
जग मे भग लखि, कनकपुर राजवी, होय तैयार आयो अगाडी।
अस्त्र शस्त्रे करी भिडगयो भूतसो, खोलदी वाण की जबर झाड़ी।सू०।।३।।
खग्ग खरणाट थी धरा आखड़हडे, हडभडे शेष पिण भीत पामी।
लडथडे कायर वायड बापडा, जोध जुडिया जित कौन खामी ।।सू०।।४।।
श्रीपुर राजवो फौज लेकर खड़ो, दूर थी दगल देख रहियो।
शहर के कगुरे कगुरे जन सभी, कुँवरना जोस थी होस गहियो ।।सू०।।५।।
तीर, भाला वहै वर्छि वरणाट ही, शेल, शमशेर, मुदगर, मुसण्डी।
गदा घनघोर पुनि तोमर, त्रिशूल घन, खेत खोधा खरै हो घमण्डी।सू।।६।।
देव, दानव धरै पेर पाछा तदा, अरे भइ! फेट मे आय जासो।

नाचत भैरवी भैरव साथ ले , खप्पर भरत है जान आसी ।।सू०।।७।।
रीस मे ऊछले दुहू गजराज ज्यो चालणी सम वण्यो वदन व्हाँको ।
रुपगया पैर जहाँ वड-वड शेल ज्यो,लोग कहे जवर यो वण्यो साको ।सू ।।८।।
वयरसी वीर गभीर अरु धीर है, लाखो सूँ ले रया यह झडाका ।
कनकपुर राजवी शकियो मन जवै, अवसर वयरसी जान सोधो ।
ढाल पच्चासमी पकड़ काठो लियो , नगाड़े जीतको डक दोधो ।।सू०।।९।।

— सोरठा —

जस छायो जग जोर , दौर दौर पावो परै ।
सुर, नर फूलो फौर , जय जय कर वर्षा रहै ।। १ ।।
जिण्यो न जननी ओर, इसडो सुत इल ऊपरे ।
एकलड़ो रण - ठौर , लियो झडाको जोर सूँ ।। २ ।।

ढाल ५१ मी ।। तर्ज– पपैयो बोल्यो सा० ।।

घात्र साजा करवाया जी , सात दिनो के वाद, सभा मे कुँवर पधारचा जी ।
कनकपुर-पति को लाया जी, कहेकर के यह वाद, कौनसा कारज सारचा जी ।।१।।
इज्जत अरु राज्य गमाया जी, जो करे व्यर्थ तकरार, निरर्थक दीना न्योता जी ।
व्याह मर्जी से होता जी , करे अणूती राड , वही नर खावे गोता जी ।।२।।
कनकपति मद-भर बोला जी, थे मिलिया झूँझार जिणी से खाया झोला जी ।
अन्यथा यह क्या जीते जी, इतनो काई करार, लिया मोटो का ओला जी ।।३।।
छोडदो अव तो म्हाने जी, राज पाट लो सर्व , साच मैं भाखूँ थाने जी ।
कुँवर कहे मुझ नहिं च्हावेजी, 'पर' मतना रखिये गर्व,किसी को नही सतावेजी ।।४।।
हुवा खुश सारा मन मे जी, यह निर्लोभो महाभाग, भलाई भरी सु मन मे जी ।
मिले दुहुँ वाँह पसारी जी, दियो द्वेष सब त्याग, धन्य धन जन कहे जनमे जी ।।५।।
इसा नर विरला जग मे जी,यारे लोभ नही लव-लेश, राग ज्याके रग-रग मे जी ।

अरु नाम बतादो जी, काई खाँप है राज, परीचय हमे जतादो जी ॥६॥
रसिंह नाम हमारो जी, बड-बन्धव के काज, फिरू मैं ढूँढनवारो जी।
पुर नगर रसारो जी, सूरसेण-नृप - नन्द, यही परिचय जनपारो जो ॥७॥

० दोहा ०

कनक-नगर, श्रीपुर-नगर, सला करी दुहू भूप।
निज निज कन्या व्याह हित, निश्चय कियो निरूप ॥१॥
वयरसीहशिर-धुनदियो, बिन मिलियो मुझ वीर।
व्याह करूँ हर्गिज नही, सुनिये श्राप सधोर ॥२॥

ढाल ५२ मी ॥ तर्ज- छोटी मोटी सैयां ए, जाली का मेरा काढ़ना ॥

सुनलो सजनो रे,कर्मो का कैसा हाल है ॥ टेर ॥
एक मिनट मे राजा बनाता, हाँ राजा बनाता दूजे मिनट कंगाल ॥क०॥१॥
ख्याल पडेना इसके खेल की, हाँ इसके०, यह तो थोहर की डाल ॥क०॥२॥
वयरगीसिंह की बातें सुनके, हाँ बाते सुनके, नृपति हो गये निहाल ॥क०॥३॥
राजमहलो मे कुँवर विराजे,हां कुँवर विराजे,मान मिला है बेमिसाल।क०।४॥
चारो तर्फ श्री अमरसीह की, हाँ अमरसीह की,खबर करे अनपार ॥क०॥५॥
एक दिन जावे सेठ साहब के, हाँ सेठ०, सदन मिलन सुकुमार ॥क०॥६॥
घोडा नचाता सदर बाजारो, हाँ सदर०, नम रहै बाल गोपाल ॥क०॥७॥

- ढाल-मूलगी -

मदनमालती वैश्या नामी, निरखि कुँवर को नैन।
कामातुर सा आडी फिरगी, अर्ज करे मृदु-वेन जी ॥श्री०॥१०५॥
राज पधारो मेरे घर पर, सुख - दुख को सव बात।
श्रवण-करी शाता बगशावो, पुण्य प्रभाविक नाथजी ॥श्री०॥१०६॥

घोड़ा सहित आयो गनिका घर , वतलादो क्या काम ।
नयन-घुमाती,मुँह-मुसकातो, वयण वदे अभिरामजो ॥श्री॥१०७॥

ढाल ५३ मी ॥ तर्ज—झल्ला री०॥

प्रेम-पियासो दासो राज तुम्हारी हो , महाराज-कुमार, महा० ।
महर करी ने रग - महल पहुधारो हो रसाल ।
सुर, विद्या धर,किन्नर सूँ रूपाला हो महाराज कुमार, महा० ।
अवला री आ अरज आप स्वीकारो हो , रसाल ॥ १ ॥

वयरीसिह वनिता ने यो फरमाई हो , आगे मत वोल, आगे० ।
मैं अधुना नही मानूँ वात तुम्हारी हो रसाल ।
भाई-सहाव के मिलिया विन नहिं मर्जी हो,म्हारी रति एक, म्हारी० ।
यो कही घेरचो घोड़ा ने ततकारी हो रसाल ॥ २ ॥

इतनो घमंड मत राखो कुँवरसा मन मे हो,थोडी सुणलो वात, थोडी० ।
विन मर्जी एक पैर भरण दूँ नाही हो सुजान ।
चोर, ढोर केइ जीत जोस मे आया हो, मैं नारी जात, मैं नारी० ।
म्हाने जीते इसो कौन वलधारी हो , सुजान ॥ ३ ॥

यो कह कर सा पाणी मत्र छिड़कायो हो,कियो शुक ततकाल, कियो० ।
स्वर्ण पीजर मे डाल दियो मतवाली हो, रसाल ।
दाख, विदामो, चिलगोजा जल साथे हो , सन्मुख पर चूर, सन्मुख० ।
टिरे ढोलिया पासे वो मनुहारी हो , सुजान ॥ ४ ॥

कैसी विटम्वना हुई कुँवरसा सोचे हो, अनहोनी आज, अन० ।
अव जाणो किम होसी हाय हमारो हो रसाल ।
हे प्रभो ! सकट टारो दया विचारी हो, करुणालय आप, करुणा० ।
कांइ सोची व्हेला मनमाहे सरदारो हो सुजान ॥ ५ ॥

— दोहा —

रयण वणावे पुरुष सा, रमन करन घर रंग ।
किन्तु कुँवर नहिं हानरे, आखडि रखै अभग ॥ १ ॥
परवश पोपट रूप में, बोते पच विहान ।
सब सोचे कित गे कुँवर, छायो शोक महान ॥ २ ॥

ढाल ५३ मी ॥ तर्ज– पांच मोहर रोकड़ लेलो० ॥

विलख वदन जोवे सब वाट, दो कन्या दोनो समराट ॥ टेर ॥
होय नाराज गया कित छाने, हाजर थो सेवा मे थाट ॥वि०॥१॥
कोई कुटिल ले गयो विलमाई, या कोई जुलमी घड़ियो घाट ॥वि०॥२॥
इते सेठ जी पिण आ पूछे, गया कुँवरसा कुणसी वाट ॥वि०॥३॥
आप मिलन हित गया कुँवरसा, बारे बजन मे दो-घडि घाट ॥वि०॥४॥
सेठ सोचने इसी प्रकाशी, पुर बाहिर नही जावण चाट ॥वि०॥५॥
पतो लगावो थे रजवाडों, जल्दी भेजो चारण भाट ॥वि०॥६॥
यहाँ की शोध करूँला मैं खुद, वावन चन्दन बने न काठ ॥वि०॥७॥

– ढाल - मूलगी –

सैंघ लगाई सेठजी सरे, सुल सुल आई कान ।
हृय चढ जाता घेरिया सरे, मदना आप मकान जो ॥श्री०॥१०८॥
आगे जाने की खबर नही है, जची सेठ के मन्न ।
एक नारी ने भेज प्रच्छन्न-पन, खबर करन एकन्न जो ॥श्री०॥१०९॥

ढाल ५४ मी ॥ तर्ज–इण सरवरिया री पाल हींडो मैं घालस्यों०॥

नारी सारी वात अगाड़ी वैठने, मोरालाल अगाडी वैठने ।
स-शकित सा होय कही है सेठ ने, मोरालाल कही है सेठ ने ॥

सुन्दर अति शुकराज स्वर्ण पींजर टिरे,मो , विलखानन अनशार कदे आसू झरे ॥१॥
साची जाणे भगवान साखी मन दे रयो,जादूगरनी तेह कु ँवर वश व्है रयो, मो०॥
सेठ कहे सुस्ताव म्होने पिण वेम है,मो०,आछी नही तकरार बुरी या टेम है,मो ।२॥
मार न्हाखे महा नीच पछे कांइ जोर है,मो ,सोच घणो है मोय ठौर कु-ठौर है, मो. ॥
बाईजी रे पास जाय यू ँ केवजो,मो०,कु ँवर विराजे अत्र,मरो मत रेवजो,मो० ॥३॥
नश्चय आसी वेह दिनो री देर है,मो०,ईश कृपाते अहो! उन्हो के खेर है, मो०॥
तेडो नृप-दरबार तेह कोश्या भणी,मो०,ले पिंजर आई तेथ भाखे तद नर-मणी,।४॥
नवलो दिखावो नाच गायनरी लहर मे,मो.,होवे मन खुशियाल सगीत री शहर मे, ।
नाटक के पश्चात पूछियो राजवी,मो०,मदना म्हाने आज उत्तर दे वाजवी, मो ॥५॥
कु ँवर गया किण ठौर थने कुछ ध्यान है,मो ,सा कहे दरियापार के वदोवान है, मो ॥
पोपट आँख करूर करी सुण बातड़ी,मो०,समजी सेणी माय कन्या नृप आंतड़ी, ॥६॥
सीख लही गइ भौन सेठ सुविचारियो,मो., शुक रूपे नृप-लाल ख्याल सव भालियो, ।
अवकर दाव उपाव चौड़े करणो सही,मो ,वैश्या ने तिल-मात भेद देणो नही,मो।७॥

– दोहा –

कोची मालण रहत उत, सहियर मदनारीय ।
पलट रूप प्रच्छन पणे, सेठ गयो रातीय ॥ १ ॥
मदना आई रात-मध , कोचो कहे तव काम ।
वणियो के खालो हुयो — वैठो ही वदनाम ॥ २ ॥

ढाल ५५ मी ॥ तर्ज– सहियों म्हारी, गुरुसा पधारचा ए० ॥

मदना कहे सुण आली !, म्हारी चाल एक नही चाली है ।
मानव मतिवन्तो० ॥ टेर ॥
उसके वीरा को हेज, नही आया हमारी सेज ए ॥ मा० ॥१॥
मैं तो वातो मे बिलमायो, घणो रिझायो,डकरायो ए ॥मा०॥
वो तो हट सू ँ चट नहि होवे, म्हारे साम्हो ही नही जोवे ए ॥मा.॥२॥

अब कांई शला है थारी, उसे राखू या लू मारी ए ।।मा०।।
कोची कहे मत मारो, जो भलो च्हावे थू थांरो ए ।।मा०।।३।।
सेठ घणो बुधवारो, उणरो जाल-पास है खारो ए ।।मा०।।
थने ऐसी फन्दा में वो लेसी, फिर छाने सजा वो देसी ए ।। मा० ।। ४ ।।
मदना तब मुंह मचकोड़ी, कहे कोची तू तो भोली ए ।। मा० ।।
म्हारो बाल बाँको नही करसी, जो जाल कियो तो मरसी ए ।। मा० ।। ५ ।।
जद तू थारी जाणे, थू बात किणी री माने ए ।। मा० ।।
नही मारू, हाल निहालू, मैं तो प्रेम उणी सू पालू ए ।। मा० ।। ६ ।।
तद मदना निज घर चाली, कोची सूती थी निद्राली ए ।। मा० ।।
सेठ प्रात घर आयो, अब पत्तो पूरो पायो ए ।। मा० ।। ७ ।।

० दोहा ०

कोचो सोची पौचगी, प्रात सेठ की पोल ।
आवण रो कारण अठै, कह कोची दिल-खोल ।। १ ।।

ढाल ५६ मी ।। तर्ज–खिदमते धर्म पै जो मरजायेंगे० ।।

सेठ-साहब सुणो हमरी वतियाँ, गमगोन दिखाते हो दिन-रतियाँ ।। टेर ।।
यदि राजा गिने, महाराजा गिने, दुखियो के गले का हार गिने ।
कुण आप समान मिले थितिया ।। सेठ० ।। १ ।।
जो आज किसी के काम अडे, वहा आप विना कसे पार पडे ।
विगडी भी सुधार देवो गतिया ।। सेठ० ।। २ ।।
सूज बूझ है आपकी सर्व सिरे, आये शर्ण डूबे नहिं, शीघ्र तिरे ।
अति स्वच्छ समय पर को मतिया ।। सेठ० ।। ३ ।।
अफशोप मुझे यह आय रहा, उपकारी कुँवर का पता कहा ? ।
हाय ! मेरी तो धडक रही छतिया ।। सेठ० ।। ४ ।।

उसका पता लगाना मुनाशिब है, आप जैसे बुजर्गों को वाजिब है।
कही ऐसा न होवे जो व्है हतिया ।। सेठ० ।। ५ ।।

० दोहा ०

सेठ वदे शारद-हृदय, नहिं अक्षर को ज्ञान।
कुण माने कोची कहो, तुझ से छानो स्थान ।। १ ।।

ढाल ५७ मी ।। तर्ज- मांड० ।।

यह चिन्ता करारी, मेटनवारी, था सम और न एक।
मैं नजर पसारी, शहर मँजारी, इणमे मीन न मेख ।। टेर ।।
एता दिन एला - गया रे छूटा खान ने पान।
पिण कोई नहिं पूछ्यो म्हाने, चतुर थवा नादान हो ।। यह० ।। १ ।।
राजाजी री स्यान सुधारी, मेटचो जनता दुक्ख।
आज कोई रे परवा है नाही, किणसूँ मिलावूँ रुक्ख हो ।। यह० ।। २ ।।
पतो बतावे मो - भणी रे दाखे और उपाय।
तो छोडूँ नही, लावूँ छिन में, दाखूँ सौगन्ध खाय हो ।। यह० ।। ३ ।।
डरूँ नही यमराज सूँ रे, तो दूजा किण ज्ञान।
प्रण ऊपर मैं प्राण बिछावूँ, करले परीक्षा आन हो ।। यह० ।। ४ ।।
महर करी मुझ ठौर बता दे, जहाँ है राजकुमार।
फिर कोशोश करूँला बहिनी!, पक्की दिल मे धार हो ।।यह०।।५।।
एक मास मे जो न मिले तो, जरसूँ अगनी जार।
हृदय सेठरो गद - गद होग्यो, छूटी आंसू धार हो ।।यह०।।६।।
म्हारो मित्र हृदय रो बटको, सटके देगो छेह।
अंतर उनसे है नही रे, एक जीव दो देह हो ।।यह०।।७।।

— ढाल—मूलगी —

कोची कहे कायरता तज दो, थें हो सेठ महान।

मैं तो तुच्छ आपके सन्मुख, अरु ऊमर नादान जी ॥श्री०॥११०॥
माह पधारो बात बतावूँ, सेठ साथ गये चाल ।
कोची कथन करचो युक्ती से, सेठ कान मे डाल जी ॥श्री०॥१११॥
कर तरकीब तीन दिन भीतर, काज कुँवर का सारे ।
नहितर सत्य मानजो सेठो!, विजनस उनको मारे जी ॥श्री०॥११२॥

ढाल ५८ मी ॥ तर्ज—दादरा ॥

बतायदे बतायदे बतायदेनी ए, थोड़ोसोक मारगियो बताय देनी ए ॥टेर॥
जीवनभर उपकार न भूलूँ, योतो पड़ियोड़ो सुजस उठायलेनीए॥थो०॥१॥
एक बचायों सहस्त्र बचेगा, एक दया के ऊपर रहनी ए ॥थो०॥२॥
कोची का दृग अँसुवन भरिया, तत्त्व बात है उरजेनी ए ॥थो०॥३॥
मित्र-द्रोह का डर उर शाले, गुप्त बात मुख से कहेनी ए ॥थो०॥४॥
मतडर, मतडर, मतडर मन मे, न्याय-मार्ग मे तूँ वहनी ए ॥थो०॥५॥

* दोहा *

इणपुर में वैश्या-सदन, खग तन बीच कुमार ।
अकल लगाकर ओलखो, मैं जाऊँ निज द्वार ॥ १ ॥

— कवित्त —

डरे मत सरे आम काम यो करूँगो सारो—
थारो नाम आसी नही पेट माहे जानजे ।
किन्तु तरकीब कोई होय तो बतादे मुझे—
ज्यादा नही लागे देर हिया बीच ठानजे ॥
अछाना उपाय काई आप से है सेठ स्हाब—
इन पुर बारे सारे मिले नही आन जे ।

सेठ सुणी सीख दीनी कौची पौची गेह निज-
सोचे है उपाय सद्य सुधा-रस-पान जे ॥१॥

ढाल ५६ मी ॥ तर्ज- चौक नी० ॥

नर उपकारी दुर्लभ दुनियो-मांय थोडासा जानजो।
ज्यों दरिया में मीठा जल आइठाण हिया में मानजो ॥ टेर ॥
शहर मध्य सभा कीनी, जनता सर्व बुला लीनी।
जब राजाजी आज्ञा दीनी ॥ न० ॥१॥
कोई नही घर में रह जावे, जो रहसी शक्त सजा पावे।
इसडी जो डूंडी पिटवावे ॥ न० ॥२॥
सुण, खलक मुलक आ जुड़ियो है, मानव नहिं पाछो मुड़ियो है।
जित सेठ वचन ऊचारियो है ॥ न० ॥३॥
राजा पै आफत आई है, कल दुश्मन लेगा ढाई है।
एक अकल याद मुझ आई है ॥ न० ॥४॥
रूप बदल कब्जे करले, या जादू सेती हरले।
वो मन इच्छित झोलो भरले ॥ न० ॥५॥
जो शेखो काढ दियो सारा, तो मरणारा चिन्ह म्हांरा।
यह सत्य वचन सुणलो म्हारा ॥ न० ॥६॥
कुंवर प्रथम संकट टारयो, उसको रिपु छांने मारयो।
अब अपणो काम अपो धारयो ॥ न० ॥७॥

- दोहा -

डर वड़ियो दुनियाँ हृदय, किसी वणी करतूत।
जे भाखी ते ना वणे, 'तो' जबर उडे सिर जूत ॥ १ ॥

ढाल ६० मी ॥ तर्ज- चेलों रा भरमाया दर्शन मोड़ा दीना राज० ॥

कठे जावो किने केवो, किसो वरिणयो सूत।
कवरण मेटे आपदा ने, इसो कुंरण मजबूत ॥ १ ॥
म्हारा सारा सुरणो सेरण, राजाजी ने केम बदलो, मानो किरण विध केरण ।।टेर॥
नित नया इत वरणे खिलका, कै कौतुक जोय।
नइ निभै जो राज यासूं, सभला देवे सोय ।।म्हा०॥२॥
ऊने पूछै जिने पूछै, मचगयो घमरोल ।
बोच मे ही बोली मदना, मान मोटो तोल ॥म्हा०॥३॥
रूप बदलूं महीपतिनो, करूँ पहले कौल ।
राज आधो मुझे आपो, चल सकै ना पोल ।।म्हा०॥४॥
सेठ कहे ना फर्क इरण मे, चला माया जाल।
लकुट ले सग सेठ बैठो, काख माये घाल ॥म्हा०॥५॥
पारणी छिडक्यो भूपती पैं, पिरण लकुट के स्पर्श ।
चलो नही चातुर्यता उत, मलिन मुख भो अर्श ।।म्हा.॥६॥
अधो मुख सा रही ऊभी, सेठ खीज्यो खास ।
ढाल है या साठमी रे, कुँवर पुण्य प्रकाश ।।म्हा०॥७॥

* दोहा *

चुटो पकड चौगान मे, घीसी ढोर जिसान ।
बतलादे कुँवर भरणी, प्यारा जो व्है प्रान ॥ १ ॥
इसी रीस सेठो तरणो, कदे न देखी कोय ।
आज अचम्भे हो रही, जनता सारी जोय ॥ २ ॥

ढाल ६१ मी ॥ तर्ज—जगत् गुरू तृसला-नन्दन वीर० ॥

पोपट लीनो खोसने जी, आपुरण कब्जे कीन।

वता-वता झट पापणी जी रे, क्या क्या दुख तस दीन रे ॥१॥
लोगो देखो इणारा रे काम ॥ टेर ॥
महा पुरुषां सूँ ना टली जी रे, औरों री कांई शंक ।
इतनी या मद में भरी जी रे, राज्य माग्यो निशक रे ॥लो०॥२॥
जो लों आ नही हांनरे जी रे, तो लो कोडों री मार ।
बंध करो मत मूलथी जो, देवो राज रो भार रे ॥लो०॥३॥
विद्या सारी विसरगी रे, दण्ड तणे परयोग ।
इज्जत सारी उडगई रे, हँसे सारा ही लोग रे ॥लो०॥४॥
मद छोड़ी मदना कहे रे, भारी हो गई भूल ।
स्वारथ वश मे सेठ जी रे, आ मैं खाई धूल रे ॥लो०॥५॥
सूवा बनाया सांतरा जी, अब नहीं मानव होय ।
कारण, विद्या भूलगी जी, हुई फजीती मोय। रे ॥लो०॥६॥
मो मरवा रो दुख नही जी, दुक्ख कुँवर रो देख ।
पशू पणो कैसे मिटे जी, कुण मारे रेख मे मेख रे ॥लो०॥७॥

* दोहा *

सेठ काढ शुक को तदा, लकुट स्फर्श तन तोन ।
प्रकट कुँवर होग्यो प्रवर, ज्यो रवि प्राची चीन ॥१॥

— ढाल-मूलगी —

लोक सकल राजी हुआ सरे, कुँवर साब ने देख ।
मिला सेठ से स्नेह सूँ सरे, चतुराई को पेख जो ॥श्री०॥११३॥
धन्यवाद है आपको सरे, पूर्ण मित्रता राखो ।
वरना यह सकट था भारी, कहीं न वचना बाकी जो ॥श्री०॥११४॥
मिला भूप आदी सव-जन से, राज-भवन मे आया ।
राज-कन्या ने किया पारणा, आनन्द मगल छाया जो ॥श्री०॥११५॥

ढाल ६२ मी ।। तर्ज–न्यालदे की० ।।

मदना ने श्री वयरसी जी, काँई, फटकारी फफेर ।
ऐसा कृत क्यो कर रही जी, काई, जोवन बीच अंधेर ।।१।।
अब तो सुधारो आतमा जी० ।। टेर ।।
मदनमालती तिण समेजी, काई, कर रही पश्चाताप ।
हाथ जरचा, होला ढुरचा जी,काई, नाहक बँधिया पाप ।।अ०।।२।।
अब दासी छूं रावरी जी, काई, कीजे मर्जी जेम ।
मैं तो पल्लो आपरो जी, काई, झाल्यो पूरण प्रेम ।।अ०।।३।।
इतेक कोची कह उठी जी, काई, सुणजो राजकुमार ।
पुनवानी पोते घणी जी, काई , सहायक पग-पग सार ।।अ०।।४।।
सेठ समारचो काम यो जी, काँई, नातर लगती देर ।
मदना और मैं दो जणी जी,काई, फेर करचो सब स्हेर ।।अ०।।५।।
घमण्ड आप कीजो मती जी, काई, अधिकाधिक जग-माय ।
व्याह तीनो कर लीजिये जी,कांई, दुविधा सहु मिटजाय ।।अ०।।६।।
शोध करो बड-भ्रातनी जी, कांई, मिलजासी निश्चिन्त ।
'मिश्री' बासठ ढाल मे जी काई , कोची समय सधन्त ।।अ०।।७।।

* दोहा *

मदना अरु नृप कन्यका , कोची को प्रस्ताव ।
स्वीकृत करावण कुँवर से, विनती कीध सताब ।।१।।
ध्यान कुँवर दीधो नही , सीधो कह्यो सटाक ।
कोड करो मानूँ नही , मेरा प्रण है पाक ।।२।।

ढाल ६३ मी ।। तर्ज– गांधण जी री० ।।

कोची कहे ताणो मती हो,हठ भीना,नही ताणन मे सार,सुणो रसभीना हो,कुँवरजी ।

जो इसड़ो हठ झेलियो हो ,कुँवरजी,रहसो अखंड कँवार,सार मैं दाखूँ हो, कुँ० ॥१॥
शार्ङ्ग-भूप री डोकरो हो,कुँवरजी, सात कोटसमांय, उसे कोई तोड़े हो, वलधारी ।
वा परणीजे उण भणीहो,कुँवरजी,हाल परणिया नाय,फेरकांइ आशाहो,वर-वारो।२।
रूप रती, मति गोष्पति हो,कुँ०, गति मानो गजराज, अति गुनवारी हो, दातारी ।
सतो,क्षति काचित नही हो,कुँ.,छति छोणी सिरताज,कलावती प्यारी हो,ज्ञातारी ।३।
पद्मसेणा री लाडली हो,कुँ०, नियम लियो है धार, भूप केई भटके हो जावाने ।
पिण जाणो दुष्कर घणो हो कुँ ,विन मुख हो नर सार, रात-दिन रटके हो,खावाने ।४।
जो गुण,कला पुनि विज्ञता हो,कुँ.,सुण गया उत जो दोर,लौट नहीआया हो,निज भवने
वा आंटी छोरे नही हो, कुँ , मिले न इसड़ो जोड,हो गया काया हो, सुन-सुन ने ॥५॥

* दोहा *

वीर वाकुरो वयण सुण, ततछिन हुयगो त्यार ।
किसी शार्ङ्ग गी है सुता, नयनों लेउ निहार ॥ १ ॥
कोची कहदे कोटडा , किसा किसा है तेथ ।
किता कोश, मारग किसो , वही वणावूँ वेत ॥ २ ॥

ढाल ६४ मीं ॥ तर्ज– पहलो तो पासो रायवर ढालिये० ॥

कहना पर क्यो कर कम्मर बाँधली, पहली वीती कांइ गया भूल ।
इतरी उतावल नही है कामरी , सोचो हिरदा सूँ कारण मूल ॥ १ ॥
सुगणा स-सनेही, शार्ङ्ग-सुता ने देखण दोहली ॥ टेर ॥
कोश ढाई से शारँगपुर वसै, देश अनोखो घणो विशाल ।
राजा रढ़ियालो शार्ङ्ग देव है, कोट भयकर सात सभाल ॥ सु० ॥ २ ॥
वृश्चिक,अहि,अगनि, गज पुनि सीह है, वज्र कांटा ने राक्षस-सात ।
सज्जन ने शाताकारी सर्वदा, दुश्मन एक पग भी नही भरात सुं०॥ ३ ॥
राजा आंटीलो, सुभट सूरमा, वावन तुगा है सैन्य सधीर ।

इतरो दुख देखे कन्या कारणे, जिणरे वश होवे बावन वीर ॥सु०॥ ४ ॥
आशा अणूती जे नर धारले, म्हारा घर समजो समुंदा-पार ।
इणसूं विराजो सुखसूं राजवी, सारा सेवा में है सरदार ॥सु०॥ ५ ॥
वारे अब मतना प्रथम छेडने, कलावती रो कौतुक काय ।
पूरी तरह सूं मैं सभाल सूं, डरिया रड़वड़िया जग के माय ॥सु०। ६ ॥
राजा दोनों ने म्हारी कन्यका, फेरूं सेठो ने वो समझाय ।
चाल्यो वयरसी 'मिश्री मुनि' भणे, बुद्धि,बल तीजो तन उत्साह ।सु०॥७॥

– ढाल–मूलगी –

विजय-दण्ड ने उडन-खटोला, पावड़ियो, कथाय ।
सेठ-सहाव से तुरत मगाई , साथे ली सुखदाय जी ।।श्री०॥११६॥
रैवत पै चढियो रढियालो, सब से मिलकर जाय ।
शुकन हुवा है सव मनच्हाया, हृदय हिलोरा खाय जी ।।श्री०११७॥
भोजन, धन वा कथा पूरे, घणा विलोके स्थान ।
रात-वसेरो लेवे लाडलो, पर्वत, सर, उद्यान जी ॥श्री०॥११८॥

० दोहा ०

प्रचुर भाग्य तने प्रबलता , माधन सखरो सर ।
सुकरत सचित जेहने , तेहने मिले उतंग ॥ १ ॥
माणिकपुर रा वाग में , ठहरयो देखी ठाठ ।
दिन ऊगो नर दौडतो, आयो करें भरड़ाट ॥ २ ॥

ढाल ६५ मी ॥ तर्ज– नर-भव निकमो गमाय दियो रे० ॥

रोवतडा ने देख पूछै इतरो रोवे काई,अरे मुझे तो आप बचाओ,मारडालेगा यांही ।
पकडण वाला म्हारे लारे आयरया रे ॥ १ ॥
सहायक हमारा कोई नही रया रे, भाग्य भी हमारा दगा देय गया रे ।।टेर॥

इतने मे तो कोतवाल फौजी लोक साथे, आया हल्लो करता पकडो कही भाग जाते।
थर-थर धूजे तन काँप रया रे ॥ स० ॥ २ ॥
कुँवर फिरयो है आडो, ठैर जावो भाई, शर्णे हमारे आयो, मार सकते नांही ।
बतादो नुक्शान थांरे कांई हुया रे ॥ स० ॥ ३ ॥
कोटवाल कहे, आज्ञा मारवारी चौड़े, राजाजी रो गुन्हेगार इणने कौन छोड़े।
शरणागत री शान राखे वे तो मूया रे ॥स०॥४॥
शरणो लियो रे बाद उणने मार लेसी, थेंही तो बतावो पछे क्षत्री केने कैसी ।
शर्णागत राखे ज्यांरा पथ जुया रे ॥ स० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

कोटवाल करड़ो अखै, कौन छुरावे छेक ।
पाण कितो है पेखलो, पास बिठाकर देख ॥१॥

ढाल ६६ मी ॥ तर्ज–राजा रे राघव राय कहावे० ॥

एलो परखलो पौरुष प्यारा, यह अपराधी तुम्हारा रे ।
मेरे पास से कौन छुरावे, धड सिर करदूं न्यारा रे ॥ १ ॥
मन मे मत राखीजो मर्दो !, यो पड़ियो मैदानो रे ।
पाछा पग थे मतना धरजो, रंग जुड़ियो घमसानो रे ॥टेर॥
अपराधी ने पकड़ण सारू, वे पावडा भरिया रे ।
कर पग शाही कुवर घुमाई, फेंक्या इत उत पडिया रे ॥म०॥२।
अश्व दौड़ाई, नृप पै जाई, सारी वात सुनाई रे ।
राय रिसाई, फौजो सजाई, आया कर अकड़ाई रे ॥ म० ॥ ३ ॥
धसमस ऊठ्यो कुंवर रूठ्यो, तूठ्यो ज्यो वर्षालो रे ।
चमू चहू दिश मांय विखेरी, वांद्यो नृप मूंछालो रे ॥म०॥४॥
कोनो शाको हुयग्यो हाको, काकी जायो करड़ो रे ।

एकलडो जीत्या सारो ने, कर देशी श्रो परडो रे ॥ म० ॥५॥
हाथ जोड ने पावों पडिया, बन्धन नृपना टरिया रे ।
इण पापी ने केम बचायो, जुलम घणा इण करिया रे ॥ म० ॥६॥
सत्य सुनादो काई कियो है, जिणसूं मालुम होवे रे ।
बिन निर्णय कर देना दण्डित, न्याय नोति पथ खोवे रे ॥ म० ॥७॥

० दोहा ०

राज्य-सुता अपहरण-हित, रचियो पापी जाल ।
याते मृत्यु - दण्ड मैं, दीना इसे दयाल ॥ १ ॥
उससे पूछा निकट ले, सत्य सुना मो बात ।
सो भाखे अब आदि से, कहूं जोड़ि दुहुं हाथ ॥ २ ॥

ढाल ६७ मी ॥ तर्ज—मनवा समझले रे वीर० ॥

श्रीपुर को मैं रहवन-वारो, श्रीधर सेठों-वारो ।
महिधर नाम माल ले आयो, सेठ-साहब रो शालो ॥ १ ॥
वीती बात सुनाऊँ जी क, वीती बात सुनाऊँ जी ।
जो झूठी हो जाय, मृत्यु को दड मैं पाऊँ जी ॥ टेर ॥
विणज बढ़ायो, खूब कमायो, दिवाण-सुत वियो साथी ।
कोतवाल ने नही सुहाई, जाल खेलियो घाती ॥ वी० ॥२॥
एक दिन म्हारे घर पर आयो, वातो इसड़ी भाखी ।
छोड़ मित्रता दिवाण - सुत थी, रखणी च्हावे नाकी ॥ वी० ॥३॥
मैं तो सुणी अणसुणी करके, उत्तर टुक नहिं आल्यो ।
लाल आँख, भृकुटी कर बाको, पाछो मारग झाल्यो ॥ वी० ॥४॥
चार दिनान्तर मुझ घर चोरी, जबरजस्त करवाई ।
माल सघाते मुझ वनिता को, ढोल्या सहित उचकाई ॥ वी० ॥५॥

प्रातः काल यो हाल देखने, गाढो मन घबरायो।
इतेक कोटवाल आ पकड़्यो, – मुझे जेल पधरायो ।। वी० ।।६।।
नाना-विधसूँ मने मारियो, झूठ कहलावण ताईं।
दिवाण-सुत नृप-कन्या लिजासी, नृपने दे बतलाई ।। वी० ।।७।।
मैं कयो, तूँ बरबाद कियो मुझ, फिर भी झूठ कहावे।
इणसूँ तो मरणो है आछो, यह अन्याय न थाने ।। वी० ।।८।।
जद यो चक्कर डाल मेरे पै, हाजर नृप पै कीनो।
विन निर्णय मुझको मारण हित, हुक्म राजाजी दीनो ।। वी० ।।९।।

– चन्द्रायणा –

मारण को महाराज! मुझे ले चालिया,
हीन दीन दुख क्लीन फेरु उर वालिया।
पुर के बाहर आत मोखो कर-लागियो,
आयो आपके शरण उन्होसू भागियो ।। १ ।।

० दोहा ०

राज-सुता रो माल पुनि, आभूषण अनमोल।
कोटवाल रे घर अछै, चौकस करो स-तोल ।। १ ।।
अश्विन-शुक्ला सप्तमी, रात उसे उचकाय।
ले जासो यो पत्र है, वांचलीजिये राय! ।। २ ।।

ढाल ६८ मी ।। तर्ज– डोरी तो लागी रे रसिया करतले० ।।

भाखे वयरसी, नरपति! साँभलो, यो थाँरोडो न्याय हो, सौभागी।
माया माणे रे चौड़े चोरटा, भला मरे बिन आय हो, सौभागी ।।१।।
न्याय करोनी आँखो खोलने, सुधरे सारो ढंग हो, सौभागी ।। टेर ।।
कोटवाल ने कब्जे कर तदा, घर-समालो लीध हो, सौभागी।

माल बरामद सारो हो-गयो, अब पूछे परसीध हो, सौ० ॥२॥
दाखो, तलवर आभूषण अठै, लाया कुण से काम हो, सौ० ॥
काई मनसा थारी वर्तती, पत्र दियो किण हाम हो, सौ० ॥३॥
महिधर मारण किम थे माडियो, कांई तुम्हारे वैर हो, सौ० ॥
वनिता इणरी माल चोरयो तिको, ला सौंपो बिन देर हो,सौ०॥४॥
नहीतर कुत्तों-साथ कटावसूं, जीवत देसूं जराय हो, सौ० ।
चमड़ी सारी सुणले नोचसूं, पोल चलेगी नांय हो, सौ० ॥५॥
जाल तिहारो जाहिर कर सभी, फिर मरसी बिन मौत हो,सौ०।
नहीतर सत्य हकीकत दाखवो, काइक होसी घौत हो, सौ० ॥६॥
कोटवाल तो साफ बूबोचगो, उत्तर आपे काय हो, सौ० ।
ढाल आठ ने होगइ साठमी, दगा सगा किम थाय हो, सौ० ॥७॥

— ढाल - मूलगी —

परिषद और प्रजापतीस रे, बड़ा - बडा सरदार ।
लियो अचम्भो आकरो सरे, दे उणने धिक्कार जी ॥ श्रो०॥ १२० ॥
ले-हंटर राजाजी ऊठ्या, वयरसीह तिणवेर ।
कहे विराजो आप जरासा, पछे पूछजो खेर जी ॥ श्रो० ॥ १२१ ॥
पकड़ हाथ ले-गया कुंवर जी, कोटवाल ने साथ ।
वनिता माल बतायो सारो, पग-पकड्या दो-हाथ जी ॥ श्रो० ॥ १२२ ॥

— दोहा —

गुप्त-बात दाखूं प्रभो!, कन्या को मो-सग ।
मतो पको ही हो गयो, दोनों रो इक-रग ॥ १ ॥
खास पत्र भेज्यो उसे,लियो सचिव-सुत बीच ।
भूप भिडासी इण-मुदे, कियो काम मैं नीच ॥२॥

ढाल ६९ मी ॥ तर्ज– कायथड़ा री० ॥

हाँरे कुँवरसा! इसडा कर्म कमाविया, हाँरे कुँवरसा! निज स्वारथ रे काज।
आज सारी पोल उघड गइ पाप सूँ, अब माफी माँगूँ आपसूँ ॥ टेर ॥
हांरे, कुँवरसा! आज पछै करसूं नही, हांरे, कुंवरसा! रखसूं कुलरी लाज।
अब छोडो जाणी दास गुलाम जो, अमर बनाओ नाम जो ॥ १ ॥
हांरे, कुंवरसा! पामरसूं पामर घणो, हाँरे कुंवरसा! मैं न रख्यो मानव पणो।
सारी अरज सुणायदी, मैं जल मे आग लगायदी ॥
हाँरेक, कुंवर अभयदान दीनो मुदा, हाँरेक राजा अति खुश हुवो है तदा।
जनता मे जस छावियो, गुणिजन रो गुण-गावियो ॥ २ ॥
हाँरेक, उणरो वनिता, माल दिरावियो, हाँरेक, सारो कालो कलक मिटावियो।
उत्तमता रो रूप है, यो करुणा रो भूप है।
हाँरेक, कुंवर! सेठ-साहव रो मित्र हूं, हाँरेक मो पै सेठों रो उपकार।
घर जावो कह दीजो सव वारता, रखो धर्म री आसथा ॥ ३ ॥
हाँरेक, उठासूं आगे जावण भाखियो, हाँरे सारा ही रोक रया नर नार।
काम करड़ो शार्ङ्ग-देव नृपाल रो, छोड़ो यो पंपाल रो।
हाँरेक, मैं तो एकवार जावसूँ, हाँरेक, मैं तो अपणा भाग्य अजमावसूं।
थे म्हारो जरा सोच कीजो मतो, मोने तो डर नही है रती ॥ ४ ॥
हाँरेक, राजा कहे कन्या परणीजिये, हाँरेक, म्हारी विनती या मानीजिये।
हाल ठहरो, पाछो आऊँ जब लगे, देखणदो विषमो जगे ॥
हाँरेक, कैसो राजा वो वलधारो, हाँरे सात कोटो री दृढ़ता री।
मालुम थांने हो जासी, आयां दीजो स्यावासी ॥ ५ ॥

– दोहा –

घारन वक्तर टोप करि, धरी सकल सिरपाव।
भुरती जनता छोड़ के, चट चाल्यो चित चाव ॥ १ ॥

ढाल ७० मी ॥ तर्ज—नमूँ अनन्त चौवीसी० ॥

साहस उर भरियो वयरसीह पुनशाली, मन मोद लहतो वाट घाट रयो भाली ।
कै वासर वहतों आयो शैल उतग, है झाड़ी उगी चढ्यो ऊपर हर रग
रमणीक स्थान है,जलसूँ भरया निवाण, वृच्छ नाना भाँती औषध रूप महान ।
कर स्नान सुधोदक रस-पूरित फलाहार,कर सूतो तरु तल चरवा लग्यो तोखार ।२॥

एक खगचर-राजा आयो खेलन हेत ।
कुँवर ने सूतो देख्यो नयन उपेत ॥
पूछै कित रहवो कित आवण उद्देश ।
कुँवरजी दाखे कुणछो आप नरेश ॥३॥

मैं ज्योतिष पुरवर निवसूँ गिरि वैताढ, इत खेलन आयो राणी संग धर गाढ ।
विस्मित भो देखी तुम्हे आज इण ठौर,जिणसूँ पूछयो मैं आवण कारण सीर ।४॥
शाङ्ग-नृप वलनो माप करण के काज, आयो छूँ अवनिप सज्यो सजायो साज ।
विद्याधर भाखे, विगर विचार्यो काम, क्यो हाथे लीनो हो जासो बदनाम ॥५॥
वो प्रबल वली है, सात कोट की ओट, है स्वेच्छाचारी कर न सकै रिपु चोट ।
हम विद्याधर हैं, तो भी माने शक, जो कियो सामनो छोडया करने रंक ।।६॥
बनडी रा वनड़ा वणवा आप उमाया, म्हाने नही भाषै भूल करी ने आया ।
यह ढाल सितरमी,कहे 'मिश्रो' अणगार, जो साहस राखै, ताको कौन विचार ।७॥

० दोहा ०

हँसकर दाखे वयरसो, हे विद्याधर - राज !
भली बात भगवन्! भणो, हो क्षत्रिय-सरताज ॥१॥
मदत न देवो मूलथी, करो कायर मो सेण ।
जची नहीं म्हारे जिगर, वरणो इसडा वेण ॥२॥

ढाल ७१ मी ॥ तर्ज—म्हांने मुगतपुरी रो मारगियो बताय दीजो रे० ॥

म्हाने शाङ्ग-गड मे जावारो उपाय बताय दोनी रे ।

उपाय बताई सुगणा थे तो यो जस लोनी रे ॥ टेर ॥
घणी दूर से चल कर आयो, गढ़ देखण ऊमायो रे ।
जणां-जणा भय खूब बतायो,तो भी नहीं घबरायो रे ॥
होवेला जो भी होनी रे ।।म्हा० ॥१॥
इण भूमी रा आप भोमीया, जाणो जुगती सारी रे।
किण दिन काम आवोला केदो, सूज बूझ व्है थांरी रे ॥
बीज भलपन रा बोनी रे ॥ म्हा० ॥२॥
विना गयो पाछो नहिं जावूं, आयो दृढता धारी रे ।
दूजी बातों छोड़ दिरावो, हिम्मत बँधावो भारी रे ॥
काम दूजारो कोनी रे ॥ म्हा० ॥३॥
विद्याधर सुनकर कुँवर री, दिवी पूठ फटकारी रे ।
हो हिम्मत रा सागर जबरा, मैं जावूं बलिहारी रे ॥
वीर, नही सूरत रोनी रे॥ म्हा० ॥४॥
एक उपाव बतावूं थाने, करलो कर हुँशियारी रे ।
विजय नगर रो विजय सेण नृप, रति रंभा पटनारी रे ॥
कन्या तस विद्या-वोनो रे ॥ म्हा० ॥५॥
शार्ङ्ग-गढ रे राज-सुता री, सा साथिन बचपन री रे ।
उणने जो वशवर्ती करलो, बनसी काम मजारो रे ।
वा भी जाहिर नाहर-नारी, उणरो काम निरारो रे ॥
सरल नही मानो मोनी रे ।। म्हा० । ६॥
कर मुजरो, मग पूछ कुँवरजी, आगे सटके हाल्यो रे ।
अश्व नचातो निडर विद्याधर, नोके नयन निहाल्यो रे ॥
'मिश्री' सम लहरो सो-नी रे ।।म्हा०॥७॥

– ढाल - मूलगी –

निकट विजयपुर निरखियो सरे, सरिता भरी सनीर ।

दोनों तट उद्यान अनूपम, हरिया तरू अमीर जी ॥ श्री० ॥१२३॥
रस भरिया स्त्री, पुरुष अनेको, मारग शोभ बढावे ।
तरुण चढयो तोखार तेजस्वी, देखी ने बतलावे जी ॥श्री०॥१२४॥
कांई नाम अरु आया कठांसू, कठे जावणरी चाह ।
आयो पूर्व सू जाणो शार्ङ्ग-गढ,आज ठहरसू यांह जी ॥श्री ॥१२५॥

ढाल ७२ मी ॥ तर्ज– रे जाया ! तुझ बिन घड़ी रे छमास० ॥

ण रे घरे पधारसोजी रे, कहोतो देवो बताय ।
या ठहरो धर्मशाल मे जी, सो साम्हे रही दिखाय ॥१॥
विदेशी रे भाखो मनरा रे भाव ॥टेर॥
कुंवर कहे पथी-भणीजी रे, कुंण राखे घर माय ।
धर्मशाला सब से शिरे जी, हरको घरको नाय ॥वि०॥२॥
वहाँ से वयरोसिंह जो रे, धर्मशाल पौचन्त ।
अधिकारी पर-जापतोजी रे, ठहरन हित पूछन्त ॥वि०॥३॥
सुखे विराजो व्हावसू जी रे, जो भी सेवा होय ।
शका तजकर भाखजो'जी रे, काम हो जासी सोय ॥वि०॥४॥
मुहरो दी तस हाथमे जी रे, भोजन देवो बनाय ।
जीम्यो पाछे और भी रे, देसू काम बताय ॥वि०॥५॥

* दोहा *

कुम्भारी त्यारो करी, भोजन दियो जिमाय ।
इतं नफर कन्या - तणा, आकर-दोध सुणायं ॥ १ ॥
सुणो विदेशी वातडी, बिन आज्ञा पुर माय ।
आया सो अपराध है, चलो बाई बुलवाय ॥ २ ॥

ढाल ७३ मी ॥ तर्ज– आ कांई धून्धी आई रे० ॥

यह कैसा कानून, पूछ कर यहाँ आना ।

नहीं मानव का धर्म, पथिक को संताना ॥ टेर ॥
तो भी चलो हमे डर नाही, सत्य बात कह देंगे म्हाही ।
आया भृत्य के साथ, पूछा क्यो बुलवाना ॥ यह० ॥ १ ॥
जोश-भरी कन्या कहे वाणी, बिन पूछे आये क्या ठानी ।
शक्त किया अपराध, सजा का है पाना ॥ यह० ॥ २ ॥
वयरिसीह उत्तर जब वाला, यह कानून सुना है निराला ।
कही नही है रोक, जाते हैं मनमाना ॥ यह० ॥ ३ ॥
करी भूल यहाँ आ निकले हैं, नहि मानवता की सिकले हैं ।
सजा करन की वात जिगर मे मत लाना ॥ यह० ॥ ४ ॥
गीदड घुरकी को सुनकर के, जो हम लोग हृदय में थर के ।
फिर क्या क्षत्रिय जात जन्म ले लजवाना ॥ यह० ॥ ५ ॥
मन की हूंस निकालो सारी , कौन सजा देनी दिलधारी ।
दे देना दिलखोल पाहुना मनमाना ॥ यह० ॥ ६ ॥
फिर कौशीश करेगे हम भी , देख लेवेंगे शक्ती तुमकी ।
यह 'मिश्री' का मेवा शोख से खा जाना ॥ यह० ॥ ७ ॥

* दोहा *

विजयसिंह-नृप-बालिका, कडक बोलि युत क्रोध ।
शक्ती हमगी शोध ले, जग जन्म्यो कुण जोध ॥ १ ॥
अयि सुभटो ! सामान अस, वेखटके लो खोस ।
कड़ी डाल कारागृहे , डालो तज अफशोष ॥ २ ॥

ढाल ७४ मी ॥ तर्ज— जय बोलो महावीर स्वामी की० ॥

जय राज-सुता जय हो तेरी, करे आज्ञा-पालन विन-देरी ॥टेर॥
भट ऊठ कुँवर पै आया है, झट बाँह पकड सुनवाया है ।

अब चलो जेल मे इस वेरी ।। जय० ।। १ ।।
प्रथम सामान हमे दे दो, कुँवर कहे क्या इत वेदो ।
हटजावो अगर च्हाते खेरी ।। जय० ।। २ ।।
यो कहकर झटका इक मारा, गिरपडे सुभट वहाँ थे सारा ।
मानो जीर्ण भीत की व्है ढेरी ।। जय० ।। ३ ।।
कन्या ने विगुल बजाई है, सेना को शीघ्र बुलाई है ।
राजा सुन सोचा क्या एरी ।। जय० ।। ४ ।।
आकर के दृश्य निहारा है, नृप सुता से जाना सारा है ।
यह कौन कुँवर ऐसा गैरी ।। जय० ।। ५ ।।
नृप कुँवर को ललकारा है, क्या उद्देश्य तुम्हारा है ।
घर आकर राड तुम्हे छेरी ।। जय० ।। ६ ।।
नही आया, मुझे तो बुलाया है, मुझे जेल का हुकम सुनाया है ।
है कन्या आपकी अति बेड़ी ।। जय० ।। ७ ।।

— कवित्त —

घू मे हैं अनेको पुर वाट घाट पाड़ झाड़,–
आश्रम रू ग्राम नग्र सन्नी वेष झिले हैं ।
मिले हैं भले रे भूप शाह सुलतान केई–
गढ कोट खाडी लघी नामी ग्रामी किल्ले हैं ।।
महात्मा रु दुरात्मा भी ठौर ठौर चोर डाकू–
पण्डित गुणज्ञ संत कलाकार छिले हैं ।
किन्तु पूछ आवो हम पुर मे पथिक सारे–
अन्यथा पाओगे सजा ऐसे यही मिले हैं ।।१।।

— दोहा —

शस्त्र धरावे हाथ से, होकर नारी जात ।

जिसका मजा चखायदूँ, निपट तुम्हे नरनाथ ।। १ ।।

ढाल ७५ मी ।। तर्ज—जोगी से पास फरमाते, धुनी में नाग काला है० ।।

मिलें बिल बिल तुम्हें मूषा, कहीं तो नाग काला है।
पता नहिं आंजलो पाया, ऐसा अभिमान आला है ।। टेर ।।
किसी के चलते मारग में, अगर कोई डगर ला डाले।
भला क्या ? कहेगें उसको, अकल के दिया ताला है ।।मि०।।१।।
आँख का देख के पानी, विजय नृप ने विचारा है।
इसे करें कब्ज में कैसे, ढंग दिखता निराला है । मि०।।२।।
प्रथम विश्वास देकर कें, फजीती इसकी करनी है।
सभा में चलो, नृप भाखे, समझगे कुँवर चाला है ।।मि०।।३।।
कन्या को वयरसी वेगी, ले चला पकड नृप देखे।
कुँवर कहे छुडाले राजा, अगर तू आन - वाला है ।।मि०।।४।।
खडाऊ पहनते घोडा, अधर आकाश मे दौड़े।
देखते रह गये सारे, अरे किस मा का लाला है ।।मि०।।५।।

— ढाल - मूलगी —

पाँच कोश पै एक सरोवर, रोक वहा पै घोड़ा।
कन्या से कुँवर यो पूछा, कहो वाला हो सोरा जी ।।श्री०।।१२६।।
और तेरे से कुछ नही लेना, नही वैर की वात।
शार्ङ्गगढ जावारो मारग, वतलादो हम म्हात जी ।।श्री०।।१२७।।
पहले मुझको आप छोड दो, सच्ची राह वतावूँ।
अभरोसो मत आणो मनमे, अव ना कपट रचावूँ जी ।।श्री०।।१२८।।

* दोहा *

मान हांन कर ज्हांन मे, मर्द लियो मैदान।

कहा करूं पहली मुझे, पडी नही पैछान ॥ १ ॥

ढाल ७६ मी ॥ तर्ज— म्हारो पियू ब्रह्मचारी० ॥

बात हमारी है गुनकारी, मैं अर्ज करूं इणवारी रे ॥ है सहायक सारी ॥
करदो अब मुझे मुक्त मुरारी, है तव बल की बलिहारी रे ॥ है० ॥१॥
वयरसी छोरि वेणी तिणवारी, खुश हो कहे सा नारी रे ॥है०॥
शार्ङ्गगढ की राजदुलारी, मम साथण है सुखकारी रे ॥ है० ॥ २ ॥
समजायस मैं करसूं धारी, आगे मर्जि उणारी रे ॥ है० ॥
सप्त कोट तोडण भयकारी, विन तोड़चो लगे नहिं कारी रे ॥है०॥ ३ ॥
कुंवर कहे चिन्ता न लिगारी, क्या सप्त तोडूंगो हजारी रे ॥है०॥
परणन की परवाह न ज्हारो, मद-भजन मनशा म्हारी रे ॥है०॥ ४ ॥
फिर मिलजो थें समय विचारी, कहदीजो रहे जो त्यारी रे ॥है०॥
ढाल छियतरमी रसवारी, कहे 'मिश्री' अणगारी रे ॥ है० ॥ ५ ॥

— दोहा —

बाला उड गइ तिण समै, शार्ङ्गगढ सखि धाम ।
वात कथी बीती जिसी, आयो नर अभिराम ॥ १ ॥
निर्भय भट नीतिज्ञ अति, विद्या बुद्धि अपार ।
मैं छेड्यो, तस्ती मिली, अब इत आवणहार ॥ २ ॥

ढाल ७७ मी ॥ तर्ज— नवीन रसिया० ॥

मुझको क्या डरपावे बहिनी !, मैं नही डरने वाली हूँ ॥टेर॥
सप्त कोट की ओट ऊपरे, चोट करण वालो ।
इसो नही निरख्यो नयनो सूं, जग जननी - लालो ॥ मु० ॥ १ ॥
सा कहे जो नहिं निरख्यो व्है तो, मोरे सग चालो ।
किसो शेर सुलतान मगन निज धुन मे मतवालो ॥ मु० ॥ २ ॥

कर-ग्रही बैठ विमान चली संग, परख्यो वे घालो ।
चंचल अश्व नचातो चाले, भल के कर भालो ॥ मु० ॥ ३ ॥
प्रथम कोट ढिग कुँवर पहुँचगो, वहै वृश्चिक वालो ।
पचरंगा पंखाला पनड़ी, डक जहर खालो ॥ मु० ॥ ४ ॥
अश्वपदाहट से भीभरिया, ज्यो मक्खी - मालो ।
चारोंकानी टिड्डो दल वत, देवे ऊछालो ॥ मु० ॥ ५ ॥
हय रु कुँवर के सभी वदन पर, जमगये ज्यो जालो ।
कुँवर कंथा से वृश्चिक - खानो, डाल्यो भर डालो ॥ मु० ॥ ६ ॥
सौरभ से भये मस्त समस्त ही, पियो प्रेम प्यालो ।
सितंतरमी ढाल 'मिश्री' कहे, पुण्य है रुखवालो ॥ मु० ॥ ७ ॥

– ढाल–मूलगी –

आगे वढियो है रढियालो, द्वितीय कोट आयो ।
पन्नग महा भयकर व्हाने, सुन्दर पय ही पायो जी ॥श्री०॥ १२९ ॥
सिह कोट तीजो है तीखो, विजय दण्ड थी सायो ।
अवल हुवा सारा ही रक्षक, वा कन्या लखवायो जी ॥श्री०॥१३०॥

– दोहा –

सात कोट तोडया सवल, शार्ङ्ग गढ के पास ।
पहुँचगयो पुण्यातमा, खामी रही न खास ॥ १ ॥
दोनो वाला दौरगी, तात पास ततखेव ।
अश्वारोही आवियो, दिव्य रूप ज्यो देव ॥ २ ॥

ढाल ७८ मी ॥ तर्ज– जीव रे तूँ शील तणो कर संग०॥

कुँवर वाग मे आवियो जी, वसियो नृप आवास

वन.रक्षक तस देखने जी, दिल में रया विमास ॥१॥
रे देखो कैसो नर बड़ वीर, डरपै नही डरपावियो जी, धीर वीर गभीर ॥टेर॥
नरपति ने कहलावियो रे, शक्ति, भक्ति, यह दोय।
दिल च्हावे सो धारलो रे, आण मनासूं तोय ॥ रे० ॥ २ ॥
बागवान नरनाथ ने रे, संभलावी सा वात।
मन खीज्यो, रीझयो नही रे, कैसी करी उत्पात ॥ रे० ॥ ३ ॥
आज तलक धारयो नही रे, पीडयो में घणी कोय।
यो कालो म्हारे लगे रे, स्यूं करवो अब मोय ॥ रे० ॥ ४ ॥
सरदार मुसद्दी एकठा रे, करके सल्ला कीध।
एकलडो अनमी घणो रे, कला कौशल प्रसिद्ध ॥ रे० ॥ ५ ॥
बाईजो परणायदो रे, अपणायत करवाय।
ठाकर रा ठाकर रहो रे, आज्ञा नाहि मनाय ॥ रे० ॥ ६ ॥
मतो विचारी महिपती रे, बाला से कह्यो बोल।
ब्याह रचावूं थांयरो रे पूरण होग्यो कौल ॥ रे० ॥ ७ ॥

* दोहा *

पाणी सूं व्हे पातला, सादी मे क्या सार।
एक वार तो उण भणी, दिखलादूं बल-पार ॥ १ ॥

ढाल ७९ मी ॥ तर्ज– लियो है सांवरिया ने मोल० ॥

लीनो हिया में धार, पिताजी लीनो हिया मे धार ॥ टेर ॥
है पति प्यारो, जीवन सहारो, इण भव मे भरतार ॥ ली० ॥१॥
विण कुछ करके फिर मैं परणूं तो इज्जत रहे अणपार ॥ली०॥२॥
भाग्य भरोसे व्हे अगवानी, छल वल कल कर सार ॥ ली० ॥३॥
मौन लिवी महाराजा, तो भी, चिन्तित चित की चाल ॥ली०॥४॥

ये दोनो निज रूप फेरियो, पहुंची बाग मझार ॥ली०॥५॥
दोनों किमान करे यो बाते, एक आयो सरदार ॥ली०॥६॥
राजाजी रा छक्का छुडाया, तोडया कोट किवाड़ ॥ली०॥७॥

० दोहा ०

वे केड़ा है आदमी, कठै ठहरिया आज ।
मनड़ो च्हावे मिलणकूं, किसडो तास मिजाज ॥१॥

ढाल ८० मी ॥ तर्ज—संतो ! ऐमी दुनियां भोली, संतों ! ऐसी दुनियां भोली ।

घरम करंता लाज मरे ने, परगट खेले होली ॥ संतों० ॥
कपट नर निर्बल करता है, कपट नर निर्बल करता है ।
सरल पुरुष पुनवान होत, वह निडर विचरता है ॥ टेर ॥
वातो सुणता कुंवर बोलियो, काई देखण जावो ।
मिनखो जैसो वो ही मिनख है, व्यर्थ अचभो लावो ॥ क० ॥ १ ॥
कहे किसान विसान मानवी, धरती ऊपर थोड़ा ।
सप्त कोट तोड़ी राजा ने, देवे पूरण फोड़ा ॥ क० ॥ २ ॥
म्हारा राजा आज तलक तो, आज्ञा निज वर्ताई ।
पिण दूजारी आज्ञा मे वे, हर्गिज चाल्या नाही ॥ क० ॥ ३ ॥
अव तो व्याह करणो ही पड़सी, माथा उपरला आया ।
इता दिनो मे कोइयन आकर, चमत्कार दिखलाया ॥ क० ॥ ४ ॥
कुंवर कहे इत उत मत भटको, मैं हिज कोट हटाया ।
नहि परणन की भूख हमारे, यह तो खेल दिखाया ॥ क० ॥ ५ ॥
घणी - खमा अदाता थाने, म्हां भी दर्शन पाया ।
व्याह तणी रग-रलियों देखण, मनड़ा भी ललचाया ॥ क० ॥ ६ ॥
दिनभर वातो मे यूं बीतो, कुंवर - सहाव निद्राया ।
लकुट, पावड़ियों कथा, खटोली, कन्या वे उचकाया ॥ क० ॥ ७ ॥

सूतोड़ा ने अधर उठाकर, जंगल मे धर आई ।
शार्ङ्गगढ़ परणीजण वेगा, आइजो जान सजाई ॥क०॥ ८ ॥
इसड़ो कागद लिखी पास धर, छिटक गई निज घर मे ।
ढाल असी मे कुंवर जागियो, होवत बड़ी फजर मे ॥क०॥९॥

– दोहा –

बाग नही, कथा नही, पावड़ियो पिण नाय ।
लकुट, खटोला बिन तिहा, कुंवर गयो घबराय ॥१॥
खैर, बणी सो भाग की, हिम्मत हारूं नाय ।
पत्र वांचता प्रकट ही, कन्या कृत दर्शाय ॥२॥

ढाल ८१ मी ॥ तर्ज– आखिर नार पराई है० ॥

कन्या कौतुक गजब कियो. पाछो बदलो लेय लियो ॥ टेर ॥
फिरे जंगल मे गोता खातो, नही ठण्डो जल, भोजन तातो ।
चार चीजो बिन छोजरियो ॥ क० ॥ १ ॥
एक कन्या उत ढोर चरावे, फाटा वसन पिण रूप दिढावे ।
कुंवर पूछता जवाब दियो ॥ क० ॥ २ ॥
मैं ढाणा मे रहवण-वारी, पिता नही, घर पर महतारी ।
शिर पर कर्जो वेहगियो ॥ क० ॥ ३ ॥
भाई शार्ङ्गपुर करे नौकरी, खेती की है जमी मोकरी ।
वर्षा बिन यो ढंग वियो ॥ क० ॥ ४ ॥
मैं पशुओ का पालन करती, मातृ-आज्ञा मे अनुसरती ।
धन्य मानती जन्म जियो ॥ क० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

घरे पधारो पाहुणा, असन अरोगण आप ।

सूखा लूखा सोगरा, राबड़ पीजो धाप ॥ १ ॥

– ढाल - मूलगी –

ढाढा छोड़ जगल में बाई, आई कुँवर रे साथ ।
मुजरो करतो मंद हास्य सूँ, मीठी बोली मात जी ॥ श्री० ॥ १३१ ॥
अरे बाया ! अे मोटा पाहुणा, कीकर सग ले आई ।
शार्ङ्गगढ रा राज-जँवाई, आया जान सजाई जी ॥ श्री० ॥ १२२ ॥
घर रो सार गमायो सारो, इसड़ा है निद्रालू ।
हाथ धुलाओ थे जल्दी सूँ, मैं बाजोटचो ढालूं जो ॥ श्री० ॥ १३३ ॥
कुवर चमकियो या किम जाणे, मीठी करी मजाक ।
इणरो उत्तर देय जीमसूँ, कारज वणे कदाक जी । श्री० ॥ १३४ ॥

ढाल ८२ मी ॥ तर्ज– लूँगों री लकड़ी हो रसिया गांठ गँठीली० ॥

इसड़ा क्यो आडा बोलो,गुण्डी तो खोलो,तो चूक म्हारो काई थोड़ो हिवड़ा मे तोलो ।
मतना डोडा जी वोलो, मत व्यग सूँ बोलो ॥ टेर ॥
कपट करी ने चीजो चुराई, तो,
इण मे वीरता कासूँ करो बड़ाई ॥म०॥
फेर भी थे रखजो खातिर करके गुजरूँला,
तो, पीली पाटी तो म्हे तो साफ उतरूँला ॥म०॥ १ ॥
लीलावती री माता पड़िया लचकाणा,
तो, प्रेम सहित व्हारे पुरस्या जी भाणा ॥म०॥
कुँवर कहे नही भोजन रो भूखो,
तो, घोखो हुवो है जिणसूँ चाली जी चूको ॥म०॥२॥
मारग वतलावो कोई जाणो थे सारा,
तो, कार्य बतलाओ करके दिखलादूँ सारा ॥म०॥

पहले अरोगो फिर मैं युक्ति दर्शावूं,
तो, अन्तर नहीं राखूं सुन्दर कार्य बनावूं ॥म०॥३॥
भोजन कर उठ्या बोली लीलावती री माता,
तो, राज्य दिरादो म्हारो पावो म्हां शाता ॥म०॥
नगर भोजपुर कच्छ रे काठे,
तो, राजा जयमगल जीते दगल रे साटे ॥म०॥४॥
हुवो रवाने सुणतों मारगल्यो पूछी,
तो, जाणी वी राज्ञी यांरी जाति तो ऊँचो ॥म०॥
लीलावती एक खड्ग ले आई,
तो, राख्यो जंगल में वा तो खूब छिपाई ॥म०॥५॥
लड़जो खुशी से आप विजनस जोतोला,
तो, मतना गमाइजो होकर निद्रा में भोला ॥म०॥
बार बार कांई मोसो सुणावो,
तो, नाहक म्हारी थें तो रोल उडावो ॥म०॥६॥
आगे संचरियो आयो मोटो सरवरियो,
तो, कमलो सूं पूर्ण पाणी निर्मल भरियो ॥म०॥
स्नान करण हित मांहि जो वरियो,
तो यक्ष सुरसुन्दर नामी बाहिर नीसरियो ॥म०॥७॥

* दोहा *

विविधाभूषण वदन पर, चन्दन चर्चित गात ।
कुंवर-भणी काठो ग्रह्यो, हर्षित होकर हाथ ॥१॥

— कवित्त —

उत्तम तिहारो वंश हंस-सो आचार वान,–

मर्यादा मे चालनारो शील मे सुमेर है।
भ्रात हेतु सहै दुक्ख सुखों को ठोकर मार,-
करे उपकार नित करुणा को केर है ॥
धर्म मे धुरीण धीर निर्मल गगा रो नीर,-
वीर नर वांकडो तूं शोधना रो वैर है।
भूल करी पूछै बिना स्नान करी मोरे सर,-
कैसे गम खावे इत इतो ना अंधेर है ॥१॥

ढाल ८३ मी ॥ तर्ज—मोहन ! आजो मन्दरिये म्हारे प्राहुणा रे० ॥

वयरीसिंह वदे जल कारणे रे, मत खीजो अमर अवतारणे रे ॥
मैं तो आयो हूं थारे वारणे रे ॥भ०॥ १॥
भक्ती करो आयो हू प्राहुणो रे,म्हाने मोद-धरो ने वधावणो रे ॥टेर॥
इतरी ओछाई नही है कामरी रे, झूठी ममता है धन अरु धामरी रे।
म्हारे आतुरता है काम री रे ॥भ०॥ २ ॥
वरदान इसो दिरवाइये रे, सहायक संकट मे बनजाइये रे।
प्यारो अपनो थें विरुद निभाइये रे ॥भ०॥३॥
जो मोटा-पन थे छोड़सो रे, अन्याय मार्ग मे दौडसो रे।
काई मजो मिलेला शिर-तोड़सो रे ॥भ०॥४॥
कहे यक्ष डरे मत मायरो रे, सारो काज सुधारूं थॉयरो रे।
अब चाल्यो मलया - चल वायरो रे ॥भ०॥५॥
निज भवन ले-गयो करी खातरी रे,विद्या दे दीनी केइ जात री रे।
सुधा-पाय बढाई शक्ति सांतरी रे ॥भ०॥६॥
कोई जीत सकै ना तो-भणी रे, आन शान रहै आखी अणी रे।
"मिश्री" ढाल तैयासीमी वणी रे ॥भ०॥७॥

– चन्द्रायणा –

पुण्य तणा अकूर पेखलो प्राणिया, सहायक-पग पग होय जिके अणजाणिया।
कृपा करो कहो आप भ्रात मुझ कद मिले, विरह तणो संताप सकल दूरो टले ॥१॥

✲ दोहा ✲

मिलसी इक मासान्तरे, फलसी मन री आस।
काशी देश बनारसी, खरी ठौर है खास ॥ १ ॥
अब विपदा आसी नही, अगर भूल आजाय!
याद कियो आसूं सही, संशय इसमे नाय ॥ २ ॥

ढाल ८४ मी ॥ तर्ज– शाहजादी रा बाग में दोय नारंग पाकी रे लो० ॥

कर प्रणाम प्रमुदित पणे, गग-नागण चाल्यो रे लो, अहो गगनांगण०।
नगर भोजपुर दूर थी, सो नयन निहाल्यो रे लो, अहो निज नयन० ॥ १ ॥
पुर उपकण्ठे ऊतरचो, एक अश्व बनायो रे लो, अहो एक अश्व०।
मध्य बजारो होय ने, नृप भवने आयो रे लो, अहो नृप० ॥ २ ॥
देख शिकल सरदार री, नृप आदर दीनो रे लो, अहो नृप आदर०।
केम पधारचा, किहाँ थकी, कहे कुँवर प्रवीनो रे लो, अहो कहे० ॥ ३ ॥
आप पास मे आवियो, कुछ केवण सारू रे, अहो कुछ केवण०।
जब अवकाश मिले जनो, या भाखू अबारू रे, अहो या भाखू० ॥ ४ ॥
अब ही मुझे कह दीजिये, मैं सुननो च्हावूं रे, अहो मैं सुननो०।
पतो पडे क्या बात है, पीछो ज्वाब दिरावूं रे, अहो पीछो० ॥ ५ ॥

— छप्पय - छन्द —

सुनो बात नरनाथ! माल निज हक को लीजे।
निबलो पर कर घात भूल कर ना छीनी जे॥

निज भुज को वल जोर वरावर से तोली जे।
दुष्ट अन्यायी होय दण्ड उनको ही दीजे ॥
क्षात्र रीत परसिद्ध है, नीति वाक्य सुनलीजिये।
जो उसके होवे विरुध, शीघ्र आप तजदीजिये ॥१॥

– ढाल - मूलगी –

भूप कहे समज्यो नही सरे, आप वात को सार।
साफ कहो जाणूं तिका स काइ, उत्तर दूं इणवार जी ॥श्री०॥१३५॥
साफ आप या सांभलो सरे, राज आपरो नीय।
मालिक वन मे रड़वड़े सरे, खावरा साधन नाय जी ॥ श्री० ॥१३६ ॥

ढाल ८५ मी ॥ तर्ज– जावो जावो हो मेरे साधू० ॥

बोलो बोलो हो वचन विचारी, राज्य-सभा के मांय ॥ टेर ॥
किसका राज्य कौन है मालिक, पता आपको नांय।
जिसकी भुजा में ताकत उसका, राज्य रहा जग-माय ॥ बोलो० ॥ १ ॥
उलट पुलट चलती है दुनियां, कौन न्याय अन्याय।
सुख दुख कर्मों का ही फल है, कौन छुडावे आय ॥ बोलो० ॥ २ ॥
लगे कौन से चाले महाशय !, कौन भिडाई बात।
लाठी जिसकी भेंस कहे जग, ओखीणो अखियात ॥ बोलो० ॥ ३ ॥
यही बात है श्री हजूर ! जब, न्यायालय दफनाओ।
अपराधी को कुछ नहि कहना, क्यो राजा कहलाओ ॥ बोलो० ॥ ४ ॥
यो सुन कर हो कुपित -भूपती, बोला वचन कठोर।
ज्यादह बोलन का हक नाही, चलो हटो तज ठौर ॥ बोलो० ॥ ५ ॥
यह व्यवहार ठीक नहि राजन् !, नही अदब का ज्ञान।
मैं न हटूं, हटजा गादी से, नर नही पशु-समान ॥ बोलो० ॥ ६ ॥

भिड़क उठे सरदार सभा के, लो तलवारो सूंत।
मूंछ मरोड़ी कहे कुंवर जी, अब रहना मजबूत ।। बोलो० ।। ७ ।।
वातो का नहिं काम रहा है, आयुध का अब काम।
मर्जी हो सो आप करावो, डरता नही छदाम ।। बोलो० ।। ८ ।।
लडलो भिडलो कुछ भी करलो, राज्य करणदूं नाय।
"मिश्री मुनि" कहे पर-दुख हर्ता, ढाल पिच्यासी मांय ।। बोलो० ।। ९ ।।

– दोहा –

जय हर हर महादेव की, गूंज उठी आवाज।
घेरलियो कुंवर गिरद, मिलियो मरद समाज ।।१।।
उन मर्दो रो माजनो, दोनो डबल उडाय।
चोटी पकडी भूप की, लीनो अधर उठाय ।।२।।

ढाल ८६ मी ।। तर्ज– लावणी० ।।

यह लाठी जिसकी भैंस देख सेलानी,देख०,नहिं मानो मेरी वात अरे अभिमानी।।टेर।।
थररर धूजे गात लोग सारो रा२, पड़े रहे सब शस्त्र वांस भारो रा।
कुंवर घुमाई भूप गगन मे फेंक्यो२, पीछो पड़तों तेह पशूवत कैंक्यो ।।
मरजासूं महाभाग, बचा सुलतानी ।।यह०।।१।।
झेललियो महा जोध खड़ो करडारयो२,कहोमर्जी अब बोल कि वचन उचारयो।
जयमंगल कर जोड कहे फुरमावो२, ज्यो मर्जी त्यो करो नही मुझ दावो।
बुला प्रथम नृप-पूत दीवी रजधानी ।।वह०।।२।।
जयमंगल तुम जाय राज निज केरो२, सुखे सभालो तेह नेह नहिं गेरो।
कीनो मोटो काम लालच नहिं लायो२, चारो कानी देख सुजस ही छायो ।।
धन्य कुंवर ने करली अमर कहानी ।।यह०।।३।।
लीलावति की मात आशीषो दीनी२, लीनो पति को वैर वीरता चीनी।

लीला को वड भ्रात शार्ङ्ग-गढ आयो२, मिलगयो मेरो राजकुँवर दिलवायो ॥
कौन कुँवर है तेह कैसा लासानी ॥यह०॥४॥
सप्त कोट महा विकट तोड वो डारा२, जयमगल का मान मूल से मारा।
यक्षराज हो प्रसन्न सुधा सन पाया२, मेरे झौंपडे आय भोजन करवाया ॥
चीजो लीवी चुराय बाई अगवानी ॥यह०॥५॥

० दोहा ०

सावधान हो जाइये, अथवा मेल कराय।
विजनस बदलो लेवसी, अब चूकेला नाय ॥१॥
इतने मे ही आवियो, हाको हद्द विनाय।
बाई को सिंहनि-बना, नर इक ताहि लिजाय ॥२॥

ढाल ८७ मी ॥ तर्ज– क्या रामचन्द्र से मेरा भी बल कम है० ॥

यह शार्ङ्ग गढ की शान देखलो प्यारे, लेजाता हू पकड आन नही वारे ॥टेर॥
चारो चीजें कब्ज प्रथम करडारी, फिर बना सिंहनी चला लेय के लारी।
राजादिक उत आय अर्ज की भारी, सब माफ करो महाराज आप वलधारी ॥
तुम विद्या मे भरपूर नही हो सारे ॥वह०॥१॥
वदे वयरसी ताम काम क्या कीना, दे मुझको विश्वास माल ले लीना।
यह फल उसका आज अरोगो भाई, क्या समजे मन मांय, नानी घर नाही ॥
विजयसिरी आ पास के अर्ज गुजारे ॥यह०॥२॥
मैं समझाई, किन्तु वात नहिं मानी, अपने बल मे तनी, करी नादानी।
'पर' आप क्षमा के पु ज,भूल सव जावो,है सविनय यह ही विनय,हमे अपनावो ॥
करो मूल गे रूप भूपती भारे ॥यह०॥३॥
विजय, शार्ङ्ग, जयमगल तीनो राया, करो कन्या से व्याह विनय सुनवाया।
भ्रात मिले बिन मैं नहिं व्याह करूँगा, बड़ भ्राता की आज्ञा शीश धरूँगा ॥

वैठा सभा मे सर्व कि सल्ला विचारे ।। यह० ।। ४ ।।
दूत एक तिनवेर सभा मे आयो, दे पत्र भूप के हाथ कि शीश झुकायो ।
काशी-भूप की कन्या-हित जयकारी, रचा स्वयवर खास निमंत्रण ज्हारो ।।
आयो देवण काज हजूर पधारे ।। यह० ।। ५ ।।

– ढाल–मूलगी –

तीनो नृप कहे कुँवर-साव से, क्या मरजी फरमावो ।
सभी चलें या दे नाकारो, पहले सोच लिरावो जी ।।श्रो०।।१३७।।
मैं न चलूँ सग, आप पधारो, मेरे जरूरी काम ।
सह परिकर तीनो नृप जावे, दूत सघाते ताम जी ।।श्रो०।।१३८।।

ढाल ८८ मी ।। तर्ज–करुणालय श्री कुंथु जिनेश्वर, करे भक्त कल्याण० ।।

कई कमनीय कौतुक दिखलावे, जो नर हो पुनवान ।
श्रोताजन सुनिये धर कर ध्यान ।।टेर।।
वनकर योगी कुँवर सिधाया, गगन गतो से काशी आया ।
राज-कन्या ढिग पत्र गिराया,उसमे यह वृत्तात लिखाया ।।
करे समस्या पूरण उसको पति लेना तुम मान ।। श्रो० ।। १ ।।
ईश्वर रग धरे तन केते, कौन स्थान पै बुद्धी रहते ।
विशुद्धात्मा क्या खाते हैं, चार छोर के कहाँ जाते हैं ।।
इसका उत्तर देने वाला स्याद्वाद का जान ।। श्रो० ।। २ ।।
कन्या पत्र पढी व्ही राजी, चारो समस्या है अति ताजी ।
तात मात से वा दर्शाई, करे पूरतो, जो मनचाई ।।
मैं वरमाला फिर पहनासूँ, ये ही मुझ वरदान ।। श्रो० ।। ३ ।।
राज्यकुँवर राजा जे आया, यथायोग्य आदर वे पाया ।
रग मडप मे आसन ठाया, मुहुरत पै शृंगार सजाया ।।

राज-सुता दासी के झुण्ड से, आई रती समान ।। श्रो० ।। ४ ।।
रूप चूप तन की पुनवानी, कन्या की लख सभी बखानी।
रग-मण्डप के बीच सयानी, खडी दिखे मानो इन्द्रानी ।।
राज-कन्या के वड-भ्राता ने, कथन किया उत आन ।। श्रो० ।। ५ ।।
वचन यही सरदारो ! सुनलो,सत्य बात है उर मे ठनलो।
वाई समस्या चार विचारो, करो पूरती शीघ्र उचारो ।।
'मिश्री' इठयासीमी ढाल वरेंगे जो हो बुद्धि निघान ।।श्रो०।। ६ ।।

* दोहा ०

वाक्य श्रवण वसुधाधिपति, करके कीनो गोर।
जमो नही झाका पड़्या, मचग्यो है झकझोर ।। १ ।।
वयरिसीह बन बावनो, वीणा करके मांय।
मंडप - द्वार पै आवियो, गाणो मधुर सुणाय ।। २ ।।

ढाल ८९ मी ।। तर्ज–हो सरदार थांरो पँचरँग लहरयो भींजे म्हांका० ।।

बोल्यो बन्धव बहन रो रे, मौन धरी क्यो राय,–
हो सरदारो ! इणमे गौरव थांरो घटसी म्हांका राज ।।
माला ले बाई खडी रे , समय निकलतो जाय ,–
हो सरदारो ! यो तो कन्या नाही मिलसी म्हांका राज ।। १ ।।
बडा-वडा उमराव हो रे, तुम भुज भूमी भार ,–
हो सरदारो सारी मतना बात गमावो म्हांका राज ।।
थारी कानी देखी रह्या रे, करो क्यो न विचार ,–
हो सरदारो ! न्यात रा मुखिया थे कहलावो म्हाका राज ।। २ ।।
बुद्धि-बल विन ना वणे रे, हिम्मत पड न कोय ,–
हो सरदारो ! नाँही बोझ उठाणो इण मे म्हाका राज ।।

जो जिन मत रा जाण व्है रे, उत्तर देवे सोय ,-
हो सरदारो वे तो सोच लेवे इक छिन मे म्हांका राज ॥ ३ ॥
बावन बावो आवियो रे, बोल्यो है ललकार ,-
हो सरदारो ! यो काई ढीला ढाला ढीजो म्हांका राज ॥
मैं करदूं अब पूरती रे, मत कीजो तकरार -
हो सरदारो ! थें तो रीस रसायण पीजो म्हाका राज ॥ ४ ॥
दो धोला, दो लाल है रे, दो हरिया, दो श्याम ,-
हो सरदारो ! सोला सोवन वर्ण विराजे म्हाका राज ॥
पांचों रंग जिनराज रा रे, भजियो व्है सुख धाम ,-
हो सरदारो ! पहली यही समस्या छाजे म्हाका राज ॥ ५ ॥
बुद्धि स्थान दिमाग है रे, गम खावे मुनिराज ,-
हो चारो गति छोड़्या मुगतो-गढ को पावे म्हाका राज ॥
चारो उत्तर लोजिये रे, फर्क होय जो आज ,-
हो सुनवादो म्हाने उत्तर आछो आवे म्हाका राज ॥ ६ ॥
कन्या सुण राजी हुई रे, दीसे परतिख रूप ,-
हो माला पहनादी बड़े मोदसूं वांही म्हांका राज ॥
इसो ढग देखी तदा रे, रीस भराणा भूप ,-
हो कुण आयो इणने माला क्यो पहनाई म्हांका राज ॥ ७ ॥

– चन्द्रायणा –

हल चल हुई अपार कन्या वे-भान है, परणीजे यो मूढ रहै किम मान है ॥
ऊठो जल्दी जोध, माला को छीनलो, बावा रा शिर-केश जूतो सूं मोनलो ॥ १ ॥

– कवित्त –

इन्द्र के अखाड़े आय प्रेत जो फितूर करे ,-

वीरो के अगाड़ी हीज खेंचे तरवार जो।
शाहो के समाज वीच कगला किलोल करे,-
परियो के पास नाचे जैसे फूड नार जो ।।
कमनीय पुष्प-क्यारी-मध्य जो बवूल ऊगे,-
पण्डितो से वाद करे आन के गिवार जो ।
ऐसे नरराज जहाँ वावनो प्रणेत करे ,-
सहन कैसे होवे जरा सोचो सरदार जो ॥ १ ॥

— दोहा —

टारो मत मारो जरद, धारो सारो साज ।
वारो कहा न्यारो करो, आरो कारो काज ॥ १ ॥
भिडक ऊठिया भूत ज्यो, वावन से कहे वेन ।
माला तज भागो सतत, चवो मरण रा चैन ॥ २ ॥

ढाल ६० मी ॥ तर्ज तेजा जी री० ॥

आवो आवो सूर सुलतानो !, भल आया रे, स्वागत करे रे थाँरो वावनो।
ताजी ताजी तरवारो चमकावो म्हारा भाया रे, मोखो तो आयो रे मनभावनो ॥१॥
सोरी देदूं वरमाला थे इसड़ी मतना जाणो रे,मतिड़ा माथे रे साटे खावणा।
सधवा रा जायोडा व्हो तो सामी छाती आजो रे,नातर तो चू न ड ने लेगो धारना २।
वोलडा वावनिया केरा आक सरीसा लागा रे, रीस तो छूटी है अति आकरी।
वर्षे वर्षे वाण त्रिशूल भाला भारी रे, भोक वाजी रे सूरिया वाक री ॥३॥
वावनियो घोटो ले नाचे वीण वजावे न्यारी रे,फोजो तो ढले रे जूनी भीत ज्यों।
आवे सोही लावो होवे पाछो तो नहि जावे रे,मिलणी तो करे रे व्हाला मित ज्यो ॥४।
आयो हाको वावो वाँको, ओ नही किणरे सारे रे,-
स्यान तो विगाड़ी सारा साथ री।
वड़ वड़ राजा वद-वद चढिया, पडिया धूल ही चाटे रे,-
बात तो रही है नही हाथ री ॥५॥

अमरसिंह आफणतो आयो, लश्कर लेकर लारी रे,–
एडो केडो है बावो बावनो।
वयरसीह भाइडो भाल्यो आनद उर मे पायो रे,–
मिलियो रे मा-जायो म्हारो सावनो ॥ ६ ॥
रूप वदलियो मिलवा धायो अमरसिंह तिणवारी रे,–
ओलखतो हाथी सूं नीचो आवियो।
दुनियो दाखे यो काइ होग्यो आयो अचभो भारी रे,–
छोटो तो भाईने शिर न्हावियो ॥ ७ ॥

० दोहा ०

मिलिया हिलिया हृदय हद,– खिल्या कमल युग नेण।
ढलिया प्रेमाश्रू प्रकट, रलियो आयो सेण ॥ १ ॥

– ढाल–मूलगी –

कई दिनो रो विरह उमडियो, गले लिपट गया भाई।
दौड दौड राजा सब आया, दोनो ओलख-ताई जी ॥ श्री० ॥ १३९ ॥
सभी कहे कहाँ गयो बावनो, आया कठा सूं आप।
वयरसिंह हँसकर कहे मैं हो, सुनलीजो थे साफ जी ॥ श्री० ॥ १४० ॥

ढाल ६१ मी ॥ तर्ज–ए मोती समदरियों में नींपजे० ॥

अपनी अपनो सब वीतक वार्ता, जाजम विछाई बैठा दाखो।
अचभो सब ने आवियो ॥
दंग हो गया दलपति सुन करी, धन्य है कैसी प्रीती राखी ॥ अ० ॥ १ ॥
श्रीपुर, मनिकपुर री बालिका, विजयपुर - वारी पाँचमी जाणो।
शार्ङ्गपुर, भुजपुर, काशी कन्यका, आठोनो मिलियो साथे टाणो ॥अ०॥२॥

ब्याह रचायो गहरा रंग सूं, घणा राजवी मिलिया आई ।
कांसू वखाणे कवि मुख वारता, ठाठ अणूतो उमग अथाई ।। अ० ।।३।।
श्रीपुर, शार्ङ्गपुर नो राज ही, तीजो विजयगढ केरो सागे ।
तीनो ही राजा राज दिरावियो, पूर्व पुण्यों सूं व्हाला लागे ।।अ०।।४।।
दोनो भायो रा राज ज जुजुवा, जुजुवा प्राण रु भाग्य पिछानो ।
किन्तु हृदय दोनों रो एक है, विद्या बल वधियो है असमानो ।।अ०।।५।।

* दोहा *

अमर प्रशसे लघु अधिक, वयरसिंह बड़-भ्रात ।
वस्तू सब भेली करी, सब राण्यों रो साथ ।। १ ।।
रहे एकठा भ्रात दुहुं, सभाले सब राज ।
दिन-दिन वाधे दश गुणो, सुख संतति नो साज ।। २ ।।

ढाल ६२ मी ।। तर्ज– करने भारत का कल्याण० ।।

करने जग में पर-उपकार, जन्मे दोनों राजकुमार ।। टेर ।।
श्रीपुर-सेठ-सहाब की प्रीती, दोनों भायों से वर नीती ।
अमरसी माने है अनपार ।। जन्मे० ।।
श्रीपुर आदी के महाराजा, वर्ते आशा मे हित साजा,
वजाया अमर पड़ह सुखकार ।।जन्मे०।।२।।
राण्यों एक-एक से आली, विद्या बुद्धी में बलशाली,
कला में सरस्वती अवतार ।।जन्मे०।।३।।
धर्म मे दृढ कुंवर करडागी, अब तो डरे पाप से सारी,–
धारे व्रत्त नियम हरवार ।।ज मे०।।४।।
अढलक दानशालायें चलती, करते देव गुरू की भगती,–
निश-दिन दीन हीन की सार ।।जन्मे०।।५।।

धूजे नाम लियो आतकी, कबहू नेडा नही कलकी,–
वर्ते नीती - मय व्यवहार ॥ जन्मे० ॥ ६ ॥
पग-पग आनन्द मगल-माला, जिनवर आज्ञा पालन वाला,–
'मिश्री' बर्राणूमी ढाल ॥ जन्मे० ॥ ७ ॥

※ दोहा ※

वासर वीते सुखमयी, इक दिन सभा मजार।
विनजारो कर भेंट भल, वैठो करी जुहार ॥ १ ॥

ढाल ९३ मी ॥ तर्ज– नवकारज मंत्र बड़ा है० ॥

भाग्योदय नर का सार है, तव साज वने मन च्हाया ॥ टेर ॥
वसुनाथ कहे विनजारा, किन - किन देशो मे थारा।
चलता यह व्योपार है, अव किधर घूम के आया ॥ भा० ॥ १ ॥
वो केई मुलक वताया, नाम शोरीपुर का आया।
जब कहे अमर जनपार है, कहो कैसे वहाँ का राया ॥ भा० ॥ २ ॥
नायक कहे स्वामी वहाँ का, था सूरसेन अति वाँका।
उसका सब राज भडार है, वो वैराट नराधिप पाया ॥ भा० ॥ ३ ॥
सूरसेन गया मुँह टारी, नही उसकी खबर लिगारी।
पटराणी तस बदकार है, राजा मान गिराया ॥ भा० ॥ ४ ॥
थे नृप के सुत वल-धारी, राणी ने वात विगारी।
गये दोनो विदेश मँजार है, वस, हाथो हीरा गमाया ॥ भा० ॥ ५ ॥
झुरते हैं पुरजन सारे, सव सुखो भये दुखियारे।
नही कोई पूछनहार हैं, भये अस्त व्यस्त महाराया ॥ भा० ॥ ६ ॥
बिन धणी सार कुण पूछे, रक्षक भी पूरे लूचे।
यह तेराणूँमी ढाल है, पूछ्यातर हाल सुनाया ॥ भा० ॥ ७ ॥

– ढाल - मूलगी –

विणजारा से सुणी वार्ता , आदर मान दिरायो ।
दोनो भाई महलो मांही, मनशोभो करवायो जी ॥श्री०॥१४१॥
पूतो छतो राज्य ले वैरी , वडी शर्म की वात ।
जल्दी चलो मातृ-भूमी का , दर्शन करलो भ्रात जी ॥श्री०॥१४२॥

ढाल ६४ मी ॥ तर्ज- शोमन्त्रियों भक्ते चोखे चित्ते, नित जपिये नवकार० ॥

षटदेशो को लश्कर लाठो, लेकर चढिया वीर।
विध-विध रा राजा, सूर स-काजा , चमके कर समशीर ।
केशरिया - वाना रहे न छाना , जोशीला सरदार ॥ १ ॥
भवि सुनजो भावे; आनन्द आवे; आगलड़ो अधिकार ॥ टेर ॥
फोजो री माजो फवे करारी , राजा केई ढहजावे ।
लेइ भेटणा आवे सन्मुख , सादर शीश झुकावे ।
देवे तस आदर , लेवे साथे, खुश होवे जनवार ॥ भवि० ॥ २ ॥
यो जावे बढता दल सचरता , विकट पहाडो वीच ।
सरिता रे काठे ठहरण माटे, जल निर्मल नहि कीच ।
डेरा दे दीना उत रग-भीना, सरस अरोगे अहार ॥ भवि० ॥ ३ ॥
दोनो भाईडा पट कसियोडा , जावे परली तीर ।
दास्यो री टोली ऊमर भोली , भरे कुंभ मे नीर ।
वृद्धा एक दासी हुई उदासी, निरखो दोय कुमार ॥ भवि० ॥ ४ ॥
शिर-पर नीर , नीर नयनो मे , देखी नृप दलगीर ।
पूछै किण करन ढलकत वारन , भीज रह्यो है चीर ।
शंका मत राखो सारो भाखो, वात तणो व्यवहार ॥ भवि० ॥ ५ ॥
नही नगर गाम ढाणी इक दीसे, कित ले जावो पाणी ।

इणी देश को वेष नही है, नही राणी सेठाणी ।
दास्यो हो किणरी मालिक जिणरी, तेन दशा अवार ।। भवि० ।। ६ ।।
जीर्णी सुण पूछै आप कौन हो ? किण गढ रा सिरदार ।
उणियारा सेंदा लगे आपरा, ओजल - पड़ी अपार ।
जिणसूं दुख आयो, हियो भरायो, चौराणूंमी ढार ।। भवि० ।। ७ ।।

० दोहा ०

जिसो रूप है राज रो, विसडा राजकुमार ।
हाय गया छिटकाय के, वीता वर्ष-ज बार ।। १ ।।

— कवित्त —

ज्याको भुज जोर तोल-सक्या ना अवनी भूप,-
रूप तो हरीन्द सागे लागे मन-मोहना ।
मात के दीपानहार भूमी - भार झेलनारे,-
शत्रु-मद भजवे को छिन-भर छोह ना ।
बाल घुघराले आले हस - चाल चाल नारे,-
दुक्खी दुख टारनारे किया है विछोहना ।
व्हाके मिले बिनों म्हाको दरद सुणेला कौन,-
इसीलिये सूनो राज आया मुझे रोवना ।। १ ।।

ढाल ९५ मी ।। तर्ज– पंथीड़ा ! बात कहो धुर छेहथी रे० ।।

माता रे माता थी वडभागनी रे, शिक्षा, शील सु-भौन रे ।
जिणरा रे जिणरा जाया जाणजो रे, गज सकै जग कौन रे ।।१।।
भाखो हो जो कित देख्या भूपती रे, सूरत अनोखी जास रे ।
अमर रे अमर वयरसी नाम है रे, कल्प वृक्ष-सा खास रे ।। टेर ।।

किण पुर रे किण पुर कुण राजा तणा रे,लाल महा-सुखमाल रे ।
पूरो रे पूरो परिचय दीजिये रे, मालुम होवे हाल रे ।। भा० ।। २ ।।
शोरी रे शोरी पुरना ऊवना रे, सूरसिंह नृप - नन्द रे ।
छाना रे छाना वे रहवे नही रे, जिमि सूरज वा चन्द रे ।। भा० ।। ३ ।।
सूरज रे सूरसिंह नी दासियो रे, इत जल भरवा आय रे ।
मानो रे मानो या मैं किणतरे रे, हृदये नही समाय रे ।। भा० ।। ४ ।।
जोलो रे जोलो परिचय आपरो रे, पूरो पामू नाय रे ।
तोलो रे तोलो आगे किम कहू रे, आलोचो महाराय रे ।। भा० ।। ५ ।।
म्हारे रे परिचय री नही चाहना रे, मिल्यो बात रो मर्म रे ।
विखमो रे विखमी ठौर विखा-विखे रे, भामण नही दे भर्म रे ।।भा०।।६।।
परिचय रे परिचय म्हारो एतलो रे, शोरोपुर रो राज रे ।
वैरो रे वैरो थको छुडायने रे, देसो थारे काज रे ।। भा० ।। ७ ।।
मिलवा रे मिलवारो मन मे हुवे रे, उरहा आजो तेथ रे ।
ठहरण रे ठहरण रो फुरसत नही रे, सत्य बात हम केत रे ।।भा०।।८।।
दीनो रे सवा 'क्रोडनो सोहनो रे, वर रत्नो नो हार रे ।
नेऊ रे नेऊ पाँचमी यह सही रे, 'मिश्री' भाखी ढार रे ।। भा० ।। ९ ।।

* दोहा *

देय दमामा चढ गया, दासो जा नृप पास ।
वीतक सर्व सुणावियो, बँधी जरासी जास ।। १ ।।
कुणहा, ओलखिया नही, सा कहे राजकुमार ।
घबरावो मत गढपतो !, अब शुभ दिन सरकार ।। २ ।।

ढाल ९६ मीं ।। तर्ज– सखियां ! पनिया भरन कैसे जाना० ।।

था ठाट सराहे जैसा, नही आया देखण मे ऐसा ।। टेर ।।
सग मे केई महिपाला, हय, गय, रथ, पायक आला जी ।

दिखते थे इन्द्र के तैसा ॥था० ॥ १ ॥
वांकडली फौजों-वाला, दुश्मन दहलाने-वाला जी।
वलवान भले हो कैसा ॥ था० ॥ २ ॥
दल चला सिन्धु-सा गाजे, वाजित्र वीर-रस वाजे जी।
वैराट नगर नरेशा ॥ था० ॥ ३ ॥
यह कौन भूप चढ आया,नही प्रथम सदेश पठाया जी।
क्या चाहत करन कलेशा ॥ था० ॥ ४॥
कोट, किला समराया, दलपति पैं हुकम लगाया जी।
रहो त्यार युद्ध अदेशा ॥ था० ॥ ५ ॥
इत अमरसिंह महिराना, फौजो का कैम्प लगाना जी।
भेजा दूत साथ सन्देशा ॥ था० ॥ ६ ॥
वैराट-नाथ पैं आया, श्री अमर कथन सुनवाया जी।
छिन्नूमी ढाल सुरेशा ॥ था० ॥ ७ ॥

० दोहा ०

रे नृप चाहत जीव जस, रजवट अरु रजथान।
आन दिखा पौरष अठै, जहाँ जुडे मैदान ॥ १ ॥
अगर किया आलस जरा, गढ करसू ढमढेर।
वैर वसायो सवल से, फैर चहत क्या खेर ॥ २ ॥

ढाल ६७ मी ॥ तर्ज– चित्तौड़ा राजा रे० ॥

नृप सुन परजलियो रे, बोले हलफलियो रे।
कुंण आयो अलियो मरवा कारणे रे ॥ १ ॥
कोइ भड नही भिलियो रे, मर्दानो न मिलियो रे।
जिणसूँ भिलियो निकल्यो बारणे रे ॥ २ ॥

बोले दूत सनूरो रे, ऊकलता ना ऊरो रे।
नही दूरो करो श्रा जुहारडा रे ॥ ३ ॥
मालुम पडजासी रे, फिर राज्य दबासी रे।
नही श्रासी श्राडो श्रानडा रे ॥ ४ ॥
जलदी सूं जकडो रे, इण दूत ने पकड़ो रे।
कर कालो मूंडो काढदो रे ॥ ५ ॥
चचलता-वारो रे, दूत कीनो किनारो रे।
फौजी श्रफसर फौजो चाढ दो रे॥ ६ ॥
दूत दीनी सिलामी रे,वांको वछ नो स्वामी रे।
वो तो युद्धनो कामी श्रावसी रे ॥ ७ ॥
वयरीसिंह बोले रे, श्रावणदे श्रोले रे।
ज्यों तोले जेम तुलावसी रे ॥ ८ ॥
फौजो चढ चगी रे, श्राई नवरगी रे।
सत्ताणूंमी सगी ढाल सुहावसी रे ॥ ९ ॥

— ढाल-मूलगी —

झण्डा रुपिया जंगरा सरे, डेरा दीना डाल।
वूच्छीं, भाला, तीर, तमचा, खड्गो साथे ढाल जी ॥ श्रो० ॥ १४३ ॥
श्रांटीला अलबेला अडिया, भरिया क्रोध कराल।
भिड़िया पिण डरिया नही सरे,जड़िया शस्त्र जमाल जी ॥श्री०॥१४४॥

ढाल ९८ मी ॥ तर्ज– आसावरी० ॥

मान मतकर रे मूढ श्रनारी, सब इसने बात विगारी॥ टेर ॥
दोनो फौजों घर मन मोजो, खोज गमावण खारी।
लड़े लड़ाई पौरष-लाई, कुभियन रखत लिगारी॥ मान० ॥ १ ॥

क्रोधारुण गोधा ज्यो चवडे , आहुड़िया अविकारी ।
लाशों पै लाशो कर डारी, खलक्यो खून अपारी ॥ मान० ॥ २ ॥
वयरसोह तो बीच मे आयो , नाहक हिंसा ज्हारी ,
अब मेटूँ मैं सारो झमेलो, देखो कैसो बलधारी ॥ मान० ॥ ३ ॥
ले धनु-बान सुलतान वकारयो, वच्छ नृप ने तिणवारी ।
क्यो नाहक मे मनुष्य मरावो, द्वन्द युद्ध मनसारी ॥ मान० ॥ ४ ॥
तुम हम बल की होय परीक्षा,निरख लेवे सरदारी ।
आजाओ अब देर करोना , हूँस निकालो सारी ॥ मान० ॥ ५ ॥
अखे आखतो वच्छ-नराधिप, मुझको मूढ वकारी ।
क्यो मरवा ने त्यार हुवो है, जान बूझ मतिहारी ॥ मान० ॥ ६ ॥
रे मतिहीन ! बोल नही जाणे, लच्छन क्षत्री विसारी ।
तुच्छ शब्द निकसे मुख तोरे , जैसे फूहड नारी ॥ मान० ॥ ७ ॥
नीच ! निलज्ज ! राज ले पर को, छकियो राज्य-सता री ।
एक मिनट मे सर्व भुला दूँ, तो जीणियो महतारी ॥मान०॥ ८ ॥
ढाल अठाणू मे दोनो अड़िया, निज निज बल विस्तारी ।
'मिश्री मुनि' कहे विजय उन्ही की, पुण्य-प्रबलता ज्यारी ॥ ९ ॥

* दोहा *

घमासान युद्ध मचगयो , शस्त्र वहै जल-धार ।
निज, पर की मालुम नही, उडे झोक अनपार ॥ १ ॥
देखे जे दाखे इसो, किसा वीर बलवान ।
जिन जननी ने धन्य है, पय पायो विरियान ॥ २ ॥

ढाल ९९ मी ॥ तर्ज– तेरी फूल-सी देह पलक में पलटे० ॥

प्रबल लड़े है प्राक्रम पूरो, वयरसोह बड़भागी ।

नगर वैराट तणो वो राजा, चित मे चिन्ता जागी ।।१।।
अब क्या करणो - श्रो जीत्यो नही जावे ।। टेर ।।
शक्ति - वाण फेकियो फटके, वयरसिह शंकायो ।
वाण वण्यो विकराल गगन मे, ज्वालो ज्वाल मचायो ।। अब० ।। २ ।।
शार्ङ्गगढ री राज - दुलारी, अमरसिह ने आखी ।
शीघ्र करो उपचार अन्यथा, नही राखेला बाकी ।। अब० ।। ३ ।।
नर, सुर अरु सरदार शकिया, काम बण्यो है अबको ।
ए मरणासू जुल्म हुवेला, दुनियो देसी ठवको ।। अब० ।। ४ ।।
अमरसिह कहे जो तुम जाणो, वही उपाय बताओ ।
सो करले सूं सुण हे लाडी !, म्हारो वीर बचाओ ।। अब० ।। ५ ।।
शक्ति ज्यो ज्यो नेड़ी आवे, मचरह्यो हाहाकारो ।
वयरसीह तव यक्ष सुमरियो, सो आयो ततकागे ।। अब० ।। ६ ।।
वज्र मार शक्ति ने तोड़ो, भूतण भंजवारो ।
कर न्हाक्यो राख्यो वन स्हायक, परचो है पुन्ना रो ।। अब० ।। ७ ।।
कुंवर कोपियो अब कित जासी, इष्ट याद कर थारो ।
तीन लोक मे नही कोइ मिलसी, रक्षण होय तिहारो ।। अ० ।। ८ ।।
मुदगर मार कियो भखभूरो, जीत दुदुभी बाजी ।
निन्नाणू मी ढाल मायने, कुवर बात की ताजी ।। अ० ।। ९ ।।

– दोहा –

कच्छ देश वैराट ले, दीपायो निज वश ।
धन्य धन्य जनता कहे, करे घणो परशस ।।१।।
तन साजो औषध करो, शोरीपुर आवत ।
सूरसेण महाराय को, लाया वठे तुरन्त ।।२।।

ढाल १०० मी ॥ तर्ज—ओ मोती समदरिया में नीपजे० ॥

सागे परिवार ज भेलो करलियो, दियो तात भणी तव राजो ॥
मोत्यो सूँ मूँघो लाडलो, वश - उजागर लागे आछो ॥ टेर ॥
वैर लियो है अपणा बाप रो, हाथो सुधारयो सारो काजो ॥मो०॥१॥
पण्डित, मंत्री दोनो मानिया, भूल्या नही म्हारो वे उपकारो ॥मो०॥
भेद खुलतो ही दासी भूप ने, दीधी वधाई राजकुमारो ॥मो०॥२॥
सुणतो ही राजा दोनों नद ने, कण्ठ लगाया पोख्यो प्यारो ॥मो०॥
पूरा पुनवन्ता घर मे जनमिया, मैं तो अपराधी पुत्रो ! थारो ॥मो० ।३॥
राणी जाणी ने वाणी ऊचरी, पुत्रो ! थें म्हारो माथो तोडो ॥मो०॥
कुँवर दाखे हो भोला मातजो !,ओ तो कर्मो रो चालो जोडो ॥मो०॥४॥
म्हारे नही द्वेष किणी रे ऊपरे,म्हारो तो कर्त्तव्य आन बजायो ॥मो०॥
काई किरियावर इण मे मोटको,राजा तो मन मे घणो लजायो ।मो ॥५॥
सभा भराणो घणा ठाठ सूँ, कीधा सो कार्य सकल सुणाया ॥मो०॥
इचरज आया, पाया सुख घणा, भेट घर-घर रंग वधाया ॥मो०॥६॥
सारा पुर-जन ने कुँवर जीमाविया, सारो ने सीख समर्पी सागे ॥मो०॥
शोरीपुर राज - तिलक रे कारणे, तात पुत्रो से वाचा माँगे ॥मो०॥७॥
कुँवर कहे नही म्हारे चाहना, राज्य आठो हो आगे म्हारे ॥मो०॥
मर्जी व्हे जिणने आप दिरायदो, सेवा मे हाजिर रहसो थाँरे ॥मो०॥८॥
राजधानी तो पुर वैराट मे, दोनो ही बन्धव रहवे साथे ॥मो०॥
धर्म - दृढायो, न्याय दिखावियो, दान अदलख देवे हाथे ॥मो०॥९॥

० दोहा ०

पुत्र हुवा पुन्यातमा, चार चार घर चद।
विगत काल जाणे नही, चहुँ पाखे आनन्द ॥१॥

एक दिवश उद्यान मे , पहुधारे मुनिराज ।
खबर सुणत सह-साथसूं ,जावे वन्दन काज ॥२॥

ढाल १०१ मी ॥ तर्ज– आज आनंद घन योगीश्वर आया० ॥

सुद्‌गुरु वन्दी अधिक आनन्दी, सुणी देशना भारी रे लो ॥
रोम-रोम मे रुचगी सारो, उमंग लगी तिरवारी रे लो ॥ १ ॥
शुभोदय सूं संगति मिलती, झिलती दशा जयकारी रे लो ॥ टेर ॥
पद प्रणमो पूछे है स्वामी, सुख दुख किण विध लाधा रे लो ॥
उन्नति होगी, विपदा खोगी, आइ घणी री बाधा रे लो ॥शु०॥२॥
मुनिवर भाखे सुणो नराधिप, पूरव भव के माही रे लो ॥
चार प्रकारे धर्म अराध्यो, उत्कृष्ट भावो ने लाई रे लो ॥शु०॥३॥
पिण मिथ्यात्वी मित्र-योग थो, बिच बिच शका आणी रे लो ॥
विगर आलोयो बन्ध पड्‌यो थो, सो होगइ भुगतानी रे लो ॥शु०॥४॥
कर वन्दन आ राज-भवन मे, आठो पुत्रो तांई रे लो ॥
अलग अलग दे राज्य सम्पदा, पति पत्नी हुलसाई रे लो ॥शु०॥५॥
संयम ले दुर्धर तप कीधो, शिव सुख पायो सीधो रे लो ॥
दोनो भव वे सफल करीने, मनवाछित सुख लीधो रे लो ॥शु०॥६॥
कथा रसाली चित उजवाली, भ्रातृ-भाव दर्शाई रे लो ॥
नव निर्मित की विविध तर्ज मे, नव रस सुन्दरताई रे लो ॥शु०॥७॥
आचार्य श्री रघुनाथ जो, टोडर, इन्द्रसी आला रे लो ॥
भोरत, गिरधर, धर्म, मान, वुध, कृपा करी सुविशाला रे लो ॥शु०॥८॥
चरणाम्वुज-षट्‌पद "मुनि मिश्री", गुरु कृपा अनुसारे रे लो ॥
अमरसोह अरु वयरिसीह रो, रचियो ओ अधिकारो रे लो ॥शु०॥९॥
न्यूनाधिक कविता मे आयो , मिथ्यादुष्कृत मम होवो रे लो ॥

भाव सुणो ने अयि भवि-जीवो !, शुद्ध स्वरूप सजोवो रे लो ।शु०॥१०॥

७ २ ० २
द्वीप, नयन, नभ, कर शुभ वर्षे, माधव कृष्ण पख आयो रे लो ॥
भद्रा तिथि सुरगुरु शुभ वेला, ग्रंथ पूर्ण सुखदायो रे लो ॥शु०॥११॥

— कलश —

विनय - भक्ती ज्ञान-शक्ती साधना मे लीजिये ।
आत्म-रूप विचार निश दिन शान्ति सुधा-रस पीजिये ॥
गुरुदेव श्री बुधमल कृपा से सदा मंगल-माल है ।
मिश्रि मुनि के सदा वर्ते जय विजय सु- विशाल है ॥
देश मरुधर नगर वेनातट महा-रमणीक है ।
"शुकन मुनि" कथनाते जोड़ी चौपई स-श्रीक है ॥ १ ॥
इति श्री अमरसेण वयरसेण चरित्र समाप्त ॥ शुभं भवतु ॥



सुश्रावक जिनदास-चरित्र

॥ श्री वीराय नमः ॥

मरुधर - केशरी, पण्डित-रत्न, प्रवर्त्तक मुनि श्री
मिश्रीमलजी महाराज विरचित
सुश्रावक जिनदास-चरित्र ।

– दोहा –

पार्श्व-पदाम्बुज-मन-मधुप,–सौरभ लीन सदाय ।
मगन निरन्तर भ्रमत है, दुविधा दूर हटाय ॥ १ ॥
ज्यां के शुभ उपदेश से, तिरण भवोदधि तीर ।
त्याग और वैराग को, पभणे धारण धीर ॥ २ ॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज– शिक्षा दे रही जी, हमको रामायण० ॥

श्रावण करलीजिये जो, प्यारे आगम ज्ञान प्रवीन ॥ टेर ॥
आगम ज्ञान अथाग अनूपम, अक्षय आनन्द रूप ।
अतीत, अनागत, वर्त्तमान में, वर्ते एक अनूप ॥श्रवण०॥१॥
नही आस्था उन पै उसका, है पूरण दुर्भाग ।
ऐसा है दुर्मतिनर उसका, सगत देना त्याग ॥श्रवण०॥२॥
जो सूरज पै धूल उछाले, पड़े उसी पै आय ।
इसी भाँति जिन-वचन उथापक, रुले चतुर्गति मांय ॥श्रवण०॥३॥
जिन-वाणी का जो श्रद्धालू, धारे नियम उदार ।
कैसा भी सकट सहलेता, डिगता नहीं लिगार ॥श्रवण०॥४॥
श्री जिनदास विवेकी श्रावक, सुन्दर तस आख्यान ।
'मिश्री मुनि' कहे श्रोताजन तुम,सुन लेना धर ध्यान ॥श्रवण०॥५॥

ढाल २ जी ॥ तर्ज–धर्म पै डट जाना० ॥

धर्म से रँग जाना, छोटी वात नही है ॥ टेर ॥

शहर शौरिपुर था सुखकारी, जिसकी रौनक अहा ! निरारी।
वसते बड़े बड़े व्योपारी, न्याय से धन पाना ॥छोटी०॥१॥
राजा दिल का बड़ा विलाला, उसकी शोभा जग मे आला।
करते परजा की प्रतिपाला, मन्त्रीश्वर गुन वाना ॥छोटी०॥२॥
श्रावक श्री जिनदास सयाना, उसका कहाँलो करें वखाना।
जिसने जीवा - जीव को जाना, दयालू है स्याना ॥छोटी०॥३॥
सहायक दुखियों का है पूरा, वो तो सत्य शील में सूरा।
सारे दुर्व्यसनों से दूरा, आन पै मरजाना ॥छोटी०॥४॥
सुन्दर शीलवती सेठानी, भक्ता थी वा सिया समानी।
निर्मल, जरा नही अभिमानी, विविध देती दाना ॥छोटी०॥५॥
दम्पति एकान्तर तप करते, द्वादश श्रावक के व्रत धरते।
गहरे गुन चुन-चुन के भरते, खजाने धन नाना ॥छोटी०॥६॥
सारा शहर, देश गुन गाते, खाली आते पै नहि जाते।
सगरे सज्जन जिसे सराते, मुख्य सबने माना ॥छोट०॥७॥

*** दोहा ***

धन, तन, जन पुनि धर्म-युत, आत मात अ-समान।
उन सम उनविरिया उठे, अवर सेठ नहि आन ॥ १ ॥
त्यागी वड़ भागी तपी, रागी धर्म - रसाल।
आदर दे अवनीश अति, न्यायी निपुण निहाल ॥ २ ॥

ढाल ३ जी ॥ तर्ज- काच की किंवाड़ी मांये लोह खट को० ॥

आंखड़ल्यो रो तारो व्हालो सब जन को।
दान मे लुटाते खुले हाथो धन को ॥ टेर ॥
सेठ सादगी को शहरो, गुणी गमखाऊ गहरो,

लेवे गुरू-भक्ति लहरों, वश राखे मन को ॥आँ०॥१॥
ज्यों लो दान नही देवे , तो लो कण नही लेवे,
विना नियम न रेवे, तन नही तन को ॥ आँ०॥२॥
लायक छोटो-सो है लालो, वच्चो हस-सो दयालो,
हाथो हाथ ही हुलरालो , पक्ष प्यार-पन को ।।आ०॥३॥
देव गुरू की है महर , वहै आनन्द की लहर,
सारो सरावे है शहर, कल्पवृच्छ वन को ।।आँ०॥४॥
करे धर्म की दलाली, सव जीवो को रखाली,
मन रहे खुशियाली, रंग नाना रन को ॥ आँ० ॥ ५ ॥

० दोहा ०

कहो कर्म-गति गहन जिन, पलटत जैसे पौन ।
प्रवल जु वेग-प्रवाह को, रोक सकै कहो कौन ॥ १ ॥

ढाल ४ थी ॥ तर्ज– आस्ताना से उतरी परी० ॥

श्रावकजी की दशा फिरी, आय अचानक विपद परी । टेर।।
ज्हाजो डूवी सिन्धु मजार, आग लगी जहाँ थे कोठार,
देनेवालो की नियत गिरी ॥श्रावक०।।१।।
चारो ओर से हो रहि हानी, सेठ अशुभ दिन लिया पिछानो,
तग दस्ति आ जबर भिरी ।।श्रावक०॥२॥
कारोबार बध जब करियो,-कर्जो नहिं किनको शिर धरियो,
केई मित्र आ अर्ज करी ।।श्रावक०॥३॥
म्हां सब थारा शक न लावो, लेलो रकम रु विणज बढाओ,
कहे सेठ नहि लूं दमडी ॥श्रावक० ।४॥
एकान्तर उपवास करावे, नियम लिया सो पूर्ण निभावे,

'मिश्री' कहे तस धन्य घडी ॥ श्रावक० ॥ ५ ॥

— दोहा —

मुखडा पै मुसकान है, दुखडा पै ना ध्यान ।
दृढता तास निहार के, मिल दे सारा मान ॥ १ ॥

ढाल ५ मी ॥ तर्ज– वन्हा उमराव० ॥

पिया म्हारा, अर्ज करूं कर-जोड, जिण पै ध्यान दिरावो हो, म्होरा भरता ।
पिया म्हारा, साधन नहि कोई ओर, कीकर गुजर चलावो हो, म्हो० ॥ १ ॥
पिया म्हारा, बिक गयो साज समान, गेहणा गांठा सारा हो ॥ म्हो० ॥
पिया म्हारा, आप पूरा परेशान, भूखो मर हुवा कारा हो, ॥ म्हो० ॥ २ ॥
पिया म्हारा, लूगो पडियो शरीर, धीरज किण-विध धारू हो, म्हो० ॥
पिया म्हारा, अतिथि देखि दिलगीर, व्हाने किम जिमाडू हो, म्हो० ॥ ३ ॥
पिया म्हारा, आप पधारो म्हारे पीर, मैं छूं सबने व्हाली हो, म्हो० ॥
पिया म्हारा, देसी धन, कन, चीर, मेलेला नही खाली हो, म्हो० ॥ ४ ॥
पिया म्हारा, इतरो काई आलोच, व्हाने आप पिण साज्या हो, म्हो० ॥
पिया म्हारा, वनो उद्योगी, तज सोच, सहाय लेवे बड़ राज्या हो, म्हो० ॥ ५ ॥
गौरी म्हारी, ओछी बुधो करी आज, वेण इसा क्यो आले है, म्होरो घर नार ॥
गौरी म्हारी, घर री खोवे लाज, लागी किणरे चाले है ॥ म्हो० ॥ ६ ॥
गोरी म्हारी, वणी वणी रा सब लोग, विगड़्यो आंख चुरावे है, म्हो० ॥
गोरी म्हारी, देवे ना एक छदाम, ताना और सुनावे है, म्हो० ॥ ७ ॥
गोरी म्हारी, दुख मे धीरज धार, ए दिन पिण बह जासो है, म्हो० ॥
गोरी म्हारी, स्वारथियो ससार, मेणियो पछै सुणासो है, म्हो० ॥ ८ ॥
गोरी म्हारी, मतना मुझे डिगाव, लाभ नाही सुणलीजे है, म्हो० ॥
गोरी म्हारी, कर्मों रो है स्वभाव, ध्यान उणी पै दीजे है, म्हो० ॥ ९ ॥

- दोहा वाजिद री राग में -

हां रे सुन बोली, हे नाथ ! वात क्या कर रहे।
हा रे सगो सगों रो साथ सदा ही दे रहै।।
हां रे करो परीक्षा राज ताज शिर माहरा।
पीयर केरो प्रेम होवेगा साहरा ॥ १ ॥
हां रे मत कर जिद हक्कन्हाक माजनो जावसी।
हा रे तूं गिण दे - दे गांठ कोडी नही पावसी ॥
हां रे तुज मन राखण हेतु जावूं मैं सासरे।
हा रे फिर दीजे मत दोष रहै धन आसरे ॥ २ ॥

ढाल ६ ठी ॥ तर्ज- लावणी० ॥

जब सेठ चल्यो ससुराल आप उपवासी २।
वनिता मोदक च्यार बनाया खासी ।
होसी पारणो पथ कंथ परकासी २,
क्यो करे प्रिया तूं फिकर होनी हो जासी ।। १ ।।
टार सकै कुण ओर गौर तू कर रे २,
ओ धन्य धन्य है सेठ धीरज को घर रे ॥ टेर ॥
पाणी पात्र पिण साथ कोथलो साथे २,
ओ पैदल चाल्यो जाय इशारे माथे।
जीवन मे यो जोग प्रथम दिखलाते २,
पिण अजस रत्ती मात्र नही वे लाते ।।
कांटे भागे रेत लगे ठोकर रे ॥ ओ० ॥ २ ॥
दिन-भर चाल्यो खूब थक्यो अनपारी २,
भूखो प्यासो साथ नही असवारी ।

अस्त होत दिन-नाथ रात अँधियारी २,
वो पौषो दीनो ठाय भाव शुध धारी ।
भूले सम्यक् ज्ञान शान्त-रस सर, रे ॥ ओ० ॥ ३ ॥
सूर्योदय के होत पौषध-व्रत पारी २,
कीवी समायिक शुद्ध दोष सब टारी ।
नोकारसि उपरान्त धोवन कर त्यारी २,
करण पारणो, मोदक काढे व्हारी ।
दान दियो बिन करूं असन कीकर रे ॥ ओ० ॥ ४ ॥
हे प्रभो ! दास का नियम आजलो रक्खा २,
मैं सत्य धर्म का मजा खूब ही चक्खा ।
हे कृपानाथ ! इण टेम देवो मत धक्का २,
कृपा आपकी होत नियम रहे पक्का ।
'मिश्री' सम या टेर सुनी जिनवर रे ॥ ओ० ॥ ५ ॥

ढाल ७ मी ॥ तर्ज— जी रे गाडी खड़ो रे गुजरात री० ॥

जी रे जितरे तो जघा-चारण मुनिवरू,
जी रे मास खमण तप वारू हो ।
अभिग्रह दिल धारियो, तपस्या को पौषो करियो,
सामायिक करने आवे सामने ॥ १ ॥
जी रे च्यार मोदक व्है पल्ले बाँधिया,
जी रे च्यारो स्कध पालन-वारो हो ।
इमरत-सी बोली, प्रतिज्ञा पूरण हो-ली,
तो ले गोचरिया करसूं पारणो ॥ २ ॥
जो रे गगन-गति सूं हेठा आविया,
जी रे चाली जतनों री ज्यारी हो ।

धर्मों रा धोरी, मोह ममता ने मोडो,
गयवर-सा मलपत श्रावक भालिया ॥ ३ ॥
जो रे हर्ष्यो हियडा में हद-बिन सेठियो,
जो रे सनमुख दौडी ने आयो हो ।
स्तवना कर भारी, लायो निज स्थान तिवारी,
अभिग्रहधारी मुनि कियो पारणो ॥ ४ ॥

* दोहा *

चारो मोदक दान में, दिये सेठ गुणवंत ।
सत संचरया व्योम मे, सेठ लियो निज पंथ ॥ १ ॥
आयो उत्सुक होय ने, निज सासर की पोल ।
धुर मिलिया वरा रा पिता, ओलख लिया अडोल ॥ २ ॥

ढाल ८ मी ॥ तर्ज— दादरा ॥

धन रो मिजाज मत राखो रे जिगर मे,
राखा रे जिगर मे, पड़ोला डगर में ॥ धन रो० ॥ टेर ॥
धन तो बनावे गेला साथ नही देला,
भेला भा कमाया तो भी देवे ना जगर ने ॥ १ ॥
धनवानो ने लागे नही शिक्षा,
कौन जगावे कोड सूतोड़ा मगर ने ॥ २ ॥
दान पुन सामायिक पौषा नहि होवे,
सुगुरु दर्शन नही करे रे फजर मे ॥ ३ ॥
मात, तात, भ्रात, बेटा, भानजो ने भायला,
लोभीडा रे एक नही आवे रे नजर मे ॥ ४ ॥
गरीबो सूं जोड़े माया खून व्हाँरो चूंसकर,

तो भी म्हाँ सूं डोडा चाले गेद री गजर मे ।। ५ ।।
धन रा नशा मे सेठ जमाइ न जाणियो,
वाणियो वण्यो है पक्को छातीरो वजर में ।। ६ ।।
मुजरो जमाई कियो हाथ दोनो जोड़कर,
सेठ ने मालुम जद हुइ रे हजर मे ।। ७ ।।

ढाल ९ मी ।। तर्ज–हां सगीजी ने पेड़ा भावे० ।।

हाँ सेठ बोल्यो है तडको, भूत खईश जिसो वो भिडको ।
बिन जोगी वो बात कही, बिजली-सो कडको रे ।। सेठ० ।। टेर ।।
भला जनमिया थे निर्भागो, पूंजी सारी मारग लागी ।
दाग दियो थे सात पीढी ने, वण्या निरागो रे ।। सेठ० ।। १ ।।
बुरा दिखावण क्यो इत आया, आछा सारा लोग हँसाया ।
दान पुन्न ए कीधोडा, काइ आडा आया रे ।। सेठ० ।। २ ।।
कहे जमाई मैं नहिं खाई, किणरी पूंजी मैं न डुबाई,
मेणी री काइ वात, रहै किम एह रखाई रे ।। सेठ० ।। ३ ।।
मैं नही आतो लाखो बातो, काम चलाऊं मैं खुद हाथो ।
तो भी तनया तोरी भेज्यो, आधी रातो रे ।। सेठ० ।। ४ ।।
रकम उधार सहायता कारण, मैं आयो छूं सुनिये वारण ।
चारण-सी नही चाह, खुशामद करूं न धारण रे ।। ५ ।।

– दोहा –

जावो आप दुकान पै, मैं आवूं वन जाय ।
म्हो सूं जो भी वनसक्यो (तो) देसूं काम वनाय । १ ।।

ढाल १० मी ।। तर्ज– किमपै तूं गुमराया रे० ।।

स्वारथियो ससार, भरोसो क्या भाई ।

गर नहिं हो इत्तवार, देखलो अजमाई ॥ टेर ॥
चलकर आया खास दुकाने, आदर कुछ भी मिला न व्हांने,
विन पैसे किसको पहिचाने,
कुन करे सार सँभार, भले हो जमाई ॥ स्वा० ॥ १ ॥
नीव-तरू-तल वैठक खाना, व्हाँ पै श्रावक आसन ठाना।
नही कोई उसको वतलाना,
है पैसे का प्यार अरे दुनियों माई ॥ स्वा० ॥ २ ॥
इतै सेठजी स्वय पधारे, लड़कों से वो सलाह विचारे।
आया जमाई घरे अपोरे,
पूँजी दिवी विगार, भेजा है यहाँ बाई ॥ स्वा० ॥ ३ ॥
मदत इसे देनो या नाही, जा इच्छा सो दो वतलाई।
सुन लड़को ने कीवी मनाई,
नही देने मे सार, कहे च्यारो भाई ॥ स्वा० ॥ ४ ॥
जार, जमाई, जाट, भानजा, रेबारी, सोनार, नागजा।
नट, भट, जूवावाज, झूठजा,
नहिं माने उपकार, कहा नीती माही ॥ स्वा० ॥ ५ ॥
घर का धन सब हाथो खोया, आगा पोछा कुछ नहिं जोया।
यहाँ पै अब आकर के रोया,
देंगे सो कर छार, माँगेगा फिर आई ॥ स्वा० ॥ ६ ॥
सेठ कहे सच्चा है कहना, देने से उलटा दुख लेना।
चुप्प चाप होकर के रहना,
चला जासी निज द्वार, टाल मिश्री गाई ॥ स्वा० ॥ ७ ॥

— दोहा —

तात, जात की वारता, सुनकर खास मुनीम।

हृदय वेदना अनुभवो, हहो ! स्वार्थ निस्सीम ।। १ ।।
पटक्या कूँची चौपडा, लो सभालो सेठ ।
अहल गमाया हूं दिवश, करके तोरी वेठ ।। २ ।।
गजा शीश सँवारना, करे क्लीव का व्याह ।
वैसे शाहा पद आपको, टुक शोभे है नाह ।। ३ ।।

ढाल ११ मी ।। तर्ज– घुड़ला री० ।।

सेठों !, तजो मिजाज, ओ नही रेवेला जी २ ।।टेर।।
लाखीणो लायक नर आयो, वड़ो पावणो मन मे भायो ।
जिसकी रखो न लाज, जगत कही केवेला जी २ ।। १ ।।
थाँ सरखा नौकर था व्हांरे, केइ पेट भरता घर लारे ।
आज न रह्यो अनाज, खर्च किम स्हेवेला जी २ ।। २ ।।
साज देवणो वाजव थाँने, जटे न भोजन पुरस्यो भाणे ।
निदेला सव लोक, धिकारा देवेला जी २ ।। ३ ।।
कुलदेवी ने पूछ लिरावो, वा केवे उतनो ही दिरावो ।
वाँधो प्रेम को पाज, नाम जग रेवेला जी २ ।। ४ ।।
बडो गिनायत घरे पधारे, वात समय की हृदय विचारे ।
यह है पहिला काज, वुद्धि से वेवेला जी २ ।। ५ ।।

– दोहा –

जची वात मन सेठ के, बैठो जा सुरी थान ।
चोखे चित सूं पारियो, एकासण तस ध्यान ।। १ ।।

ढाल १२ जी ।। तर्ज– पनजी मूंडे वोल० ।।

अम्वा आई रे २, आ आधी -रात रा सेठ वुलाई रे० ।। टेर ।।

हुयो चाँदणो, गयो अँधारो, दिव्य रूप दरशाई रे।
सेठ ऊठ कर पाँवो पडियो, शीश झुकाई रे॥ अम्बा० ॥ १ ॥
सुरी कहे क्यो याद करो मुज, अड़चो काम कंइ आई रे।
पिण सुणले पुनवानी थारी, गई विलाई रे॥ अम्बा० ॥ २ ॥
पूँजी पेला विले लागसी, इज्जत रेगी नांही रे।
सेठ सुणी थर थर तब धूज्यो, (आ) कई फुरमाई रे॥अम्बा०॥३॥
मैं तो आप - भरोसे झूँ झूँ, सदा रह्या वरदाई रे।
कोप करो मत, झिल्यो न जावे, सेवक ताई रे॥ अम्बा० ॥ ४ ॥
माता मो - पर महर राखिये, बालक जाण सदाई रे।
"मिश्री" कहे दिन नहिं तेरा, – कौन सहाई रे॥ अम्बा० ॥ ५ ॥

* दोहा *

कर न सकूँ मैं मदद कुछ, पुन्य गया परवार।
तो भी एक उपाय है, करले धर कर प्यार॥ १ ॥

ढाल १३ मी ॥ तर्ज- अस्सी रुपैया ले कलदार० ॥

आयो जमाई करले सार, तो बना रहेगा कारोबार॥ टेर॥
चार व्रत मारग मे देखो, निपजाया सेणो सरदार॥आ०॥१॥
सामायिक, उपवास और सुन, कर पौषध दियो दान उदार॥अ०॥२॥
अशुभ दिहाड़ा पूरा होग्या, अब हो जासी जय जयकार॥आ०॥३॥
याते चौथो हिस्सो उससे, कर नरमाई ले ले सार॥आ०॥४॥
जो दे देवे सो भाग्य योग से, तो सुधरे थारो जमवार॥आ०॥५॥
इतनी कहि देवी गइ पाछी, रात गई ऊगो दिनकार॥आ०॥६॥
ध्यान पार 'मिश्री' घर आयो, भेलो हुवो सभी परिवार॥आ०॥७॥

० दोहा ०

कही सेठ पुत्रों-प्रते, देवी हुंदी वाय।
सब कहे दे दो तातजी!, भय मोटो दरशाय॥ १॥

ढाल १४ मी॥ तर्ज- म्हारे घरे पधारो जी २, ३॥

श्रावक जी बेला को पौषो, पाल समायिक ठाई।
बेनोई बोलावण सारू, आया च्यारो भाई॥ १॥
जल्दी घरे पधारो जी क, जल्दी घरे पधारो जी क।
भाभोसा जोवे वाटडलो, म्हाँ, अर्ज गुजारो जी॥ टेर॥
सामायिक आणे सूं कपडा, -पहिन साथ मे जावे।
सुसराजी सूं करके मुजरो, ऊभोड़ा फुरमावे॥ जल्दी०॥ २॥
क्या आज्ञा है राज प्रकाशो, श्वसुर कहे तिणवारी।
जितरी रकम आपरे च्हावे, ले जावो इणवारी॥ जल्दी०॥ ३॥
मूंगा मोला आप पाहुणा, बाई लाडकी म्हारे।
इण घर मे है सीर ठेठरो, दूजा थांरे लारे॥ जल्दी०॥ ४॥
एक अर्ज है म्हारी आंने, मन्जूरो कर लीजो।
लाभ लियो मारग मे उणरो, चौथो हिस्सो दीजो॥ जल्दी०॥ ५॥
श्रवण करत जिनदास नयन मे, इकदम लाली छाई।
नहिं बोलण रो फेम सेठजी!, आ काई फुरमाई॥ जल्दी०॥ ६॥
भोजन भक्ती करी न तिल भर, नहिं दीधो सम्मान।
उणरो अमरष मैं नहिं आण्यो, सूंप्यो नही मकान॥जल्दी०॥ ७॥
हद करदोनी धर्म-वेचणे, मुजने करो तैयार।
रंग! बढाओ म्हारो माजनो, है थाने धिक्कार॥ जल्दी०॥ ८॥
म्हारे धन री नही चाहना, गाढो करने राखो।

आ नही ह्वै, कगाल हो जावो, बोया रा फल चाखो ।।जल्दी०।।९।।
'मिश्री' कहे यो मोटो मानव, इतनी कह कर चाल्यो ।
धर्मवीर धीरज मन धारो, रह्यो न किनको पाल्यो । जल्दी०।।१०।।

— दोहा —

तीखे मन तेलो करी, जाय जमाई जाम ।
आडो फिरियो आयके, वह मुनीम तिण ठाम ।। १ ।।

ढाल १५ मी ।। तर्ज– मत भूलो कदा रे, मत भूलो कदा० ।।

म्हा पै महर करो २, रुको थोडासा हुकारो भरो ।। टेर ।।
घरे पधारो दास पिछान, पारणो कर, करजो प्रस्थान ।।म्हाँ०।।१।।
आप लायक तो छूं नही सेठ, तदपि भोजन की लेवो भेंट ।।म्हा०।।२।।
करे जिनदास अर्ज मतिमान, तेला रा कीना है पचखान ।।म्हा०।।३।।
जिणसूं माफी दो बगशाय, धर्म - राग भरियो मन-मांय । म्हा०।।४।।
हुई मुनीम री आली आंख, जावतडो ने न सकियो झाँक ।।म्हाँ०।।५।।
तज मुनिमायत स्वय दुकान, खोल लिवो इसडो गुणवान ।।म्हा०।।६।।
चल्यो जिनदास निजी गृह ओर, साँझ समै आयो उण ठौर ।।म्हा०।।७।।
पौषो कर सूतो जिनदास, 'मिश्री' धर्म सब पूरे आस ।।म्हा०।।८।।

– दोहा –

पौषध पारी सरस-मन, दी सामायिक ठाय ।
शक्राधिप निज ज्ञान से, देख्यो श्रावक ताय ।।१।।

ढाल १६ मी ।। तर्ज– सूरों ने लागे वचनों रो ताजणो० ।।

सुरपति अवलोक्यो दृढ श्रावक भणी, देव सभा मे दाख्यो हाल ।

कठिन करणी नें रहणी एकसी, दानी निर्मानी परम कृपाल ।।१।।
धन धन धन जीवन, विरला वसुधा मे श्रावक एहला ।। टेर ।।
विकट स्थिति मे अधुना आगयो, तदपि व्रत पाले निरतोचार ।
हिरणगमेषो जावो शीघ्र ही, सेवा वजावो घर कर प्यार ।।२।।
अवसर मत चूको, इसड़ी सेवा तो मुश्किल सूं मिले ।। टेर ।।
वचन स्वीकारी सुर उत पौंचियो, आई सामायिक पैरचा वसन्न ।
खाली हाथो सूं जो घर जावसूं, विलखो हुयजासी वनिता मन्न ।।अ०।।३।।

— कवित्त —

घर से रवाने जब हुवो थो सासर ओर,–
नारी को कथन धार करी नही देर मै ।
पौंच्यो उत, करतूत देखलो उठारो सब,
मान नही दियो पिन छाय रयो जैर मैं ।।
खाली हाथ जासूं घर बालक निरास होगे,
कामनी करेजे दुख होसी हिये हेर मै ।
अशुभ करम जोर तापै नही चाले म्हारो,
एक ना उपाय सूझे अहो! इण वेर मे ।। १ ।।

— ढाल–चालू —

ककर री ग्रथी वाधी सेठजी, चालत सुर शक्ती कर के ताम ।
अधर पहुंचायो घर रे सन्मुखे, इतनो कर सुरवर जावे ठाम ।।अ०।।४।।
वनिता विलोकी आई साम्हने, सेठ झेलाई ग्रथी हाथ ।
भोजन पेली ग्रन्थी मत खोलजो, दूजी मजिल मे सूतो साथ ।।अ०।।५।।
वनिता विचारी ग्रन्थी देखली, रत्न पचरगा सब अनमोल ।
सारो घर लूंटी लाया सेठजी, दया आणी नही हियडे तोल ।।अ०।।६।।

देणो ओलम्भो भोजन बाद मे, रत्न कुँवर ने देकर एक।
वेचण भेज्यो है पास मुनोम रे, देखो मुनीमजी कियो विवेक ॥अ०॥७॥

— दोहा —

किसो कुँवर पुनवान है, जिसो न और जहान।
इसो रत्न घर में मिले, विसो न देख्यो आन ॥ १ ॥

ढाल १७ मी ॥ तर्ज— वीरा! लूम्बा झूम्बा होय आइजो० ॥

कुँवरसा! रत्न ले जावो, पाछो आ अरज करावो जी ॥ टेर ॥
नही सौदागर है इसड़ा, यह रत्न खरीदे जिसडा जी ॥कुं०॥१॥
कोई वड़ो सेठियो आसी, वो इणरो मोल चुकासी जी ॥कुं०॥२॥
कहे लाल रत्न यही रखना, है आप जुम्मे ही विकना जी ॥कुं०॥३॥
भोजन समान भिजवाना, नही देर जरा करवाना जी ॥कुं०॥४॥
मैं भेजूँ आप पधारो, मूनीम कहे घर प्यारो जी ॥कुं०॥५॥
सामान आया मन च्हाया, सेठानी भोजन वनाया जी ॥कुं०॥६॥
जा लाल! तात ले आवो, भोजन ठण्डो न करावो जी ॥कुं०॥७॥
यह ढाल सतरमी सागे, कहे 'मिश्री' सेठ-सा जागे जी ॥कुं०॥८॥

— दोहा —

पुत्र, पिता असनालये, आय गये अविलम्ब।
ठाठ देख भोजन तणो, आयो अधिक अचम्ब ॥१॥

ढाल १८ मी ॥ तर्ज— ना छेड़ो गाली दूंगी रे० ॥

आ कर रहो क्या सेठानी २, इसको नहिं जरा विचार ॥ टेर ॥
ये कर्ज पराया लाती, मुजको यह माल खिलाती,
नहिं वापिस देन सँगवातो रे, कुण कैसो मुज साहुकार ॥ये०॥१॥

भोजन कर देना ठपका, यह सहूर सीखा है कब का,
है देना पराया अबका रे, मुझे बचा बचा किरतार ।।ये०।।२।।
भोजन के बाद भवानी, वा पूछ रहो मृदु-वानी,
पीहर से क्या सहनानो रे, मुज लाये हो भरतार ।।ये०।।३।।
गठरी मे माल घना है, वो दोना प्रेम सना है,
सब चाहू जना जना है रे, तुम्हे माने हिय के हार ।।ये०।।४।।
सुन बोला सेठ सुज्ञानी, नादान बनी सेठानी,
गठरी पै यह इठलानी रे, इसमे है ककर भार ।।ये०।।५।।
इसके जु भरोसे कर्जा, करके क्यो चाहती हर्जा,
मैं कई दफे तुझे वर्जा रे, नही रखती ख्याल लिगार ।।ये०।।६।।
नही सुना आजलो ताना, निज गौरव रखा सयाना,
क्या दिल मे तैने ठाना रे, हो पति - भक्ता तूं नार ।।ये०।।७।।

– दोहा –

प्यारी पटकी पोटली, प्राणेश्वर लो पेख।
तात दियो धन एतलो, ओलम्बो नही एक ।। १ ।।
जीवन मे जाणी नही, कपट भरी तव प्रीत।
विस्मय है इण बात रो, आज अनोखी रीत ।। २ ।।

ढाल १६ मी ।। तर्ज– गिणगोर री० ।।

प्यारी म्हारी, पीहर ऊपरे इतना मतना पसरो जी।
इतना मतना पसरो म्हारी करी फजीती सुसरो जी ।। टेर ।।
टको एक दीयो नही लाडी !, आडी बातां काडी जी।
सूवण ने नही जगा समर्पी, आंखो दूणी चाडी जो ।।प्या०।।१।।
लोटी भर पाणो नही पायो, भोजन री काई आशा जी।

म्हारो धर्म खरीदण च्हायो, इसड़ा किया तमाशा जी ।।प्या०।।२।।
हाथो थारे भोजन जाम्यो, तेलो कर मैं आयो जी ।
पाछो पारणो अठे आयने, थारे आँगण पायो जी ।।प्या०।।३।।
थाने राजो राखण खातिर, कंकर बांधी लायो जी ।
धर्म प्रतापे रत्न बण्या है, वीतक तुम्हे सुणायो जी ।।प्या०।।४।।
साचो मान अथवा तूँ झूठो, मैं मिथ्या नही भाखी जी ।
शासन - रक्षक देख देवता, बात अपोरी राखी जी ।।प्या०।।५।।
सत्य मान सुन्दर कर - जोड़ी, माफी पियु से मागी जी ।
धन्य धन्य है धर्म आपरो, धन्य धर्म रा रागी जी ।।प्या०।।६।।
बिन आज्ञा मैं गठरी खोली, एक रत्न ले लीनो जी ।
लाल संगाते मुनीमजी को, रत्न अमोलख दीनो जी ।।प्या०।।७।।
सभी बात का आनन्द होग्या, कारोबार बढ़ायो जी ।
दान प्रतापे सेठ स्हाब रो, सुयश सूर्य सम छायो जी ।।प्या०।।८।।
सारो देश नगर गुण गावे, मिश्री मुनि दर्शावे जी ।
आखिर धर्म का फल है मीठा, आगम स्पष्ट सुनावे जी ।।प्या०।।९।।

* दोहा *

दिन पलटत देर न लगे, निश्चय लीजो मान ।
तीन दशा इक दिवस मे, सूरज तणी सु-जान ।। १ ।।
विद्या तन धन जन पुनी,–होय राज्य को जोर ।
टरे न रेखा कर्म को, करलो युक्ति करोड़ ।। २ ।।

ढाल २० मी ।। तर्ज– ख्याल की० ।।

कर्मों रो झोलो, इकदम आवे है टाल्यो ना टले ।।कर्मों०।।टेर।।
श्रावकजी रे सासरे स - रे, बनी अनोखी बात ।

चोर खजानो नृपनो चोरयो, आकर आधी रात जी ॥क०॥१॥
वो धन सूंप्यो सेठ ने सरे, चौडे हुआ दिन चार।
राजा, घर धन जब्त कियो अरु, दीना बार निकार जी ॥क०॥२॥
तस्ती दीनी आकरी सरे, गहणा, कपडा खोस।
हुकम नही कोई भी रखणे रो, नृपनो पूरण रोष जी ॥क०॥३॥
अन्न रो आखो नही आसनो, कित वाहन री बात।
भूखा प्यासा घणा उदासी, बारे जावे साथ जी ॥क०॥४॥
सोचे सभी कठीने जावां, सहारो रह्यो न एक।
बाई सूं मिल आधा जासों, शल्ला करी सब छेक जी ॥क०॥५॥
शहर म्हार श्रावक नी कोठी, सन्मुख मारग चाले।
हीनावस्था सासरियो की, नयनो सेठ निहाले जी ॥क०॥६॥
महदाश्चर्य? अहो! मन सोची, दौड़ अगाड़ो आया।
आवो, पधारो, मत शर्मावो, थे म्हारे मन भाया जी ॥क०॥७॥
देख लायकी जामाता की, लाज्यो सब परिवार।
शाले समय हृदय मे 'मिश्री', एह वीसमी ढार जी ॥क०॥८॥

— दोहा —

कर खातर, बहु मान दे, अपर हवेली मांय।
डेरा सर्व दिराविया, वस्त्राभूषण ताय ॥ १ ॥
भोजन भक्ती करण हित, भामिन से कहि भौन।
सा कहे है किण काम का, दो दाधा पर लोन ॥ २ ॥

ढाल २१ मी ॥ तर्ज– मास खमण रो मुनि रे पारणो० ॥

पागलपनो प्यारी तूं कर रही रे, थारो तो नियम रही है भूल रे।
वातो छोटी तो मन सूं वीसरो रे, सूलो पर खूब बिछावो फूल रे ॥१॥

उत्तम मानव रो उत्तम भावना रे, ओछापन दिल में आणो नायरे ।। टेर ।।
बाई जीमायो सारा साथने रे, आखिर सुणायो यो सन्देश रे ।
दिन ओ सुपना में थाँ जाणियो रे, पिण पायो है कर्मो कर पेस रे ।।उ०।।२।।
मान अणू ँतो कांइ कामरो रे, सोचोनी हृदय बीच खचोत रे ।
खावो खर्चो ने नीती न्याय सू ँ रे, धन्धो करोनी होय न चीत रे ।।उ०।।३।।
सारा सज्जन तो माफी माँगलीरे,नवलो तिण पुर ही कियो निवासरे ।
धर्म ओलखियो बाई - योगथो रे, सारों रे वर्ते लील विलास रे ।।उ०।।४।।
भार सम्भलायो श्रावक पुत्रने रे, दम्पति आतम-ध्यान रमाय रे ।
सुर पद पाया परम प्रमोद सू ँ रे, मुक्ति महाविदेह मे जाय रे ।।उ०।।५।।
कथा सुरंगी श्रावक धर्म पै रे, निर्मित कीनी तर्ज इकीश रे ।
लेश्या राशो ने नभ दृग वर्ष में, अगहन तेरस शुकल रवोश रे ।।उ०।।६।।
सुगुरु श्री बुधमल कृपया लही रे, ठीकर वास देश मेवाड़ रे ।
शुकन कथन सू ँ 'मिश्रीमल मुनो' रे, जिनवर आज्ञा शिर पै चाड रे ।।उ०।।७।।

– कलश –

वीर आज्ञा युक्त करणी किया ह्वे कल्यान ए ।
तजो आलस उद्यमी बन धरो आतम ध्यान ए ।।
पूज्य श्री रघुनाथ जी के गच्छ में मणि माल ए ।
सुगुरु श्री बुधमाल मेरे परम पूज्य दयाल ए ।।१।।
शाति, काति रु जय विजय सुख वर्त्ते सौभाग ए ।
देव, गुरु पुनि धर्म ऊपर रखो सुन्दर राग ए ।।
मेदपाट विख्यात भूमी वीर - रस से है भरी ।
'मिश्रिमल-मुनि' निर्भयो यह चौपई है ऊचरी ।।२।।

कहो सो करो

– कहो सो करो –

– दोहा –

वीर प्रभु के चरण मे - वन्दन हो शतवार।
पद्म शंख परिचय रचूं - सुनिये! धर कर प्यार ।।१।।

– तर्ज– राधेश्याम –

विश्व - विजेता वही पुरुष , जो कह के कर-दिखलाता है।
सुख, दुख, संपद, विपद अनेको, सह कर नियम निभाता है ।।
धन्य वही इस धरा धाम पर, जन्म सफल कर जाता है।
समय समय पर लोगो को , वह सदा याद ही आता है।। १ ।।
एक, कहे पर करे न कुछ भी , बक बक थूक उडाता है।
औरो का अपवाद करे , नहि भला किसी का चहाता है ।।
अजा-गल-स्थन-सम वह तो हा ! नर-तन वृथा गंवाता है ।
तदपि मूढ !- अपने हि आपके , मुख से गुन को गाता है ।। २ ।।
इस पर एक कथा सुनलीजे , आलस नीद उडाकर के।
सार बात को हृदयंगम कर, मन को वश मे लाकर के ।।
वणिक एक था मोहनपुर का , दुख दरिद्र से घबराया।
भटका देश विदेश बहुत पै पैसा एक नही पाया ।। ३ ।।
हीन दीन दुख क्लीन म्लान मुख हुआ रु हिम्मत टूट-गई।
चारो ओर निराशा छाई, पुण्य - दशा सब खूट गई ।।
फांसी खा मरना चाहा जब, सन्त एक गहर - वासी।
कहे मूढ ! इस आत्म - घात से, मरकर तूं नरको जासी । ४ ।।
भगवन् ! मैं तो दुखागार हूं, नही किसी का प्यारा हूं ।।
पशुवत् जीवन बीत रहा है, घर से हीन, अवारा हूं ।।

सन्त कहे मैं सुखी बनादूँ, ज्योति जगाले जीवन की।
देव गुरु पै श्रद्धा दृढ कर, जिन-वानी रस पीवन को॥ ५॥
दिया हाथ मे शख उसी को, माँगेगा सो पावेगा।
देश, जाति अरु धर्म कार्य मे, गर तू हाथ वढावेगा॥
खाना पीना मौज उडाना, किन्तु पाप से वच जाना।
कभी न टोटा आयेगा जो सदुपयोग मे लगवाना॥ ६॥
लेकर चला शहर इक आया, द्रव्य शख से माँगा है।
घन का ढेर देख कर राजी-मन हो मारग लागा है॥
दर्जी से कपड़ा, सोनी से-जेवर सुन्दर वनवाया।
बन मद मस्त चढा घोड़े पै, शहर देखना मनभाया॥ ७॥
बड़ी ठिगोरी, औगुन-ओरी, वैश्या ने ललचाया है।
दासी भेज उसे अपने ढिग, आदर से बुलवाया है।
हाव भाव अरु नृत्य गीत से, विषय फाँस मे फाँसा है।
उसकी संगत करने से फिर, बचने की क्या आशा है॥ ८॥
दे मुद्रा नित शख पाँच-सौ, भोगो मे मसगूस बना।
मात तात स्त्री धर्म जाति को, भूल आक का फूल बना॥
मासान्तर वैश्या ने सोचा, द्रव्य कहाँ से लाता है।
इधर उधर नहिं जाता तोभी, धन का ढेर लगाता है॥ ९॥
एक रोज मन मोज खोज कर, बड़े प्रेम से पूछ लिया।
कामान्धी पागल बन उसने सच्चा भेद बताय दिया॥
अधिक नशा मे फँसा देखि, वह सच्चा शंख चुरायलिया।
नकली रखा जेब मे दुष्टा, पातर-प्रेम दिखाय दिया॥ १०॥
एक नही, लाखों इस फन्दे, फंस नर निज घर नष्ट किया।
रंग पतग समान जान फिर, कैसे जुडता सभ्य जिया॥
प्रात शख से मुद्रा माँगे, किन्तु कोडी मिली नही।

डोडी बन तब डयोढ़ी बाहिर, दिया निकाल न रखा वहीं ॥११॥
होकर के कंगाल भटकता, शीश पटक कर रोता है।
कहे किसे अरु सुने कौन अब, मुख अँसुअन से धोता है॥
भूखा प्यासा और रखड़ता, उसी सन्त पै है पौंचा।
है धिक्कार, रत्न तूं खोया, निर्लज पहले नहिं सोचा ॥१२॥
खैर, ध्यान आयन्दा रखना, एक उपाय बताता हूं।
फिर रहना हुँशियार सोचले साफ साफ जतलाता हूं॥
दूजा शख झेलाय दिया अरु, युक्ति उसे कहदी सारी।
वापिस लौट आगया सत्वर, वो वैश्या के आगारी ॥१३॥
सूर्योदय होते ही उसने, दधि-सुत से मुद्रा मांगी।
मांगे जिससे दूनो दे यह, तक वैश्या देखन लागी॥
कितना भाग्यवान नर यह है. वस्तु अनोखी लाता है।
नाहक इस से वैर वसा के, तोड़ा सुन्दर नाता है ॥१४॥
चली महल से पड़ी चरण आ, गदगद होय कहे वानी।
नाश जाय इस दुष्ट नशे का, प्रेमदूध डारो वानो[1]।
सौगन खा, सच्ची कहती हूं, जब से राज पधारे हैं।
अन जल मैंने लिया नही, अरु दिल मे जले अगारे हैं॥१५॥
करुणा कर मुझ महल पधारो, जीवनभर की दासी हूँ।
और मुझे कुछ भी नहिं चाहिये, केवल दर्शन-प्यासी हूं॥
अच्छा अच्छा सुनले प्यारी!, मैं तेरे से दूर नहीं।
क्यो रोकर दुख पाती है. मैं चलता हूं जरूर वही ॥१६॥
महल गये, कर भोजन, सूता, कपट नीद की चादर है।
गणिका भी कम बोली कब से, बिना कपट की वादर है॥
पहला शख जेब मे रख कर, नूतन लिया निकारी है।
बना काम वो जान महल से, नर निकला तत्कारी है ॥१७॥

---

१ राख

सीधा अपने सदन गया आनद मे दिवश बिताता है।
दे सहायता सबको सादर, जीवन धर्म दृढाता है ॥
अवर शख से उस वैश्या ने, माँग द्रव्य की करडारी ।
माँगे जिससे दूना कहता, माँग माँग वो गइ हारी ॥१८॥
बस, इतना ही दे दो जरदी, ज्यादा चाहूं मैं नाही ।
शख कहे मैं कुछ नहि देता, कहता हूं केवल बाई ! ॥
दोय तरह का शख सयानी !, पहला पदम - शख मानो ।
जो माँगे वह देता निशदिन, वर्षालू बादर जानो ॥१६॥
दूजा डफोल - शख कहलाता, कहता पर देता नाही ।
पदम - शख को वो ले भागा, डफोल शख मैं हू याही ॥
सुनकर यो पछताती वेश्या, सब खेल विगाडा हाथो से ।
सच्चा माल हाय मैं खोया, विलम व्यर्थ की बातो से ॥२०॥
मतलब इसका समझो मित्रो !, मानवता का पाठ पढो ।
कहो उसे करडारो पूरा, उन्नति के तुम शिखर चढो ॥
करना धरना है ना कुछ भी, बढ - बढ बातें करता है ।
डफोल शख - सा दानव-नर है, पाप पोट शिर धरता है ॥२१॥
सुन्दर समय मिला है मित्रो !, देव गुरू को अपनाओ ।
उनकी शिक्षा पर चल करके, सत्य धर्म मे रग जाओ ॥
तन धन यौवन की आँधी मे, अयि पछी मतना भटको ।
दान शील तप भाव प्रभावे, भरलो भव्यो ! निज घट को ॥२२॥
मानो मत दुनियाँ है अपनी, यह तो रैन बसेरा है।
जगो, भगो निज पथ सँभालो, हो गया खास सवेरा है ॥
गया वख्त नहि मिलने का है, जिसका चिन्तन क्यो न करो ।
सफल करो नर तन सुकरत कर, भव-सागर से शीघ्र तरो ॥२३॥
दो हजार-छव्वीस अब्द का, द्वितीयाषाढ कृष्ण जानो ।
ग्यारस गुरु शुभ योग जवालो. यह अधिकार बना मानो ॥
श्री बुधमल गुरुदेव हमारे, इष्ट देव हैं श्रेष्ट वही ।
'मुनि मिश्रामल' कहे धर्म से, आनन्द मगल होय सही ॥२४॥

स्त्री कपट की खान है

स्त्री-कपट की खान है

— तर्ज-राधेश्याम की —

मंगल मयी जिनेश्वर वाणी सदा हृदय मे स्थान करे,
होय तत्व का निर्णय जिससे भव सागर से शीघ्र तिरे।
नारी नही प्यारी है किसको नाधिन कारो कपट भरी,
कथा सुनाउ सुनलो सारे निद्रा विकथा दूर हरी ॥ १ ॥
अंग देश मे चम्पा नगरी अमरा पुरी ओपम छाजे।
महासेण नृप न्याय निपुण है अरि-करिहित हरि ज्यो गाजे,
एक दिवस गये वन खेलन को सुन्दर घोडे चढ़करके
काष्ठ काटता इक कठियारा राजा उसे देख करके ॥ २ ॥
सोचे बडा परिश्रम करता यह उद्योगी जीवन है।
दम्पति धूप छाय की परवा करते नही सुदृढ मन है।
सदा सादगी वन ही इसका सच्चा महल अटारी है।
गाना बजाना रग राग तज रहते इच्छा चारी है ॥ ३ ॥
राजा पूछे अयि कठियारा! कहो गुजर कैसे चलता।
वडे मजे से चलता स्वामिन् रामत मे पासा ढ़लता।
कुछ तो अधिक कमाता होगा वाजे वक्ता के लिये कभी।
हां भगवन् हैं कथन सत्य यह कुछ वचता कर खर्च सभी। ॥ ४ ॥
किन्तु उसका चार हिस्से मे बटवारा कर देता हूं।
रखू न एक अधेला निशि में सुख से निद्रा लेता हूं।
सवव यही कहो धन के नसे, मैं पागल नही वन जाऊ।
भीत मालिक की भूल नरक में नर तन हारी दुःख पाऊ ॥ ५ ॥
कैसे हिस्से चार वनाता, मैं भी सुनना चाहता हूं।
देख लिया तू जबर सवर को आश्चर्य मन लाता हूं।

तेरे जैसी होय प्रवृत्ति दुनियों का जीवन सुधरे।
सत्य अहिंसा को अपना के सदानन्दो भण्डार भरे ॥ ६ ॥
एक हिस्सा तो जमा कराता कर्जदार को दूं दूजा।
तीजा हिस्सा पानी मे बहादूं चौथा शत्रु को सूजा।
कठियारे का वाक्य सुना नृप पहेली पै सुविचार किया।
अर्थ जचा नही राजाजी के बऊत मगज पै जोर दिया ॥ ७ ॥
हो हैरान कहै नृप उनसे सही अर्थ मुज समझादो।
और कोई भी नही सुन पावे ऐसे कान मे सुनवादो।
क्या हजूर तमाशा करते मैं तो केवल जगली हू।
आप वडे श्रीमान् नराधिप ! क्या बताऊं बगली हूं ॥ ८ ॥
राजा कहे वक्त पै प्यारे अकल काम आ जाती है।
छोटे बडे की पूछ नही यहा उरज काम ही आती है।
लपक आय के लकडहारा कानो मे सुनवाता है।
सुन कर के मतलब राजा को वडा अचम्भा आता है ॥ ९ ॥
पहिला हिस्सा देता दान मे परभव मे वो पावेगा।
नही देने से हे स्वामी ! कगाल फक्त रह जावेगा।
दूजा हिस्सा है माता का जिसका है ऐसान बडा।
उस कर्जे मे देता हू जो पालन पोषण किया कड़ा ॥ १० ॥
तीजा हिस्सा मोज शोक मे व्यय कर व्यर्थ गमाता हू।
इसिलिये पानी मे डाला सही सत्य सुनवाता हूं।
शत्रु को चौथा हिस्सा दूं वह शत्रु कौन है आप सुनो !
हैं खडी सामने औरत मेरी माना मतना शोश धुनो ॥ ११ ॥
भूप कहै हैं तीन सत्य पर चौथी बिलकुल झूठी है।
मेरी समझ मे कुछ नही आती तेरी अकल अनूठी है।
महा महिम मैं सच कहता हूं नार किसी की बनी नही।

सपत मे रहती है साथ मे विपदा मे भग जात कही ॥ १२ ॥
आगम वेद कुरान कथा मे उदाहरण केइ मिलता है।
ब्रह्मा विष्णु शम्भु सुग सुर त्रिया चरित्र मे भिन्नता है।
जिसने किया भरोसा इसका वह तो दु ख उठाया है।
इसके केवल चले कथन पर घर का भर्म गमाया है ॥ १३ ॥
राजा श्रेष्ठ गिने वनिता को रत्न कुक्षी कहलाती है।
माता की ममता है इनमे अरु क्षमता झलकाती है।
एक बात को सुनले मेरी अर्थ गुप्त यह रख लेना।
चाहे कुछ भी हो जाए पर भेद नही किसको देना ॥ १४ ॥
बड़ा इनाम मिलेगा तुझको अगर किसी से कह डारा।
तो जन्म केद कर डारूंगा यह हानि लाभ सुनले सारा।
राजा अपने महल सिधारे प्रात सभा मे आया है।
सभा सदो से चारो बातो का अर्थ लेन मन चाया है ॥ १५ ॥
उत्तर वापिस मिला नही जब राजा ने फरमाया है।
जो इसका उत्तर देवेगा उसे मिले मनचाया है।
आगे से आगे वह आज्ञा राज सारे में फेल गइ।
इस पहेली की धूम मची पर उत्तर एक मिला न सही ॥ १६ ॥
मास बीतगे खट इस भाति घर घर जन जन मुख-चर्चा।
पुरजन सारे परेशान है बुद्धि का न मिला पर्चा।
कठियारे की नारी सुनकर दौड़ पति पै आती है।
इसका अर्थ बतादो प्रियवर श्री श्री युत मिल जाती है ॥ १७ ॥
वचन बद्ध उस कठियारे ने भेद जरा नही दीना है।
बिलखानन होकर वनिता ने तज दिया खाना पीना है।
आखिर हो हैरान पति ने सारा अर्थ सुनाय दिया।
राज्य सभा मे जा कठियारन बातो का परकास किया ॥ १८ ॥

राजा पूछे कौन वहिन तूं कहां को रहने वाली है।
प्राप्त अर्थ किया तूं किससे कौन ऐसा पुन्य शाली है।
मैं कठियारन हूं महाराजा मम पति तुम से दाखी थी।
कानों मे छाने सुनवाते मैं निगराणी राखी थी ॥ १६ ॥
क्यो बकती है झूठ सरासर क्या मंशा है मरणे की।
सच्चा हाल सुनाती है या आदत टेढी चलने की।
माफ करो अन्नदाता मैं तो तृष्णा वस मिथ्या बोली।
मेरे पति ने मुझे बताया सत्य बात अब मैं खोली ॥ २० ॥
श्रवण करत बन क्रोधित राजा कठियारे को बुलवाया।
हाजिर हूवा हुकम के साथे लेकिन मन मे घबराया।
क्यो बे तेने अर्थ बताया जब कि मैंने दिया मना।
आग्या खडित करी उसी का मजा देख अब करूं फना ॥ २१ ॥
हाथ जोड़ बोला कठियारा नाथ! मेरी भी सुन लोजे।
अनुचित अगर होय तो मुझको बड़ो खुशी से दण्ड दोजे।
षट मासो तक चली लड़ाई मैं ने भेद नही भाखा।
आखिर मरणे पै वह उतरी फिर कुछ छाने नही राखा ॥ २२ ॥
स्त्री, हठ की परवाह रखती है औरो को वह नही करती।
मूल लडाई को है वनिता बे मतलब घर घर लड़ती।
चौथा हिस्सा देन शत्रु को मैंने अर्ज गुजारी थी।
राज बात वो नही मानी थी उल्टी हँसी उडारी थी ॥ २३ ॥
प्रत्यक्ष देखलो पृथी नाथ! मेरे को सकट मे डाला।
स्वारथ विचारी नारी सारी अजब इन्हों का है चाला।
लेती हृदय किन्तु देती ना पूरित कपट ठिगोरी है।
चंचल महा चालाक साफ करूं प्रबल पाप की पोरी है ॥ २४ ॥
जन्म केद मुझ को करवा के घन से आनन्द माना है।

वीतक सभी बताया स्वामिन् । नही रखा आपसे छाना है ।
राजा हर्षानन्द होयकर उसको गले लगाया है ।
धन्यवाद है कोटि - कोटि तुज मेरा हृदय जगाया है ।। २५ ॥
कनक कामिनी का इस जग मे सबसे भारी फन्दा है ।
उपर की लालो पै लाखो लोक हो रहे अन्धा है ।
अच्छा दिया इनाम उसीको राजा जोग रमाया है ।
दे धन स्त्री को कठियारा भी सयम को अपनाया है ।। २६ ॥
कठिन तपस्या करते दोनो आत्म ध्यान मे लीन भये ।
मन को जिसने मारलिया फिर वैरी उसके कौन रहे ।
अक्लबन्दि का यही मजा जो अतर की आखे खोले ।
कर्म भर्म को मेट विश्व मे समता का शर्बत घोले ।। २७ ।।
भेद विज्ञान जिन्होने पाया परम धाम का राही है।
मोक्षालय की मूल्यवान जग अमर जडो भी याही है।
सतगुरु चरण शरण को पाके सदा नन्दी बन जाता है ।
भौतिकता का भूत भयानक कभी न आन सताता है ॥ २८ ॥
केवल ढौंग काम नही आता यह तो ठिगाई ठाली है ।
स्वोदर पूरण को है वृत्ति हुंडो साफ हो जालो है ।
याते भव्यो भलो भावना भावो अवसर आला है ।
परमानन्द परम उपयोगी सम्यक् ज्ञान मतवाला है ॥ २९ ॥
ऐसी अनूपम कथा श्रवण कर चेतो जल्दी से प्यारे।
वार वार यह ऐसा मोखा मिले न गुरु यो ललकारे ।
देव गुरु सुध धर्म तत्व पर श्रद्धा पक्की बनवालो ।
जैनधर्म का मूल आज्ञामय वीर प्रभू के पथ चालो ॥ ३० ॥
बडे वैरागी महा तपो धन श्री बुधमल गुरु गुण ग्राही ।
तासु चरण-रज मुनि मिश्रीमल कथा सरस यह है गाई ।
द्वीप नयन नभरासी वर्षे मधु शुकला नवमी आई ।
चारठाणे से आये विचरते हेमावास मे सुखदाइ ॥ ३१ ॥

इत्यलम्

सत्य से संपत

सत्य से संपत



– दोहा –

रघुपति टोडर इन्द्र पुनि, गिरि घर धर्म दयाल।
मान बुद्ध गुरु देव मम, आपो वचन रसाल॥ १॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज– ख्याल की० ॥

स्वर्गो रो मारग साचो बोलणो, नहिं डिगे डिगायां ॥ टेर॥
सत्य बोलणो है शिव, सुन्दर, नीती शास्त्र सुनाता।
सत्य-नारायण चवडे वाजे, कोटिक पाप धुलाना जी ॥ नहिं० ॥१॥
नर, सुर, सुरपति, नरपति आदे, सादर शीश झुकावे।
मन धारयो सारो बन जावे, जन्म मरण मिट जावे जी ॥ नहिं० ॥२॥
सत्यवान के लीला लक्ष्मी, छप्पर फाड के आवे।
सातो भय को नाश करत है, आत्म-धर्म प्रकटावे जो ॥ नहिं० ॥३॥
वर्षा-योग से छोटे ग्राम मे, मुनि द्वय कियो चौमासो।
निर्धन किन्तू धर्म-परायण, सेठ सोमचन्द खासो जी ॥ नहिं० ॥४॥
घर-नारी सुत तीनो प्राणी, एकान्तर तप धारी।
करे न्याय-युत स्वोदर पूरण, स्वावलम्बि, व्यवहारी जी ॥ नहिं० ॥५॥
सेवा भक्ती करे प्रेम से, पुनि करे धर्म-दलाली।
धर्म-रंग घर-घर मे छायो, आतम म्हा उजवाली जी॥ नहिं० ॥६॥
महा पापी, मिथ्या मति धारी, लोभीचन्द इक सेठ।
धूर्त्त-शिरोमणि, पर-धन-वचक, पूंजी रयो समेट जी ॥ नहिं० ॥७॥
सोमचन्द को मग में मिलियो, लुच्चो लोभीचन्द।
धर्म, देव, गुरु की वो निन्दा,—करन लग्यो मतिमन्द जी ॥ नहिं० ॥८॥

सतवादी श्री सोमचन्द ने, धीरप सूँ समझाया।
क्यो करते हो कर्म-बन्ध यह, कित भुगतेला भाया जो ।। नहिं० ।।९।।
मुझे आप कुछ भी कह देवे, जिसकी नहिं दरकार।
धर्म, देव, गुरु की निन्दा को, सहन न करूँ लिमार जी ।। नहिं० १०।।
कर अन्याय द्रव्य तुम जोड़ा, फोड़ा सबने घालो।
ऐसे धन पै धोबा भर-भर, रेणू क्यो ना रालो जी ।। नहिं० ।।११।।
मुँह मच कोड गया लोभीचन्द, सोमचन्द घर आया।
भक्ति भाव युत ठाठ पाट से, चौमासा वीताया जी ।। नहिं० ।।१२।।
सारो गाँव हुवो है भेलो, पहुँचावन के ताईं।
यथा शक्ति पचखाण किया है, 'मिश्री' सम सुखदाई जी ।। नहिं० ।।१३।।

— दोहा —

धन बिन जन धुतकार दे, मिले न मान छदाम।
धन बिन जन-जन दौड के, पग पग करे प्रणाम ।। १ ।।

ढाल २ जी ।। तर्ज– मून्दड़ी० ।।

वेगा आइजो हो वैरागी-पुरुषों! तारवा रे।
म्हारा काम, क्रोध, मद, लोभ, ममत ने मारबा रे ।। टेर ।।
मीठो ज्ञानामृत नित पायो, सुन्दर शिव-मारग बतलायो,
साचो आतम रूप दिखायो, मिथ्या टारवा रे ।। वेगा० ।। १ ।।
करणी करडी ढोंग विनोरी, कहो कुण करसी होड इणोरी,
आशा सफल हुई है मनों री, जन्म सुधारवा रे ।। वेगा० ।। २ ।।
थांरे पक्षपात नहिं पेख्यो, सब पै एक भाव ही देख्यो,
ऐसो प्रेम-धर्म को पेंक्यो, विषय-वन बारवा रे ।। वेगा० ।। ३ ।।
हो निर्मोही मोहनगारा, निष्कामी 'पिन' कामनगारा,

थांरा ख्याल जगत सूं न्यारा, दभ दिदारवा रे ।। वेगा० ।। ४ ।।
अमर शक्ति म्हाने बगशादो, आसूं, कहि मनडो विकशादो,
शान्ती को सन्देश सुनादो, मोद वधारवा रे ।। वेगा० ।। ५ ।।

– दोहा –

मुनिवर से मंगलीक सुन, जनता फिरी जिवार ।
सेठ सेठानी अरु तनय, व्रत धारयो चौहार ।। १ ।।

डाल ३ जी ।। तर्ज– म्हांने दोरो लागे जी० ।।

गुरुजी आगे जावे जी क, गुरुजी आगे जावे जी क,
सेठ अकेलो साथे देखी", यूं फरमावे जी ।। टेर ।।
दया पालो, अब सुनलो श्रावक, आगे नही लिजासो ।
हम तो रमते-राम कही पर, आसन जाय जमासो ।। गु० ।। १ ।।
सुरण मंगलीक बैठो तरु छाया, आंसूं नयनों आया ।
भू खोदत वहां चरू धन पूरित, सोमचन्द लख पाया ।। गु० ।। २ ।।
होगा किसी का धन यहां डाटा, मुझे न इस से काम ।
धूल डाल, वहां से चल जल्दी, आया अपने धाम ।। गु० ।। ३ ।।
दिनभर ज्ञान ध्यान में तीनों, रहे खूब गलतान ।
सध्या को पौषध त्रय करके, भज रहे मन भगवान ।। गु० ।। ४ ।।
लोभीचंद की पास हवेली, सेठानी तस डाढे ।
पहर रात-गइ तो भी जक ना, धन भरिया कै खाडे ।। गु० ।। ५ ।।
फिरो भटकता रात दिवश ही, दुखी सभी परिवार ।
रात पड़ी तो भी विश्रान्ती, लेते नही लगार ।। गु० ।। ६ ।।
यो धन कांई साथ चलेगो, मन मे टुक न विचार ।
कहे 'मिश्री' पापी नहि माने, लाख करो उपचार ।। गु० ।। ७ ।।

– दोहा –

पड्यो सेठ तव पिलँग पर, करवट लेत अथाय ।
तदपि नीद आवे नहिं, तृष्णा वश दुखियाय ।। १ ।।

ढाल ४ थी ।। तज– जिनवर वांदूला० ।।

सोमचन्द तिन ही समय, कही प्रात की वात, सुत अरु नारी ने।
मैं नही लायो जान अन्य की, रज डाली निज हाथ, आयो चाली ने ॥१॥
भलो कियो भाभोसा ! भोले, जो ले आता साथ, झोलो भर कर के।
मैं नहिं राखरा देतो थांने, यही राय मुज मात, कहूं कर[1] जोरी[2] के ।। २ ।।
लोभी सुरा ललचावियो, काई लेय पुत्र ने लेर, आयो वन माहो ।
दोय दोइ शिर तोक ने, लाया अपने घेर, मन मे हर्षाई ।। ३ ।।
कमर, शीश, गर्दन बोझा सूँ, वे दोनो दुख - पात, पसीनो टपकाई ।
काइ लाया, बोली सेठानी, डाल्यो चरू मे हाथ, उत सुत-वधु आई ।। ४ ।।
पनड़्यो वाला चिप्या चपाचप, दुहुँ मेल्यो बोबाड़, सेठ सुत दुहुँ त्याई ।
जोवतडो रे पिरा चपिया, वेदन थई बखाड़, चारो तन ताई ।। ५ ।।

– दोहा –

हाय हाय हाको हुवो, चारो रो चौफेर ।
क ई हुम्रो कहि ना सकै, फस्यो निनाणूँ-फेर ।। १ ।।

ढाल ५ मी ।। तर्ज– बगशी जी रा गीत री० ।।

भाग्य विन कोइ नहिं पावे रे, भाग्य बिन कोइ नही पावे,
भाग्योदय होने पर लक्ष्मी छपर - फाड आवे ।। टेर ।।
हाय सोमलो कैसी कुवद की, बड़ो धर्म - ढोंगी । अरे वो० ।
पाछो इणसूँ लेलूँ बदलो, कर जुगती जोगी ।।भाग्य०।।१।।

इसी सोच के सोमचन्द की, रातों छत तोड़ी, अरे उण रातों० ।
दोनो चरू उडेल दिया है, कर माथा-फोड़ी ।। भाग्य० ।। २ ।।
कान लगाकर सूतो लोभी, रोनो नहि सुणियो,अरे उण रोनो० ।
प्रात होत धन देख सोमजी,अपणो सिर धुणियो ।। भाग्य० ।। ३ ।।
देखो छप्पर-फाड आयगो, धन घर के माही, अरे ओ धन० ।
अब इसमे गलती क्या अपनी, सोच लेवो भाई ।। भाग्य० ।। ४ ।।
सीधो सदन सेठजी लेकर,कियो निवास निरुप, वहाँ पे कियो० ।
सारा गांव वो सेवा सारे, आदर देवे भूप ।। भाग्य० ।। ५ ।।
विणज बढयो अरु नेपे बढ़गो, हुन्नर बढयो अपार,देश मे हुन्नर० ।
सब को देवे सेठ सहायता, दानी वड़ो दयाल ।। भाग्य० ।। ६ ।।
कल्प वृक्ष यह धर्म देखलो, फल्यो सेठ रे खूब, देखलो फल्यो० ।
ज्यूँ खरचे त्यूँ बढे सवायो, लक्ष्मी लूँबा-लूँब ।। भाग्य० ।। ७ ।।
जलधर वर्षत यथा जवासो, कालो पडे कमाल,अरे वो कालो० ।
लोभीचद त्यूँ विलखो होवे, सोमचन्द को न्हाल ।। भाग्य. ।। ८ ।।
धर्म-ध्वजा लहरावे पुर मे, पापी को नहि चैन,अरे उण पापी० ।
'मिश्री मुनि' कहे जो सुख च्हावो, शुद्ध मन पालो जैन ।।भा० ।।९।।

— दोहा —

छोटो मोटो पाप को, लोभी रे लागो ।
सागो रह्यो न सांतरो, खोटो दिन आ-गो ।।१।।

ढाल ६ ठी ।। तर्ज— जो आनन्द मंगल च्हावो रे० ।।

जब घड़ा पाप का फूटे रे, तब देते कौन सहाय ।। टेर ।।
चोरो का माल चुराया, वो लोभीचन्द घर पाया।
कस्टम भी नही चुकाया रे, पकड़ा अधिकारो आय ।।जब०।।१।।

हाथों मे हथकडी डारो, लाया नृप पै सिरे-वजारी।
दुनियो देतो धिक्कारो रे, लख नरपति गये रिमाय ॥जव०॥२॥
घर जप्त सभी कर डारो, सब को घर व्हार निकारो।
फिर शस्त कैद कर डारो रे, यह कर न सके अन्याय ॥जव०॥३॥
घर वारा सारा रोवे, मुख अंसुअन से हा! धोवे।
पुर की सब जनता जोवे रे, यह मिले किये फल आय ॥जव०॥४॥
यह हाल सोमचन्द सुन के, दुख हुआ हृदय मे उनके।
है दयावान वे मनके रे, लोभी से बोला जाय ॥जब०॥५॥
कह मित्र! पाप है अच्छा ?, या इसका फल है कच्चा।
अब कहदो सच्चा सच्चा रे, दूं झंझट सभी मिटाय ॥जब०॥६॥
लोभीचन्द लज्जित हो के, कहे मुझे बचा इण मोखे।
सब कथन मानूंगा तो-के रे, दो मिश्री साफ सुनाय ॥जव०॥७॥

– दोहा –

सोमचन्द नरचन्द को, धीरप से समजाय।
केद छुडा लायो घरे, दो शिक्षा जीमाय ॥ १ ॥

ढाल ७ मी ॥ तर्ज–घूंमर० ॥

तज अन्यायी, मेरा भाई, तूं तो पक्को कर दृढताई है लो।
शोभा वढासी, आनन्द पासी, दूं पूंजो और लगाई है लो ॥ टेर ॥
लोभी मानो सोम सु-वाणी, आ तो वढगइ फिर पुनवानी है लो।
दोनो सफल की नर-जिंदगानी, करणी कर सुखदानी है लो ॥तज०॥१॥
सच्चा सुख सन्तोष समाना, तृष्णा दुख दे नाना है लो ॥
शास्त्र-वचन जो मन मे धारे, वो हो नर पुनवाना है लो ॥तज०॥२॥

कथा सुनाई तर्ज अनेकों, देश मेवाड़ के माही है लो।
राजाजी को आयो करेड़ो, जासों रायपुर भाई है लो ।।तज०।।३।।
सवत दोय - हजार छाइसा, नवमी पौष अँधियारी है लो।
वार भृगु दिनमान सु-योगे, धर्म - कथा विस्तारी है लो ।।तज०।।४।।
गच्छाधिप श्री रघुपति-स्वामी, पाट परम्परा चाले है लो।
सद्गुरु श्री बुधमल महाराजा, परचा पूरण वाले है लो ।।तज०।।५।।
विनयी तस 'मुनि मिश्रि' ५यं पै, धर्म किया जय थावे है लो।
रूप, सुकन कथनाते जोड़ी, भव्य जनो रे मन-भावे है लो ।।तज०।।६।।
धर्म - रयण है चिन्तामणि-सो, कामदुगा पिण जानो है लो।
आगम-वाणी के अनुसारे, श्रद्धा पक्की आनो है लो ।।तज०।।७।।



॥ बन्दा बन्दी का चरित्र ॥

॥ बन्दा बन्दी का चरित्र ॥

- दोहा -

आदिनाथ को आदि कर, - वन्दन वारंवार।
उक्ति अहो ! उत्पातिका - पर विरचूं अधिकार ॥१॥
चारों बुद्धि मे प्रबल, प्रथम इसी का स्थान।
चमत्कार पावे चतुर, वरणो श्री वृधमान ॥२॥

ढाल १ ली ॥ तर्ज- जगत गुरु तृशला - नन्दन वीर ॥

मगध देश-माहे भलो जी, नन्दी - गाम उदार।
ठाकुर धीरजसेन है जी, चन्द्रावती भरतार ॥ १ ॥
मनुष्यनो है बुद्धी - बल सार ॥ टेर ॥
बसे तिहाँ गाथापती जी, लोभानन्दी एक।
मीठो बोलो ढोंग सूं जी, राखे धर्म री टेक ॥ म० ॥ २ ॥
ठाकुर आदे गाम मे जी, मुखियो दियो बनाय।
सत्ता आई हाथ मे जी, गुप्त करे अन्याय ॥ म० ॥ ३ ॥
पासो पडतो देखने जी, लोगो से कहे एम।
यह देखो वन्दा किया जी, तुम मे नहिं है फेम ॥ म० ॥ ४ ॥
निबल डरे, सब हाँ भरे जो, सबलो साथे नेह।
वन्दा रा डका-वजे जी, जनता जाणे जेह ॥ म० ॥ ५ ॥
घोचा घाले न्यात में जी, खासो करे बिगार।
पिण कोई बोले नही जी, पावे दुक्ख अपार ॥ म० ॥ ६ ॥
इक दिन जैनी श्राविका जी, बन्दी इसड़े नाम।
बन्दा ने बुलवायने जी, पाडन लागो माम ॥ म० ॥ ७ ॥

कितो करो अन्याय थें जी, पर-भव को डर नाय।
प्रथमा ढाले चेतजो जी, भलपन भजिये भाय ! ॥ म० ॥८॥

– दोहा –

वन्दो कहे इण गाम में, है किसकी मगदूर।
करे सामनो ताहि को, धसक मिलादूं धूर ॥१॥

ढाल २ जी ॥ तर्ज–मोहनगारो रे० ॥

मत कर वन्दा रे, तूं मिजाज इतना खोटा धन्धा रे ॥ मत० ॥टेर॥
केई होगया ने केई हो-जासी, वन जोबन धन अन्धा रे।
पतो न लागो, गया वठीने, खाया गफन्दा रे ॥ मत० ॥ १ ॥
धीमो रह, धोरी क्यो भिड़के, खायो घणी वरिन्दा रे।
बिना पांख क्यो उडे, उडे है, खास परिन्दा रे ॥ मत० ॥ २ ॥
जो अब थारे मन मे हवै तो, करजे मित्र ! चुरिन्दा रे।
कर-गुजरूंगी तेरे साथ में, नहीं टरिन्दा रे ॥ मत० ॥ ३ ॥
कहा करेगी, बोले वन्दो, मुझे करे शरमिन्दा रे।
मैं किसके नही सारे डरे-खुद सूरज चन्दा रे ॥ मत० ॥ ४ ॥
देख लेना डरने का दादा, अवसर आय लगन्दा रे।
ढाकण ने दरियो नहि आडो, 'मिश्रो' कहन्दा रे ॥ मत० ॥ ५ ॥

– दोहा –

तूं जो नाव डुबोवसी, मैं देऊंगो तार।
ऐ घोड़ा मैदान है, लाखों रहूं न लार ॥ १ ॥

ढाल ३ जी ॥ तर्ज– म्हाने दोरो लागे जी० ॥

माल पीलो हवै वन्दो जावे, घाट घणेरो घड़ता।

पिण बन्दी रे अकल अगाड़ी, जरा हाल नहिं हिलता ।। १ ।।
चतुरो ! चितसूं सुणलो रे, चतुरो ! चितसूं सुणलो रे ।
बुद्धी को है चमत्कार, निज उर में धरलो रे ।। टेर ।।
बिणजारा रो हार होरों रो, बन्दो गयो डकारी ।
वो मागे पिण वो नहिं देवे, थाक्यो कर लाचारी ।। च० ।। २ ।।
बन्दी विलखो लखि नायक ने, सारी बात ली पूछी ।
अकल बताई बिणजारा ने, दीवी कुबुध री कूंची ।। च० ।। ३ ।।
विणजारो ठाकुर पै पौंच्यो, सारी बात सुणाई ।
बन्दो माल खावे परबारा, आप सुणो हो नाहो ।। च० ।। ४ ।।
इण सूं गरीब मारिया जावे, बदनामी व्है थांरी ।
है बन्दी री इण में गवाही, साच सुणाई सारी ।। च० ।। ५ ।।
बन्दी को ठकुराणी पासे, शिविका भेज बुलाई ।
आई सा युक्ती बतला के, निज घर वापिस आई ।। च० ।। ६ ।।
प्रात - होत ठाकुर बन्दे को, बुलवायो हुलसाई ।
खुश - कर लीनो ठाकुर उसको, बातो मे बिलमाई ।। च० ।। ७ ।।
बिच मे ठाकुर कहे लाडीजी, हठ लीनो है भारी ।
हीरो - हन्दो हार घड़ादो, बन्दा कहो विचारी ।। च० ।। ८ ।।
ताजो हार दिखा कोइ लाई, व्हेड़ो लेऊं घड़ाई ।
बन्दो री आंटी में बन्दो, टुक समज्यो है नाही ।। च० ।। ९ ।।

– दोहा –

काल दिखासूं ठाकुरो ! ,हीरों-हन्दो हार ।
घरे गयो होते फजर, आयो सभा मजार ।। १ ।।

ढाल ४ थी ।। तर्ज– नवीन रसिया० ।।

दीनो ठाकुरसा रे हाथ , अनोखो हीरो-हदो हार ।। टेर ।।

॥ श्री ॥

॥ आज्ञाकारी पुत्र ॥

तर्ज— ख्याल की……

गणपति गौतम प्रथम समरि के, विरचूं सरस व्याख्यान ।
पिता भक्त होते हैं कैसे ? सुनो ! सभी धर ध्यान जी ॥ १ ॥
वह पुत्र भला है, आज्ञा पाले जो अपने बाप की ॥ टेर ॥
मौर्य वंश का प्रसिद्ध राजा, था अशोक सम्राट ।
जिसके प्यारी थी दो राणी, प्रेम भरी गह घाट जी ॥वह०॥२॥
बड़ी राणी का सुन्दर बेटा, था कुणाल गुनवान ।
भव्य ललाट सोम्य अति मुखड़ा, पूरण चन्द्र समान जो ॥वह०॥३॥
राज्य कार्य में दक्ष वोरवर, धर्म परायण धीर ।
पितृ भक्त रत नियमों पर, पर वनिता का वोर जी ॥वह०॥४॥
छोटी राणी छोनी पत को, तिष्य रक्षिका नाम ।
देखी कुंवर भई विषयातुर, चित्त चंचल नहीं ठाम जी ॥वह०॥५॥
नमन करन लघु माताजी को, आये राज कुमार ।
समय पाय निर्लज बन राणी, बोली धर कर प्यार जी ॥वह०॥६॥
अये मन मोहन राज्य कुंवर तूं, काम देव अवतार ।
अणियाली आखडल्यो उपर, मैं जावूं बलिहार जी ॥वह०॥७॥
विनती मान प्रेम रस प्याला, पिला मुझे धर प्यार ।
आजीवन चेरी मैं तेरी, बनी रहूं चरणार जी ॥वह०॥८॥
भाग्य योग से अवसर पाया, मत कर अब तूं जेज जी ।
विरहा नल से जल रही सरे, हद विन उमठ्यो हेज जो ॥वह०॥९॥
राजकुंवर कहे माजीसा! क्या, अनुचित बात निकाली ।

नही आदर्श इसिमे अपना, सूरत लो सम्भाली जी ॥वह०॥१०॥
दोनों भव दूषित हो जिससे, उस मारग क्यों जाना।
प्राण आन अरु खानदानी मे, बट्टा नही लगाना जी ॥वह०॥११॥
मैं सतान आपका सच्चा, आज्ञा पालन वाला।
यह आसा मुझसे मत रखना, तजो विकल पन ज्वालाजी ।वह०।१२॥
राणी कहे है किसका बैटा, झूंठी छोड़ जिकाल।
तूठी हूं मैं चित्रावल्ली, रूठी काल कराल जी ॥वह०॥१३॥
शिर धुन के वो राजकुंवर जब, चला ताम ततकाल।
रीसाणी राणी यो वाणी, मुख से दिवी निकाल जी ॥वह०॥१४॥
रखना याद करूं क्या तुज मे, नाही बच्चो का खेल।
करे प्रतिक्षा अब उस दिन की, मिले कौन सा मेल जी ॥वह०॥१५॥
इतेक तक्षशिला की परजा, कर उठी विद्रोह।
दमन करन राजाजी चढिया, लघु राणी कहे सोह जी ॥वह०॥१६॥
आप अदाता क्या उत जावे, भेजो कुंवर कुणाल।
है समर्थ वो सबी कार्य मे, समझो मति मृणाल जी ॥वह०॥१७॥
कपट चाल नही जानी राजा, भेजा कुंवर को तत्र।
गया कुंवर करके चतुराई, शाति करी सवर्त्र जी ॥वह०॥१८॥
समाचार राजा जो सुनके, हो गये हर्षानन्द।
तक्षशिला का सभी प्रशासन, करो पुत्र सानन्द जी ॥वह०॥१९॥
इधर भूप को उदर व्यथा ने, पीडित कीना भारी।
कर उपचार थकित सब हो गये, मिटी न तस बेमारी जी।वह०।२०॥
तिष्य रक्षिका कर उपाय इक, रोग मिटाया सारा।
जिससे राजा उन राणी पर मुग्ध भये अनपारा जी ॥वह०॥२१॥
कर षड़यन्त्र लिखा परवाना, मुद्रा लगादी लाने।
हस्ताक्षर राजा का लीना, राजा भेद न जाणे जी ॥वह०॥२२॥

मुख्य सचिव था तक्षशिला का, जिस पर पत्र पठाया।
कुंवर कुणाल की आंखे निकालो, राज्य द्रोही बतलाया जी ॥वह.॥२३॥
तक्षशिला से निष्कासित कर-वापिस शीघ्र जताना।
अगर विलम्ब किया इसमे तो, दड तुमे भी पाना जी ॥वह०॥२४॥
मन्त्री शोचा यह क्या सच है? विना मूल की बात।
विन निर्णय आज्ञा दे देना, जल में आग दिखात जी ॥वह०॥२५॥
कुवंर अगाडी मन्त्री सारी, कही हकिकत जाय।
कहे कुणाल स्वीकृत है म्हाने, करिये ज्यो दिल च्हाय जी ॥वह०॥२६॥
सचिव कहे मुज से नही होता, इस प्रकार अन्याय।
अपने हाथो आंखों फोड़ी, पितु आज्ञा अपनाय जी ॥वह०॥२७॥
पति व्रता कुंवराणी कचना, हठकर साथे हाली।
दोनो प्राणी फिरते वन वन, डगर डगर दु ख झाली जी ॥वह०॥२८॥
पीछा पत्र दिया राजा को, राणी बीच मे लीना।
राजाजी को पता न किंचित, राणी जुल्म यह कीना जी ॥वह०॥२९॥
इधर गाम पुर नगर शहर मे, दपति भमता जावे।
मजुल कठ हृदय हर गायन, सुन जनता हर्षावे जी ॥वह०॥३०॥
अंदर आग उघडगी उसको, फिकर जरा नही आणे।
आया घूमता पाटलीपुर मे, राजा राग पिछाणे जी ॥वह०॥३१॥
सभा वीच मे शीघ्र बुलाया, खुश भये सुण संगीत।
राजा पूछे नाम बता दे, परिचय खास पुनीत जी ॥वह०॥३२॥
जब कुणाल ने हाल सुनाया, राजा कोप्यो भारी।
तिष्य रक्षिका की दृग काढी - करदो देश के बारी जी ॥वह०॥३३॥
सुण कुणाल कहे मेरी माता, भूल करो अज्ञात।
ऐसा दड उसे ना दीजे, मानो मेरे नाथ जी ॥वह०॥३४॥
सभी जनो ने करी प्रशसा, कैसा उत्तम प्राणी।

हाथ जोड़कर माफी मांगी, पावो पड़ी तब राणी जी ॥वह०॥३५॥
तिष्य रक्षिता कर सुरसा निध, पुनरपि आंख सुधारी।
धर्म प्रभाव प्रजा नें जाना, पितु आज्ञा सुख कारी जी ॥वह०॥३६॥
स्वारथ वस हो अनरथ ऐसे, हो रहे इस संसार।
आज्ञा ले पितु मात से, वोधी वन विहार जी ॥वह०॥३७॥
दंपति मन से तत्व बोध ले, कीना उग्र प्रचार।
परम बोध मे लीन हो गये, आतम रूप निहार जी ॥वह०॥३८॥
बोध ग्रंथ मे कथा पढी सो, निर्मित एक ही राग।
कुणाल कुवर आख्यान बनाया, सुनत लहै सौभाग जी ॥वह०॥३९॥
ऐसा भक्त पुत्र हो जिसके, पिता परम पुनवान।
जिसके अधम सतति होती, लेवो पाप फल मान जी ॥वह०॥४०॥
पुन्य कार्य मे पाप वताकर, जो पुन मे दे रोडा।
वह अज्ञानी जीव है सरे, भव २ पावे फोडा जी ॥वह०॥४१॥
त्रयोदश गुणस्थानक तांइ, पुन्य सहायता देता।
साधू केवली चक्री जिनपद, पुनवानी से लेता जी ॥वह०॥४२॥
चैत्र शुक्ल प्रतिपद मगल दिन, दो हजार सतवीश।
एक घड़ी में निर्मित्त कीनो, साडेराव जगीश जी ॥वह०॥४३॥
मिकरू सु मवि खट ठाणेसु, कर रहे धर्म प्रचार।
मरुधर मुनि मण्डल नित विचरे, मरुधर मे जयकार जी ॥वह०॥४४॥
श्री रघुपति गच्छानुयायी, बुध शिष मिश्री माल।
सुकन कथन सु एक राग मे, जोडो ढाल टकशाल जी ॥वह०॥४५॥

॥ इत्यलम् ॥

मूलदेव - चरित्र

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

मूलदेव - चरित्र

- दोहा -

श्रवण करे सन्मति वयण, सयल तरे ससार।
आगम पर श्रद्धा अडिग, धारे हृदय मजार ॥ १ ॥

॥ तर्ज- ख्याल की० ॥

नृप मूलदेव जी, चारो शिक्षायें दिल मे धारलो ॥ टेर ॥
विमल वाहिनी वर वगसावो, मागूँ करदो महर।
हू बालक चरणो मे हाजिर, लहू ज्ञान की लहर जी ॥नृप०॥१॥
नामो शहर नागपुर नोको, भरत क्षेत्र के माय।
मूलदेव राजा भलो सरे, न्यायवन्त सुखदाय जी ॥नृप०॥२॥
राज्य बड़ो रैयत है राजी, सप्तागी बल वीर।
दुश्मन ढाह दिया है नामी, हरे प्रजा की पीर जी ॥नृप०॥३॥
रहे शहर में द्विजवर रतिधर, पडित प्रौढ़ प्रवीन।
सरल महा संतोषी सायर, मगन ज्ञान जल-मीन जी ॥नृप०॥४॥
नागर वेल के फल नही सरे, सोने नही सुगन्ध।
पडित पे लक्ष्मी कठे सरे, मन के नही है बन्ध जी ॥नृप० ॥५॥
नारी मिलगी कर्कशा सरे, दु:ख देवे दिन रात।
दूजो दु ख दारिद्र को सरे, अन्न बिन सब बिललात जी ॥नृप०॥६॥
क्यो पढिया कांई सार काढियो दु ख मे जन्म वितावो।
पोथी, पाना कूवे न्हाख दो, हल हाको सुख पावो जी ॥नृप०॥७॥
विद्या बुरी नही है प्यारो, बुरा समझ तकदीर।
जिण सु पड़े न पाधरी सरे, जोभी करूँ तदवीर जी ॥नृप०॥८॥
धीरज धार आया दिन आछा, भली बनेगी वात।
सुख दु ख सारा सम परिणा मे, भोगवियाँ मिट जात जी ॥नृप ॥९॥

समझाई समझे नही सरे, बभन हो गयो कायो।
वन में एक देवी के देवल, आयो अति घबरायो जी ।।नृप०।।१०।।
चतुर्भु जी चिन्ता हर म्हारी, राख-राख धणियाप।
नहितर ओ ले, प्राण हमारो, देवूं निज शिर काप जी ।।नृप०।।११।।
लेई खड्ग निज शीश उतारे, सुर-वनिता तिन-वेर।
आय शीघ्र कहै मत मर, मत मर, विप्र जरा सा ठैर जी ।।नृप०।।१२।।
जो दु:ख व्है सो जाहिर करदे, हरूं एक छिन माय।
ब्रह्म-हत्या मैं किस विध झेलूं, महा माया कहलाय जी ।।नृप०।।१३।।
धन बिन जन देवे धिक्कारा, म्हा सूं सही न जाय।
जो किरपा हो आपकी सरे, देवो दरिद्र गवांय जी ।।नृप०।।१४।।
पूर्जो एक दियो लिख देवी, चार, सार तिन मांय।
लाख मोहर्‌ां मे वेच दे सरे, कुमो रहेगी नाय जी ।।नृप०।।१५।।
कागज ले कोविद चल्यो सरे, आयो मध्य बजार।
अयि लोगो यह पूर्जा ले लो, देवो लाख दीनार जी ।।नृप०।।१६।।
हाथी बेच कौन खर लेवे, जहर, सुधा को टार।
मोहराँ देय लेय कुण कागज, इसो न धन, बेकार जी ।।नृप०।।१७।।
हुवो घणो हैरान ब्रह्म-सुत, दिन चढियो दोपार।
इत्तोक राजा मूलदेव ने, द्विज को लिया निहार जी ।।नृप०।।१८।।
क्यो ब्राह्मण! इतना क्यो दुमना, कही विप्र सुन बात।
पूर्जो पढ राजा ले लीनो, मोहरा दी तस हाथ जी ।।नृप०।।१९।।
राजी होय विप्र घर पहूच्यो, सुखी भयो परिवार।
राजा महल मे पूर्जो पढतो, सार बात चऊं धार जी ।।नृप०।।२०।।
रात्रि मे जागरण सार है, स्त्री को डक्कर सार।
रिपु को आदर देनो सार है, बात को सार विचार जी ।।नृप०।।२१।।
बडी अमोलख चारो शिक्षा, अजमा कर लूं देख।
दिवी रकम उगे या नाही, इसडो करूं विवेक जी ।।नृप०।।२२।।

सूतो नही उण रात राजवी, महल सम्भाले सारा।
पटराणी के महल मे सरे, देखा ख्याल निराला जी ॥नृप०॥२३
निश्चित सूती अन्य पुरुष-सग, डर सारो दफनाय।
क्रोधारुण हो भूप दोनो रा, दीना शीश उड़ाय जी ॥नृप०॥२४॥
प्रथम सीख या साँची निवड़ी, अब दूजी सम्भालूँ।
अण मानेतण ऊपर डक्कर, राखी उल्टो चालूँ जी ॥नृप०॥२५।
उन राणी रे महल मे सरे, राजा पहुँच्यो जाय।
फौजी अफसर उस राणी को, साग्रह रह्यो सताय जी ॥नृप०॥२६॥
कर मुझ को स्वीकार अन्यथा, देसूँ शीश उडाय।
मैं नही डरता राजाजी से, फौज सभी कर माय जी ॥नृप०॥२७॥
कहे राणी मैं डरूँ दोय से, जिन से करूँ न काम।
पहला डर पर भव मम बिगड़े, दूजो डर निज श्याम जी ॥नृप०॥२८॥
माने के माने नही सरे, झूँठो करे जिकाल।
आज रात राजा को मारी, लेऊँ राज तत्काल जी ॥नृप०॥२९॥
लूण हरामी दुष्ट अन्याई, घाले गादी घाव।
भव-भव मे तूँ रुलतो फिरसो, रूलियारा रो राव जी ॥नृप०॥३०॥
गुस्से भरियो पाछो गिरियो, राणी मारी लात।
पड़ियो देख वा माथे चढकर, करी खड्ग से घात जी ॥नृप०॥३१॥
घड, शिर राल्या गढ री खाई, महल साफ कर डारयो।
छाने से महिपत वो सारो, ख्याल नजर से भारयो जी। नृप०॥३२॥
गयो महल मे राणी चमकी, बोली बड़को देय।
अरे मौत थारी पिण आई, रातो आयो गेय जी ॥नृप०॥३३॥
भूप भणे दूजो नही भामण, मैं छूँ थारो कन्थ।
कन्थ वणे निशर्मा म्हारो, कथ न पूछे पथ जी ॥नृप०॥३४॥
ओलख ले महाराणी म्हाने, दीपक कर ले जोय।
धन्यवाद है तो भणी सरे, धर्म निभायो सोय जी ॥नृप०॥३५॥

खातर कीनी खूब राजवी, तूं प्यारी पट नार।
आज परीक्षा हो गई सरे, पडित रो उपकार जी ॥नृप०॥३६॥
राज करे सुख से रढ़ियालो, एक दिन चढ़ तोखार।
वन खेलत इक अजब तमासो, नरपति लियो निहार जी ॥नृप०॥३७॥
वासग, नाग रो नागणी सरे, गून्द लीया अहि संग।
भोग भोगवे वड़ तले सरे, नृप ने छायो रग जी ॥नृप०॥३८॥
हण्टर दो नागण रे मारो, भूप महल मे आयो।
नागण प्रजली जाय वासग को, सारो हाल सुनायो जी ॥नृप०॥३९॥
अति क्रोध मे आयो वासग, कहे तज फिकर तमाम।
आज रात राजा को मारूं, छेड़यो मुझे अलाम जी ॥नृप०॥४०॥
नृप राणी सूती दिन महलां, सुपने बीतक सारो।
जाय कह्यो राजा ने झटपट, सुण नृप कियो बिचारो जी ॥नृप०॥४१॥
वासग नाग आप पर कोप्यो, आसी मारन अध रात।
नागण के कथनान्तर ऐसा, बन गया है जगनाथ जी ॥नृप०॥४२॥
सुण राजा मन सोचियो सरे, भलो कियो व्है भूण्डो।
वासग नाग अकल को आंधो, आलोच्यो नही ऊण्डो जी ॥नृप०॥४३॥
राजा मन मे सोचियो सरे, पण्डित हुंदी वाय।
दो, तो सांची निवड़गी सरे, तीजी लूं अजमाय जी ॥नृप०॥४४॥
तीजी बात वैरी ने आदर, सार देवणी दाखी।
काम पड़यो अजमावण को अब, मैं क्यूं राखूं बाकी जी ॥नृप०॥४५॥
वासग की बंबी से लेकर, अपना ढोल्या तांई।
फूल बिछाया अन्तर छिड़क्या, गायक दिया बिठाई जी ॥नृप०॥४६॥
दूध ओटायो मिष्ट पदारथ, केशर, एलची वारो।
भर-भर स्वर्ण कटोरा धरिया, स्वागत रच्यो उणारो जी ॥नृप०॥४७॥
सध्या होत नृप पटराणी सग, ढोल्ये बैठयो जाय।
इत वासग निकल्यो बबी से, आई सुगन्ध सवाय जी ॥नृप०॥४८॥

दूध पियो है मधुर गंध से, मस्त भयो अहि राज।
पिनिहारी पूंगी पर सुनतो, क्रोध गयो सब भाज जी ॥ नृप० ॥ ४९ ॥
मन्थर चाल मगन पय पीतो, ठेट ढोलिया पास।
आवो वासग राज भूपती, स्वागत - स्वागत खास जी ॥ नृप० ॥ ५० ॥
क्यो नृप नागण को सताई, नृप वा बात सुनाई।
खुश होकर मणि दे महिपत को, गो निज स्थान सिधाई ॥ नृप०॥ ५१ ॥
तीन शिखामण साँची निवडी, अब चौथी रो सार।
सुन लेना भव्यो भल भावे, है सुन्दर अधिकार जी ॥ नृप० ॥ ५२ ॥
एक दिन राज्य - सभा मे राजा, न्याय चुकावे सागे।
आयो एक पथिक उत चाली, नृप के चरणे लागे जी ॥ नृप० ॥ ५३ ॥
आय गई है अब नृप तेरो, कही इतनी वो चाले।
बोलायो पाछो नही आयो, राजा के उर शाले जी ॥ नृप० ॥ ५४ ॥
दिन भर बीत गयो चित वंतो, राते सूतो महेल।
अर्ध-रयण नृप अर्ध नीद मे, परचो पायो पहेल जी ॥ नृप० ॥ ५५ ॥
वर्षा वर्ष्यों वाद में सरे, सरिता पूर सवाई।
फेंकारी फटके सा बोली, राणी सा सुण पाई जी ॥ नृप० ॥ ५६ ॥
उठ गई राणी सरिता पे, फेंकारी स्वर साथ।
छाने सेक चल्यो छलकर के, अहिपुर केरो नाथ जी ॥ नृप० ॥ ५७ ॥
फेंकारी को कथन प्रयोजन, शव, तिरतो यो जावे।
वाम जघ से रत्न चार लो, फिर हम उनको खावे जी ॥ नृप० ॥ ५८ ॥
जन्म जात राणी भई सरे, दीना वस्त्र उतार।
जल तिर, शव ला बाहिर डारचो, रत्न निकालन बार जो ॥ नृप० ५९ ॥
दातो से वा जघ चीर कर, रत्न निकाल्या सागी।
सोचे भूप जीवती डाकिन, भय लाई गयो भागो जो ॥ नृप० ॥ ६० ॥
राणी स्नान कर कपडो पहरी, शव फैंक्यो स्यारो पे।
आय गई निज महल मे सरे, रत्न वाध्या सारी पै जो ॥ नृप० ॥ ६१ ॥

सभा, प्रातः सब जन के सन्मुख, नरपति यो फरमाई।
राणी जीवती डाकिनी सरे, दो शूली पधराई जी ॥ नृप० ॥ ६२ ॥
हक्का, बक्का सब होगया सरे, अन होनी नृप करता।
है निर्दोषण महाराणी जी, व्यर्थ व्हेम क्यो धरता जी ॥ नृप० ॥ ६३ ॥
माफ करो मोटा महाराजा, आ कुण बात जिलाई।
खाजा-सम राणी सा उज्वल, दोष रती भर नाई जी ॥ नृप० ॥ ६४ ॥
अरे मूर्खो कोण सिखावे, निजरो रात निहालो।
और कोई पड़पच करो मत, वला, देवो झट टालो जी ॥ नृप० ॥ ६५ ॥
हाको होगयो शहर मे सरे, दास्यां सुनकर आई।
अरे बाईसा जुलम हो गयो, रोवतड़ी सुनवाई जो ॥ नृप० ॥ ६६ ॥
मतना रोवो छोरियां सरे, हुई-हुई सब देखो।
फिकर नही इण वातरो सरे, इण घर ओहिज लेखो जी ॥ नृप० ॥ ६७ ॥
खलक, मुलक सब देखण आयो, हस्त वदन वा राणी।
शूली कानी जाय रया है, जनता मन मे जाणी जो ॥ नृप० ॥ ६८ ॥
मरणा रो डर है न रती भर, कितनी करड़ी छाती।
डाकण, भूतण है न शिकोतर, उत्तम इणरी जाती जी ॥ नृप० ॥ ६९ ॥
राजा, राज्य मुसद्दी साथे, शूली पासे आया।
इतने मे इक काग बोलियो, राणी हास्य न माया जी ॥ नृप० ॥ ७० ॥
हँसती देख राणी ने मंत्री, नृप को सेण कराई।
इण हँसना मे भेद अवश्य है, साँच कहू निर नाई जी ॥ नृप० ॥ ७१ ॥
चौथी शिक्षा भूप ध्यान मे, आय गई तिणवार।
अजमालो अब बात साय ने, एक बिचार ही सार जी ॥ नृप० ॥ ७२ ॥
क्यो हँसी मंत्री जा पूछो, पास पहूंच परधान।
महाराणी सा किण विध हँसिया, पूछे है राजान जी ॥ नृप० ॥ ७३ ॥
राणी कहे सुणो मन्त्रीश्वर, बोली श्यालनी राते।
तस कथनानुसार करत थी, शूली मिल रही ताते जो ॥ नृप० ॥ ७४ ॥

अब बोल्यो है काग आन के, इण सु आगई हांसी ।
अरे वीरा फिर क्या करासो, नृप ने सचिव प्रकाशी जी ।। नृप० ।। ७५ ।।
नृप पूछे कांई कह्यौ स्यालनी, मैं कुछ समझा नाई ।
मूर्दो खाती देख तेरे को, डाकिन मैं ठहराई जी ।। नृप० ।। ७६ ।।
ऐसी बात नहीं अलवेश्वर, रत्न, चोर मैं काढया ।
पल्ला से खोली दिखलाया, आप कलक यह चाढया जी ।। नृप० ।। ७७ ।।
वे विश्वास और बतलाऊँ, वायस, वाणी और
सात कडाव भरा है धन से, इन शूलो की ठौर जी ।। नृप० ।। ७८ ।।
हुकम लगा नृप भू, खोदाई, प्रत्यक्ष लिया निधान ।
धन का पार रहा नही उनके, राणी पुण्य प्रमाण जी ।। नृप० ।। ७९ ।।
राजा माफी मागला सरे, राणी से धर राग ।
ठाट-पाट सु लाया महला, बधियो जग सौभाग जी ।। नृप० ।। ८० ।।
क्षीर, नीर - वत प्रीत बढी है, बढियो धर्म प्रचार ।
आय गई पुण्यवानी चढ़ती, पथी बात विचार जी ।। नृप० ।। ८१ ।।
चारों शिखामण कागज केरी, राजा रे गुण आई ।
भगवत शिक्षा सुणो भाव सु, कूमी रहे तस कांई जी ।। नृप० ।। ८२ ''
मिथ्या भ्रम मिटे नही जो लो, तो लो समकित नाई ।
होय यथारथ श्रर्दना सरे, आतम - भान सुझाई जी ।। नृप० ।। ८३ ।।
राजा, राणी प्रभु बचनो पे, पूर्ण आस्था लाया ।
कालान्ते सयम ले अनशन, करके स्वर्ग सिधाया जी ।। नृप० ।। ८४ ।।
कथा पुराणी सुणो सुणाई, मैंने रची यह ढाल ।
रूप, सुकन कथना सु भाई, ख्याल राग टकसाल जी ।। नृप० ।। ८५ ।।
सवत-रस-कर युग्म-सहस पर, द्वितीयाषाढ तम पाख ।
ग्यारस, सुर गुरुवार जवाली, कही सघ नी साख जी ।। नृप० ।। ८६ ।।
महा प्रतापो सूर्य धर्म-ध्वज, आचारज रघुनाथ ।
तास गच्छ अति दच्छ दयालु, बुधमल गुरु गुण गाथ जी ।। नृप ।। ८७ ।।
तस पद-पकज-चंचरीक यो, कथे मिश्री अणगार ।
देव गुरु की रखो आसता, वरते मंगलाचार जी ।। नृप० ।। ८८ ।।